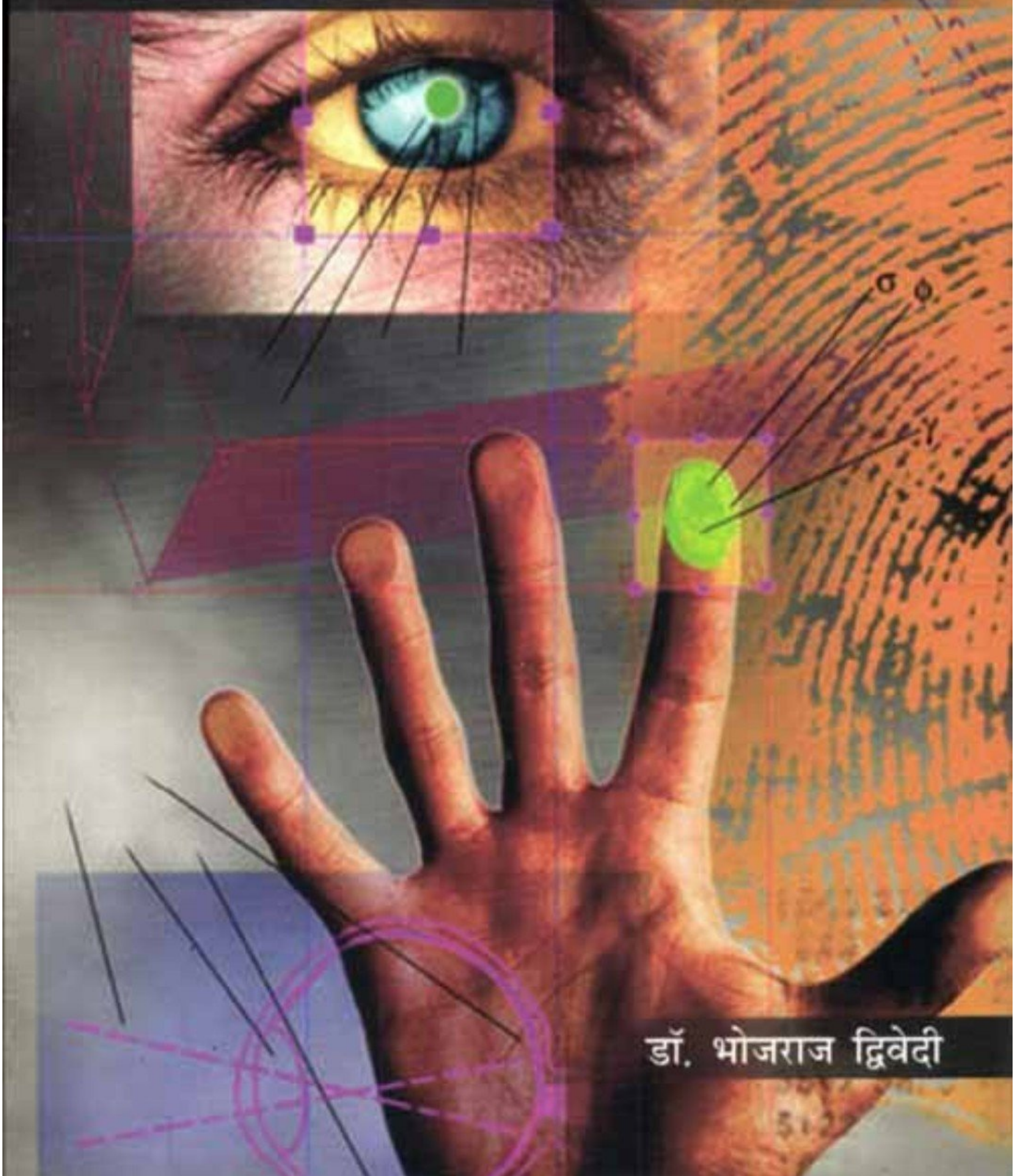
ज्योतिष और रोग विचार



डॉ. भोजराज द्विवेदी

ज्योतिष एवं रोग विचार

ज्योतिष एवं रोग विचार

ज्योतिष रोगों को कर्मज मानता है, कुछ रोग मंत्रौषधि से साध्य होते हैं, कुछ असाध्य।
प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे अनेक प्रकार के चित्र-विचित्र रोगों के योगायोग निष्पत्ति एवं उनके निराकरण के उपाय पर भी चर्चा की गई है, जिसका सटीक समाधान आप पहली बार जान पाएंगे।

लेखक :

अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त, लब्ध सुवर्णपदक

दैवज्ञ महर्षि पं० भोजराज द्विवेदी

संपादक “अज्ञातदर्शन” पाक्षिक ज्योतिष पत्रिका

एम० ए० संस्कृत दर्शन, रिसर्च स्कालर ज्योतिष

प्रथम बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर (राज०)

डायमंड बुक्स

ISBN 81-7182-217-7

डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.

प्रकाशक : X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II

नई दिल्ली-110020

फोन : 011-41611861-865

फैक्स : 011-41611866

ई-मेल : sales@diamondpublication.com

वेबसाइट : www.diamondpocketbooks.com

संस्करण : **2014**

लेज़र टाइपसैटिंग ग्राफ़िक्स बी, मेरठ-250001

JYOTISH A VAM ROG VICHAR by : Dr. Bhojraj Dwivedi

पुस्तक के बारे में

प्रत्येक प्राणी के जीवन में मृत्यु अनिवार्य है। मृत्यु किसी-न-किसी रोग, आकस्मिक दुर्घटना के बहाने आती है और प्राणों का उत्सर्ग साथ ले जाती है। यदि हमें रोग की पूर्व सूचना मिल जाए और सावधानी पूर्वक उसका त्रिविध उपचार कर दिया जाए तो रोग जन्य कष्टानुभूति से मानवीय सभ्यता को राहत मिल सकती है, साथ ही आयुष्य की दीर्घता भी बढ़ सकती है। आज का आधुनिकतम विज्ञान व्यक्ति के बीमार होने के बाद ही उसकी बीमारी का पता लगा पाता है; व्यक्ति की मृत्यु होने के बाद ही उसके मृत्यु के कारणों का पता लगाने की अव्यर्थ कोशिश करता है। स्वस्थ व्यक्ति में छिपी हुई प्रच्छन्न बीमारी कब प्रकट होगी? कौन-सी बीमारी होगी? क्यों होगी? किन परिस्थितियों में, किन कारणों से व्यक्ति की मृत्यु होगी? इसका पूर्वानुमान का परिमापन न तो आयुर्वेद के पास है, न ही ऐलोपेथी के पास है। संसार के किसी भी चिकित्साविज्ञान के पास इसका कोई जवाब नहीं है क्योंकि उन सभी का ज्ञान एवं चिंतन एकांकी है। मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण पर आधारित है।

भारतीय दर्शन की ज्ञान राशि एवं चिंतन प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आर्षवचन इन तीनों पर आधारित है अतः विस्तृत है, ज्यादा सटीक है। ज्योतिष किसी भी प्रकार के रोग की उत्पत्ति के तीन कारण मानता है 1. संचित 2. प्रारब्ध 3. क्रियमाण। संचित कर्म के ही एक भाग को प्रारब्ध या दैव कहा गया है। मिथ्या

आहार-विहार एवं कीटाणुजन्य रोग क्रियमाण कर्म है। आयुर्वेद आज्ञाकारी लघुभ्राता की तरह ज्योतिष शास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों का समर्थन करता है। ज्योतिष कहता है—

'जन्मान्तरकृतं पापं व्याधिरुपेण बाधते।'आयुर्वेद भी इन्हीं शब्दों में कहता है कि पूर्व जन्म में किया गया पाप ही इस जन्म में कुष्ठ, क्षय, प्रमेह, संग्रहणी, मूत्रकच्छ, अश्यरी, कास, अतिसार एवं भगंदर जैसे रोगों के रूप में प्रकट होता है। फलतः ऐसे रोग मात्र औषधि-चिकित्सा से पूर्णतः नष्ट नहीं होते।

इस पुस्तक में ऐसे अनेक रोगों के कारण और निवारण पर चर्चा की गई है। मानवी प्राणी को समझ में न आनी वाली सबसे विकट व कठिन समस्या है उसके रोग के कारण एवं मृत्यु का समय निश्चित करना। यह बड़े गौरव और आत्मतुष्टि का विषय है कि ज्योतिष शास्त्र में इस पर व्यापक चिंतन किया गया है। इस संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् पं० भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित प्रस्तुत शोध ग्रंथ ज्योतिष जगत की अमूल्य धरोहर एवं मानव सभ्यता के लिए अमृत तुल्य उपादेय है।

—प्रकाशक

अनुक्रम

ज्योतिष द्वारा रोग-निदान

आज विज्ञान को मानने वाले अधिसंख्यक बुद्धिजीवी लोग विज्ञान के ही एक प्रामाणिक अंग ज्योतिष शास्त्र के प्रति उदासीन हैं तथा वे ज्योतिष विज्ञान की सार्थकता को समझने व इसकी उपयोगिता को व्यवहार में लाने के लिए रुचि ही नहीं लेते।

ट्रिंटो कालेज में पढ़े सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर न्यूटन एक कुशल ज्योतिषी थे। उन्होंने पृथ्वी के आकर्षण सिद्धांत को समझने के लिए भारतीय ज्योतिष शास्त्र का सहारा लिया था। वे अक्सर ज्योतिष की पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते तल्लीन हो जाते थे। उनके एक वैज्ञानिक मित्र ने एक दिन झल्लाकर पूछा—Why do you believe in astrology? सर न्यूटन ने विनम्रता से जवाब दिया —‘Because I have gone through it and you have not.’ प्रायः ज्योतिष विज्ञान की निंदा प्रमुखतः वे ही लोग किया करते हैं, जिनको इस शास्त्र के बारे में अ, ब, स का भी ज्ञान नहीं होता।

औषधियों पर पड़ने वाले ग्रहों के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए वैदिक ऋषि कहते हैं—

‘सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथ्वी मही।’

‘अधो नक्षत्राणामेषामुपत्ये सोम-आहितः।’ *अथर्व. 14/1/2*

फलित ज्योतिष के अस्तित्व को सर्वथा न मानने वाले, ज्योतिष के कट्टर विरोधी स्वयं महर्षि दयानंद **'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'** में इसी मंत्र द्वारा चंद्र-ग्रह की रश्मियों के प्रभाव को स्वीकार करते हुए लिखते हैं—'चंद्रमा के प्रकाश और वायु से सोमलता आदि औषधियाँ पुष्ट होती हैं और उनसे पृथ्वी पुष्ट होती है इसीलिए ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप चंद्रमा स्थापित किया है।'

भारतीय ज्योतिषियों ने खोज की और पाया कि संपूर्ण वर्ष भर में चन्द्रमा शरद पूर्णिमा को पूर्ण कलाओं के साथ उदित होता है। उस दिन परिपक्व पूर्णेन्दु की किरण पुंजों में एक विशेष प्रकार की शक्ति छिपी होती है। फलतः उस रात्रि में चंद्र किरण के माध्यम से दमा व नाना प्रकार की दुःसाध्य बीमारियों के निराकरण हेतु विश्व के कोने-कोने में औषधियाँ बनाई जाती हैं।

कुमुद पुष्प का चंद्र किरण से खिलना बड़ा मायने रखता है। रात्रि में खिलना एक गौण बात है परंतु चंद्रमा की किरणों में छिपे हुए इलेक्ट्रोन कुमुद पुष्प की पंखड़ियों को किल्लोरत कर उसे खिलने के लिए बाध्य कर देते हैं। यह चंद्रमा की रश्मि-पुंजों का कुमुद पुष्प पर प्रत्यक्ष प्रमाण है।

वैज्ञानिकों ने समुंद्र में ज्वारभाटा का कारण 'चंद्रमा' को ही माना है तथा यह तथ्य हाथ लगा कि अमावस्या और पूर्णिमा को 'फाइलेरिया' (रोग विशेष) की वृद्धि में चंद्रमा का मुख्य हाथ है। अंक गणना से पता चलता है कि पूर्णिमा की रात्रि को इतने ज्यादा बलात्कार व पागलपन के दौरे पाए जाते हैं जितने पूरे वर्ष भर संभव नहीं हैं।

ज्योतिष और चिकित्सा विज्ञान की तुलना की जाए तो आप आश्चर्य करेंगे। सारा चिकित्सा विज्ञान ज्योतिष पर अवलंबित है। औरतों के मासिक धर्म पूर्णतः चंद्र स्थितियों पर निर्भर होते हैं। स्वीडन के वैज्ञानिक डॉ० स्वांतो

आर्थनियम ने पूरे आंकड़े देते हुए स्पष्ट किया कि औरतों का मासिक धर्म उस समय होता है जब चंद्रमा पर मंगल का अतिक्रमण होता है। अर्थात् जब चंद्रमा मंगल से चौथे स्थान में आता है तब-तब औरतें मासिक धर्म में आ जाती हैं। जब-जब सूर्य उन्तप्त होता है हमारी रक्त धाराएं बदल जाती हैं। सूर्य की गति व रुख के अनुसार सूर्यमुखी पुष्प में परिवर्तन आता है। जिधर सूर्य घूमता है उधर वह सीधा घूम जाता है।

वैज्ञानिकों ने खोज की और पाया कि चाहे जितने ही बंद कमरे में क्यों न हों, दिन के समय जन्मे सभी बच्चों का आई कोर्निया (Eye cornia) भूरे रंग का होता है, यदि इन बच्चों का जन्म रात्रिकाल में हो तो आई कोर्निया (Eye cornia) कृष्ण व नील वर्ण का होता है। शुक्ल पक्ष में जन्मे बच्चे का नेत्रपटल (Eye space) एकदम श्वेत होता है। कृष्ण पक्ष में जन्मे बच्चे का नेत्रपटल (Eye space) कुछ पीलापन लिए होता है। कर्क के चंद्रमा में जन्मे सभी बच्चों की दंतावली एक श्वेत दूधिया व मोतियों के समान चमकीली होती है। इसके विपरीत वृश्चिक के चंद्रमा में जन्मे बच्चों के दांत सदैव रोगीले, पीले व पायरिया से ग्रसित होते हैं।

वैज्ञानिक प्रगति में अग्रगण्य माने जाने वाले देश रूस के वैज्ञानिक डॉ० निकोलस रोगियों के रोग निदान के समय पर जड़ी-बूटी छाँटने के लिए ज्योतिष चार्ट हमेशा पास रखते हैं। ज्योतिष चिकित्सा की दृष्टि से डॉ० एच० एल० कोनेल की Encyclopedia of Medical Astrology तथा अमेरिका सरकार से प्रकाशित Astro-Medical Dictionary नामक ग्रंथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। विश्व के महान् वैज्ञानिक व मनोचिकित्सक डॉ० जुंग का कहना है कि 'ज्योतिष का ज्ञान, रोग निदान में बहुत बड़ा सहायक है। जो इस दिव्य ज्ञान से वंचित हैं वे वस्तुतः ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक संकेतों के बृहद् ज्ञानराशि

से वंचित हैं।' डॉ० जुंग अपने रोगियों के सही इलाज पर पहुँचने के लिए रोगियों की जन्म कुंडली पर विचार किया करते हैं।

प्रचलित चिकित्सा पद्धति में ऐलोपैथिक (पाश्चात्य-चिकित्सा) होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, यूनानी व प्राकृतिक चिकित्सा मुख्य रूप से प्रचलित हैं। ऐलोपैथी कीटाणुओं (Germs) से रोगों की उत्पत्ति मानता है, इसके निदान हेतु वह भिन्न-भिन्न प्रकार के इंजेक्शन, टैबलेट व कैपसूल का प्रयोग करता है। आयुर्वेद वात्त, पित्त व कफ की विषमतावस्था से रोगों की उत्पत्ति मानता है तथा रोगों के निदान हेतु वह भिन्न-भिन्न वनस्पतियों की जड़ी-बूटियों एवं धातुओं का प्रयोग करता है। यूनानी चिकित्सा में क्वाथ व जवाहरात की भस्मों का प्रयोग किया जाता है। होम्योपैथी दवा के सूक्ष्मता मान को मान्यता देती है। इसके विपरीत प्राकृतिक चिकित्सक (Naturopethy) पंचभूत शरीर के पंचतत्व को लेकर सूर्य, चंद्र-रश्मियों, मिट्टी व उपवास से रोगों का निदान करता है। परंतु ज्योतिष में रोगों की उत्पत्ति और उसके निदान का तरीका इन सबसे अलग व विलक्षण है।

ज्योतिष रोग को जड़ से पकड़ता है। रोगों व व्याधियों के संबंध में ज्योतिष की पहुंच बहुत गहरी और गंभीर है, जहाँ अभी तक आधुनिक चिकित्सा शास्त्र को पहुँचने में हजारों वर्ष लगेंगे। ज्योतिष रोग को कर्मज मानता है। ज्योतिष शास्त्र की यह मान्यता है—**'पूर्वजन्मकतं पांप व्याधिरूपेण बाधिता'** पूर्वजन्म के पास इस जन्म में बीमारी, घाव व रोग के रूप में प्रकट होते हैं। ज्योतिष का कहना है कि सभी प्रकार की व्याधियों, रोग, दुःख एवं कष्ट कर्मज होते हैं। ज्योतिष श्राप, वरदान, आशीर्वाद एवं प्रार्थनाओं की अदृश्य शक्तियों को मान्यता देता है तथा जप, तप यम-नियम, दान-पुण्य एवं प्रायश्चित के द्वारा उन-उन रोगों का शमन करता है।

ज्योतिष की यह मान्यता है कि चिकित्साएं एक सीमा तक ही रोग का इलाज कर सकती हैं। उसकी मान्यता है कि औषधियां यदि रोगी को ठीक करने में निर्णायक होतीं तो किसी व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती। मृत्यु अनिवार्य है और उसका इलाज किसी डाक्टर, वैद्य या हकीम के पास नहीं है। दैनिक जीवन में हम देखते हैं डा० कहता है—'आपरेशन सक्सेसफुल' और तत्काल रोगी की मृत्यु हो जाती है। एक तरफ हम देखते हैं कि एक व्यक्ति सदाचारी जीवन जी रहा है, स्वच्छ रहता है, दूसरों के हाथ का खाना नहीं खाता, उबला हुआ पानी पीता है फिर भी उसे श्वेत कुष्ठ कैंसर एवं जालंधर जैसे भयंकर रोग हो जाते हैं जिनका इलाज भी संभव नहीं। ज्योतिष कहता है **'कालो जगत्भक्षकः'** यह काल (समय) विशेष ही है जो व्यक्ति को बीमार करता है व उसे मार डालता है, यह सारा संसार उस काल (समय विशेष) के अधीन है। केवल कुशल ज्योतिषी ही उस काल पुरुष की गणना कर उसे समझने की सामर्थ्य रखता है।

कथा प्रसिद्ध है कि एक साधु आयुर्वेद का जानकार था। उसके शरीर में एक फोड़ा हो गया। साधु ने उस पर मरहम-पट्टी की परंतु घाव ठीक होने के बजाए और बढ़ गया। साधु सावधान हो गया। उसने बड़ी सावधानी से विधिपूर्वक घाव की चिकित्सा की, परंतु सारे उपाय व्यर्थ हो गए। घाव ठीक होने के विपरीत बढ़ता ही चला गया। साधु परेशान हो गया। उसने घाव की चिकित्सा करनी छोड़ दी और सोचा—यह पूर्व जन्म का कोई पाप है। जो व्याधि (घाव) के रूप में प्रकट हुआ है। अतः यह दवा से नहीं, ईश्वर की इच्छा व कृपा से ठीक होगा। शास्त्र कहते हैं—

औषधी मणिमन्त्राणा, ग्रह-नक्षत्र तारिका।

भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत्
।।'

औषध चिकित्सा, मणि व रत्न चिकित्सा तथा मंत्र चिकित्सा भी समय के अनुकूल होने पर ही काम करते हैं। कुछ समय बीता। वह साधु दोपहर को अपने आश्रम में बिल्व वृक्ष की छाया में सो रहा था। उसे आभास हुआ मानो — बिल्व वृक्ष उसे कह रहा था कि तुम मेरे फल को घोट कर पी जाओ तथा उसकी छाल को घाव पर लगा दो, तो तुम्हारा यह घाव तत्काल ठीक हो जाएगा। साधु स्वप्नवत् नींद से जागा। उसने विचार किया यह बिल्व वृक्ष सदा से यहीं पर है। मैं भी अनेक बार इसके नीचे विश्राम करता हूँ पर आज यह क्योंकर बोला। साधु विद्वान् था। वह समझ गया कि अब मेरा समय अनुकूल आ गया है, अब तो मैं बिना इलाज के भी ठीक हो सकता हूँ। यही हुआ, एक-दो दिन में ही उस साधु का वह घाव चमत्कारिक ढंग से ठीक हो गया। अतः यह सही है कि न दवाइयां व्यक्ति को ठीक करती हैं, न चिकित्सा, न औषधियाँ व्यक्ति को मारती हैं, न डॉक्टर। रोग तो एक बहाना है, घटनाएं तो एक उपालम्भ हैं, छलावा हैं वस्तुतः काल विशेष ही आदमी को मारता है, काल विशेष ही उसे ठीक करता है।

किसी ने सच ही कहा है कि **भौतिक विज्ञान की सीमाएं जहां समाप्त हो जाती हैं ठीक वहीं से आध्यात्म विज्ञान की सीमाएं प्रारंभ हो जाती हैं।** डाक्टर स्वयं जब मरीज से निराश हो जाते हैं तब मरीज के रिश्तेदारों से कहते हैं कि भगवान् से प्रार्थना करो वही इसे बचा सकता है। उस समय आधुनिक विज्ञान ज्योतिष के सामने बौना साबित हो जाता है। उस समय लोग ज्योतिषियों के पास जाते हैं, मंदिरों में जाते हैं, जप, तप, दान व धार्मिक अनुष्ठान करते हैं तथा आप व हम सभी ने देखा व अनुभव किया होगा कि कई लोग बिना दवाई के आश्चर्यजनक रूप से ठीक हो जाते हैं।

एक गांव में एक बहुत अनुभवी एवं पारंगत वैद्य रहता था। वैद्य जी ज्योतिष शास्त्र के भी ज्ञाता थे। जो भी रोगी उसके पास जाता ठीक होकर ही

लौटता। वैद्य की कीर्ति पूरे गांव एवं शहर से पूरे राज्य में फैल गई। वैद्य जी वृद्ध हो चले थे। उन्होंने आयुर्वेद-ग्रंथों का सहारा लेते हुए अपने जीवन भर के निचोड़ से एक **"रामबाण गोली"** का निर्माण किया। उस गोली की यह विशेषता थी कि एक बार के प्रयोग से वह गोली कैसे भी मरणासन्न व्यक्ति में भी प्राण फूंक देती थी। वैद्य जी का यश इतना फैल गया कि नगरवासियों ने उनका बड़ा भारी नागरिक अभिनंदन किया राजा के गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें "प्राणाचार्य" की उपाधि से विभूषित किया। वैद्य जी का जीवन बड़े आनंद व ऐश्वर्य के साथ बीत रहा था।

समय बीतता चला गया एवं काल चक्र घूमा। एक दिन शहर का राजा बीमार पड़ा। अनेक वैद्य, हकीम, लुकमान, डॉक्टरों के निरंतर उपचार से भी राजा की बीमारी ठीक न होकर बढ़ती ही जा रही थी। धीरे-धीरे राजा मरणासन्न अवस्था में पहुंच गया। ऐसे में मंत्रीगणों व शुभ चिंतकों ने वैद्य प्राणाचार्य को याद किया। प्राणाचार्य आए, राजा की धीमी गति से चलती हुई नब्ज टटोली। कुछ सोच-विचार कर प्राणाचार्य ने दो रामबाण गोली राजा को दे दीं।

नियम के अनुसार रामबाण औषधि में प्रयुक्त केसर-कस्तूरी व तेज-गर्म व दिव्य औषधियों के प्रभाव से राजा की नब्ज की गति तेज होकर, राजा को चेतना आनी चाहिए थी पर यहां उल्टा हुआ। राजा की नब्ज और अधिक मंद हो गई। प्राणाचार्य को हैरानी हुई, उसने कुछ सोच-विचार कर चार रामबाण गोली राजा को दे दीं और नब्ज पकड़ कर बैठ गया। पर यह क्या? राजा की नब्ज तो टूट गई। ठीक मध्य रात्रि को राजा के प्राण-पखेरू उड़ गए। वैद्य प्राणाचार्य के जीवन में यह पहली घटना थी कि उनके इलाज के दौरान किसी रोगी की मृत्यु हुई हो। उनका विमल यश कलंकित हो गया। नगर की जनता व मंत्रीगण वैद्य जी के प्रति निराश होकर आक्रोशित हो उठे। किसी शुभचिंतक ने उन्हें किले

के गुप्त दरवाजे से बाहर निकाला। मध्य रात्रि की घोर अंधेरी रात में वैद्य जी ने अपने आपको निर्जन जंगल में पाया। वैद्य जी को लगा जैसे आयुर्वेद के ग्रंथों ने, उनके अनुभव ने, उनके साथ छलावा किया। निरंतर विचारों में उलझे हुए वैद्य जी कंटकाकीर्ण मार्ग पर अबाध गति से बढ़ते ही चले जा रहे थे। पसीने से सने हुए वैद्य जी को भयंकर प्यास लगी। बहुत तलाश करने पर उन्हें एक निर्जल कुआं दिखाई दिया। वैद्य जी पानी रहित कुएं को देखकर और अधिक व्यथित हो उठे। उन्होंने समझ लिया कि अब भाग्य उनके साथ नहीं है। दशाएं प्रतिकूल हैं। उन्होंने फौरन निर्णय लिया। “जिस आयुर्वेद शास्त्र की मैंने जीवन भर सेवा की आज उसी ने मुझे धोखा दिया। अतः आयुर्वेद शास्त्र झूठा है। अब भाग्य रहित इस कलंकित और कष्टपूर्ण जीवन से क्या लाभ? वैद्य जी मन ही मन आत्महत्या का दृढ़ निश्चय कर, उस अंधे कुएं में छलांग लगाने को उछले। इतने में पीछे से आवाज आई—“रुको! प्राणाचार्य रुको।” प्राणाचार्य ने पीछे मुड़ कर देखा, उस अंधेरी रात के वीराने में एक अंजान तेजस्वी युवक को देखकर वैद्य जी हतप्रभ रह गए। युवक ने वैद्य जी के मनोभावों को पढ़ते हुए कहा—“जैसा आप सोच रहे हैं वो गलत है, न तो आयुर्वेद झूठा है, न ही आपका अनुभव झूठा है। आप द्वारा किया जा रहा आत्महत्या का प्रयास कायरता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है क्योंकि आपने मुझे नहीं पहचाना। यदि पहचान लेते तो ऐसा कभी नहीं सोचते।”

वैद्य जी को तो जैसे लकवा मार गया। वे अपनी स्मृति-शक्ति पर जोर देते हुए उस युवक को पहचानने की कोशिश करने लगे। युवक मुस्कुराया। उसने अपनी वंद मुट्ठी खोली और वैद्य जी को दिखाते हुए कहा—“आप इसे तो अवश्य पहचानते होंगे”। वैद्य जी ने देखा ये तो वही छः रामबाण गोलियां थीं जो राजा को मरते समय वैद्य जी ने अपने हाथ से दी थीं। वैद्य जी चकराए!

बोले—“हे देव पुरुष! आप कौन हैं?” इस बार युवक जोर से हंसकर बोला—“हे वैद्यराज! मुझे पहचानों मैं काल हूं। सारी सृष्टि मुझ से संचालित है। मैं ही समय आने पर प्राणियों को मोक्ष प्रदान करता हूं। सब संसार मुझे जानता है फिर भी मैं सबके लिए अंजान हूं। हे वैद्यराज आयुर्वेद शास्त्र सच्चा है, तुम्हारा अनुभव भी सच्चा है पर ये रामबाण गोली तो मैंने राजा के गले के नीचे नहीं उतरने दीं। हे वैद्यराज। उपचार रोग का होता है, मृत्यु का नहीं। राजा की मृत्यु आ गई थी।”

अतः कुशल चिकित्सक को रोग के अतिरिक्त काल की परीक्षा भी करनी चाहिए। काल विज्ञान ही ग्रह विज्ञान है। ग्रह विज्ञान ही ज्योतिर्विज्ञान है। अतः ज्योतिष को काल से, काल को ज्योतिष से अलग करना कठिन है। एक अनुभवी दैवज्ञ ही काल की परीक्षा कर सकता है। अतः एक कुशल डॉक्टर, चिकित्सक एवं वैद्य को दैवज्ञ बनने का प्रयत्न करना चाहिए। भौतिक शल्य-चिकित्सा व उपचार के साथ आध्यात्मिक उपचार, ग्रह-शांति यज्ञ, जप-जाप एवं प्रार्थनाओं का प्रयोग भी करना चाहिए। तभी रोगी के त्रिविध ताप (आधिदैविका, आधिभौतिका, आध्यात्मिक दोष) की निवृति होगी। रोगी को आत्मिक शांति का अनुभव होगा एवं रोग जड़ से समाप्त होगा।

आयुर्वेद का एक अतिप्राचीन मूल्यवान ग्रंथ है—‘माधवनिदान’। इस ग्रंथ में दिया गया कि अमुक जड़ी-बूटी को अमुक दिन, अमुक नक्षत्र में तोड़ें तो उसके गुण-धर्म बदल जाते हैं। **विषरोगनिदान** में बताया गया कि भरंणी, आन्दा, आश्लेषा, मघा, मूल व कृतिका नक्षत्रों में यदि सर्पदशं हो तो वह सर्प ने नहीं काल ने काटा है। **कुशल वैद्य को ऐसे रोगी की चिकित्सा नहीं करनी चाहिए क्योंकि रोग का तो इलाज हो सकता है पर मृत्यु का इलाज नहीं होता।** ‘मानसागरी’ में भी ऐसे अनेकों ज्योतिष के सूत्र मिलते हैं जिसमें कहा गया है कि इन तिथियों व नक्षत्रों में यदि मनुष्य को अमुक रोग हो जाए तो

साक्षात शंकर एवं ब्रह्मा, विष्णु भी उस रोगी की रक्षा नहीं कर सकते। इन सब दृष्टांतों से यह प्रमाणित हो जाता है कि एक कुशल वैद्य, चिकित्सक व यशस्वी डाक्टर को ज्योतिष का भी ज्ञान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, तभी उनका ज्ञान वास्तव में सार्थकता व सिद्धता को प्राप्त करेगा।

—पं० भोजराज द्विवेदी

ज्योतिष में कैंसर योग

(1) कर्क, वृश्चिक, मीन, मकर एवं तुला राशियों में से कोई दो राशियां यदि षष्ठेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश के प्रभाव में हों, पापग्रसित हों तो जातक को कैंसर रोग होता है।

(2) सूर्य से छठे, आठवें एवं द्वादश स्थान के स्वामी का संबंध राहु, केतु से होने पर व्यक्ति को कैंसर होता है।

(3) कर्क लग्न के अधिकांश लोगों को कैंसर होता है। कर्क लग्न में बृहस्पति मुख्य रूप से कैंसर रोग का कारक है। गुरु कैंसर में वृद्धि कराता है। शनि, मंगल और गुरु इन तीनों का संबंध छठे, आठवें, बारहवें तथा द्वितीय स्थान के स्वामियों से होने पर जातक की मृत्यु कैंसर रोग से होती है।

(4) जब मंगल या शनि के साथ नेपच्चून, प्लूटो, यूरेनश कोई भी ग्रह हो तथा मंगल शनि का परस्पर दृष्टि संबंध हो तो व्यक्ति को कैंसर होता है।

(5) राहु एवं शनि की अप्रिय (मलिन) स्थिति भी कैंसर रोग की सृष्टि करती है।

(6) शनि या मंगल छठे या आठवें स्थान में राहु, केतु के साथ हो तो व्यक्ति को कैंसर होने की संभावना रहती है।

(7) द्वितीयेश आठवें हो, तथा अष्टमेश लग्न में चंद्रमा के साथ हो, षष्ठेश 6,8,12 वें स्थानों में हो तो ऐसे जातक की मृत्यु **"ब्लडकैंसर"** से होती है।

(8) षष्ठेश पापग्रहों के साथ लग्न, आठवें या दसवें स्थान में बैठा हो तथा पापदृष्ट हो तो जातक को कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी होती है।

(9) सूर्य छठे, आठवें, द्वादश स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो जातक को पेट या आंतों में अलसर होता है। यदि राहु का प्रभाव लग्न या सूर्य के साथ हो तो जातक को कैंसर होता है।

(10) सूर्य पापग्रहों के साथ कहीं भी हो, षष्ठेश छठे स्थान में पापग्रस्त हो, लग्नेश या लग्न पापग्रह के प्रभाव में हो तो व्यक्ति को कैंसर होता है।

(11) चंद्रमा क्षीण बली होकर पापग्रहों की राशि में, छठे, आठवें, बारहवें हो, तथा लग्न अथवा चंद्र शनि+मंगल से दृष्ट हो तो जातक को कैंसर की संभावना रहती है।

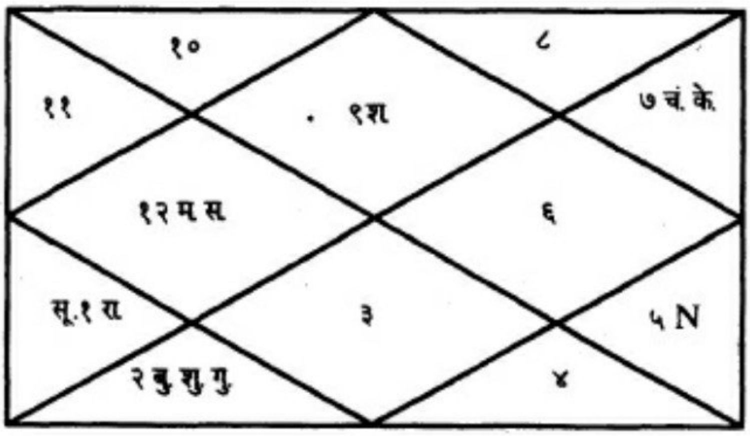
(12) षष्ठेश नीच का होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तथा चंद्रमा और लग्न पापग्रहों के मध्य या पापग्रस्त हो तो जातक को असाध्य बीमारी होती है।

(13) द्वितीय भाव में पापग्रह हो, द्वितीयेश पापग्रह से युत होकर छठे, आठवें, या बारहवें भाव में हो, लग्न एवं लग्नेश निर्बल हो तो जातक को कैंसर होता है।

टिप्पणी—कैंसर जैसी असाध्य बीमारियों के लिए सर्वप्रथम लघुरुद्र या नमक-चमक रुद्राभिषेक करके **'अक्षीभ्यां'** के अनुवाक से एवं **'आपोहिष्ठा'** इन तीनों मंत्रों से अभिषिक्त जल द्वारा शिव निर्माल्य से रोगी का मार्जन करें। कुछ जल रोगी को पिलाएं। महामृत्युंजय का अनुष्ठान करें।

इससे यक्ष्मा, कैंसर जैसी असाध्य बीमारी भगवत्कृपा से छूट जाते हैं। इसके साथ औषध चिकित्सा भी चालू रखें। हमने अनेक प्रयोग किए हैं। औषध के साथ-साथ मंत्र-चिकित्सा करने से औषधियां चमत्कारी ढंग से काम करने लगती हैं। व्यक्ति के संचित पाप नष्ट होते हैं एवं रोग से निवृत्ति होती है।

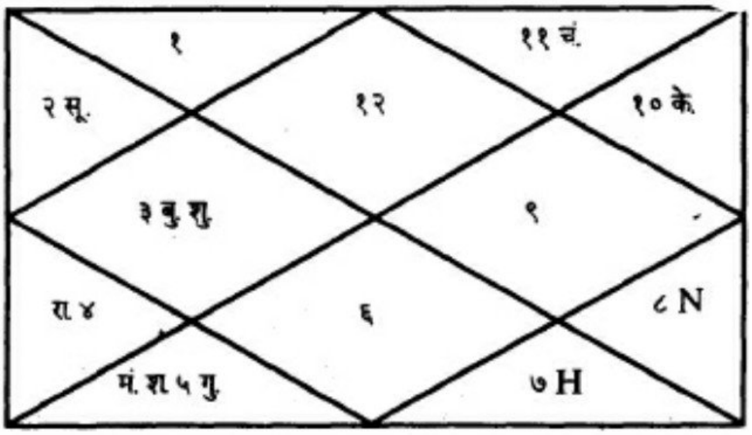
कैंसर योग पर उदाहरण कुंडिलियां



रक्त कैंसर— जन्म : 12.5.1930; समय : 23.15; स्थानः बंबई

लग्न में पापग्रह है, लग्नेश बृहस्पति षष्ठेश के साथ छठे स्थान में है। सप्तमेश बुध छठे है। सूर्य भी पापग्रसित है। चंद्रमा भी पापग्रसित है। फलतः जातक को ब्लडकैंसर हुआ। कैंसर का पता चलते ही जातक ने बहुत इलाज कराया परंतु छः महीने में ही जातक की बंबई अस्पताल में मृत्यु हो गई।

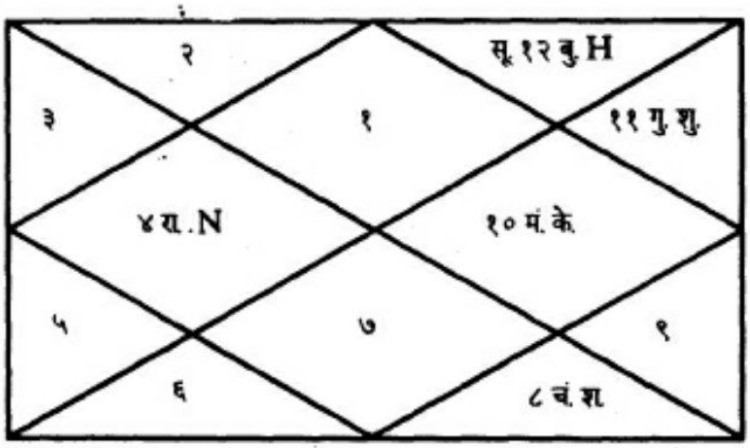
□ रक्त कैंसर (बालारिष्ट)



रक्त कैंसर (बालारिष्ट) – जन्म : 5.7.1980; समय : 23.00; स्थान : बंबई

लग्नेश पापग्रह के साथ एवं पापमध्य होकर छठे स्थान में है। चंद्रमा क्षीण बली होकर पापग्रह की राशि में बैठकर द्वादश भाव में है। चंद्रमा की राशि पापग्रसित है तथा चंद्रमा के साथ षडाष्टक योग में स्थित है। चंद्रमा द्वादस में एवं मारकेश पापीग्रहों (शनि+मंगल) से दृष्ट है। हर्षल आठवें है। इस बालक को दो वर्ष की आयु में 6 जून 1960 को पहली बार पता चला कि इसे रक्त कैंसर है। फौरन इलाज शुरू किया परंतु इलाज के दौरान ही टाटा अस्पताल बंबई में 8 मार्च 85 को बालक की मृत्यु हो गई। इस प्रकार यह बालक मात्र पांच वर्ष से कम की आयु को ही भोग पाया। रक्त कैंसर तो एक विशेष रोग का नाम है परंतु मृत्यु का जिम्मेदार कुंडली में उपस्थित **"बालारिष्ट योग"** है। इसके लिए आप मेरी अन्य पुस्तक **"ज्योतिष और आयुष्य योग"** अवश्य देखें जो कि इस पुस्तक का पूरक भाग है।

□ गुप्तांग में कैंसर



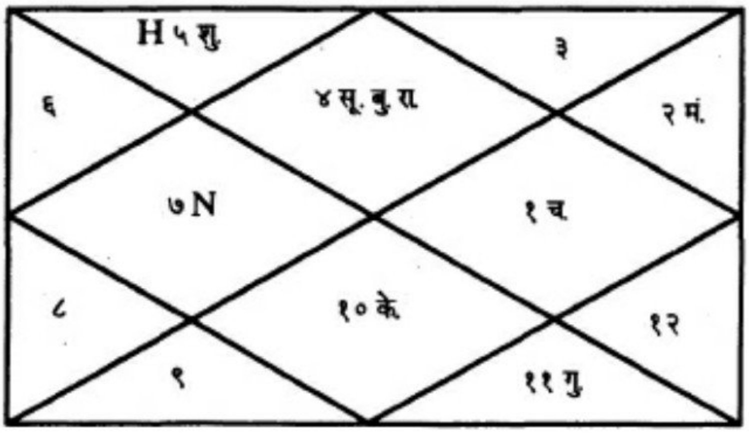
गुप्तांग में कैंसर— जन्म : 3.4.1926; समय : 7.30 प्रातः स्थान— पूना

यह एक महिला की कुंडली है। षष्ठेश बुध सूर्य के साथ नीच का होकर द्वादश स्थान में है। चंद्रमा पापग्रह के साथ नीच का होकर आठवें है। लग्नेश मंगल पापग्रस्त है। सप्तमेश शुक्र नीचाभिलाषी है। उपरोक्त सभी योगायोग अकाल मृत्यु के लिए पर्याप्त हैं। इस महिला को मध्यम आयु में गुप्तांग में तकलीफ हुई। शीघ्र इलाज कराया। डॉक्टर ने गुप्तांग ही निकाल कर नष्ट कर दिया। कैंसर की एक गांठ दायें स्तन पर निकली। दायां स्तन ही काट दिया। महिला बच गई, आज भी जीवित है। स्मरण रहे कि दाएं स्तन पर चंद्रमा की राशि पापग्रस्त थी।

यह महिला बची क्यों? ज्योतिष की दृष्टि में यह जानना बहुत जरूरी है। रोग के साथ-साथ आयुष्य योग भी देखें, तभी रोगी की आयु का पता चलेगा। यहां लग्नेश मंगल दिग्बली व उच्च का होकर केंद्रस्थ है तथा लग्नेश लग्न को देख रहा है। फिर इस महिला को रत्न जड़ित अभिमंत्रित मंगल यंत्र भी दिया

गया। महामृत्युंजय का शीघ्र अनुष्ठान कराया। ईश्वर ने लाज रखी और जातक मृत्यु मुंह में जाकर वापस लौट आया। यह अनुष्ठान के चमत्कार का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसके लिए आप हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आयुष्य"** योग पढ़ें।

□ स्तन कैंसर



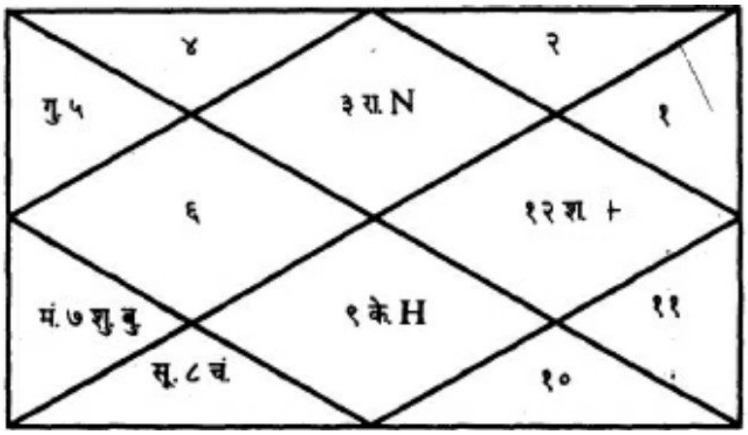
स्तन कैंसर— जन्म : 24.7.1962; समय : 6.00 प्रातः; स्थान : जयपुर

यह एक पच्चीस वर्षीय युवती की कुंडली है। एक बार सीने में दर्द उठा, एक छोटी फुंसी स्तन पर दिखाई दी, जांच करने पर पता चला कि यह कैंसर है। जयपुर में इसका इलाज हुआ। युवती जीवित है, विवाहित है एवं गृहस्थ सुख भोग रही है। अब कुंडली क्या कहती है यह देखें।

सबसे पहली बात कर्क लग्न में जन्म है। लग्न में सूर्य, राहु इत्यादि पापग्रह है। लग्न पापग्रहों से दृष्ट है। षष्ठेश बृहस्पति आठवें पापग्रह की राशि में है। परंतु लग्नेश चंद्रमा उच्चाभिलाषी होकर केंद्रस्थ होने से एवं अन्य शुभ दृष्टि

संबंधों से युवती बच गई। औषध के साथ-साथ मंत्र चिकित्सा भी की गई। महामृत्युंजय का प्रयोग किया गया, जो कि सफल रहा।

☐ कैंसर से मृत्यु



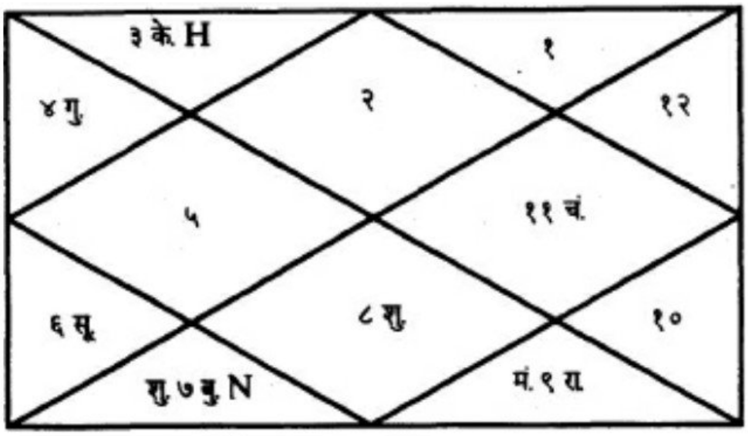
कैंसर से मृत्यु— जन्म : 24.11.1904; समय : 20.00; स्थान : बंबई

मिथुन लग्न में जन्मा प्रस्तुत जातक के फेफड़ों में कैंसर था। जातक लगातार धूम्रपान करने वाला था तथा सन् 1954 में कैंसर के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ। द्वितीयेश चंद्रमा बलहीन नीच का होकर छठे पड़ा है। वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य पर है। षष्ठेश मंगल सूर्य+चंद्र से बारहवें स्थान पर है। षष्ठेश मंगल ने द्वादशेश शुक्र से युति की है। लग्नेश ने षष्ठेश से युति की, लग्न पापग्रस्त है। अष्टमेश शनि नीचाभिलाषी है। डॉक्टरों ने इसे धूम्रपान न करने की सख्त हिदायत दी पर जातक माना नहीं, और अपनी बुरी आदत के कारण मारा गया।

लग्नस्थ राहु के कारण जातक का स्वभाव जिद्दी था। एक प्रकार से यह **'आंशिक कालसर्पयोग'** वाली कुंडली भी है। राहु+केतु की पकड़ से शनि

बाहर निकला, शनि वक्री है। इस विषय में पूरी जानकारी हेतु हमारे द्वारा लिखित पुस्तक **'कालसर्पयोग एवं घट विवाह पर शोधकार्य'** पढ़ें। आप पाएंगे कि 288 प्रकार के कालसर्पयोग होते हैं तथा सबके प्रभाव अलग-अलग रूप से जातकों को प्रभावित करते हैं।

☐ संभोग से कैंसर



संभोग से कैंसर— जन्म : 9.10.1951; समय : 21.005; स्थान : जोधपुर

यह एक अत्यंत सुंदर युवती की कुंडली है। यह युवती अत्यधिक कामुक थी तथा विवाहित होते हुए परपुरुषों से इसका संसर्ग था। अत्यधिक संभोग के कारण इसकी योनि में कैंसर हो गया। इलाज के लिए बंबई गई। वहां इसका गुप्तांग शरीर से निकाल दिया गया। कैंसर थेरेपी हुई पर इलाज के दौरान ही यह युवती मृत्यु को प्राप्त हुई। आइए इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करें।

मंगल और राहु आठवें स्त्री को स्वेच्छाचारिणी एवं परपुरुषगामी बनाता है। षष्ठेश शुक्र सातवें, सप्तमेश आठवें गुप्तांग में रोग देता है। चंद्रमा पाप राशि में पापग्रह से दृष्ट जातक की मनःस्थिति को बतलाता है। द्वितीयेश पापग्रह से

युत होकर षष्ठम स्थान में है। द्वितीय भाव पापग्रस्त है। उच्च के गुरु ने इस रोग को बढ़ाया अतः कैंसर से मृत्यु हुई।

गोपनीयता भंग न हो इसलिए यहां सभी जातकों के नाम गुप्त रखे गए हैं। प्रबुद्ध पाठक इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे। ज्योतिष में निरंतर शोध प्रवृति बढ़ाने हेतु एवं प्रामाणिकता की दृष्टि से कहीं कुछ कुंडलियों में नामों का भी उल्लेख प्रसंगवश कर दिया गया है। इस संदर्भ में किसी यजमान को कोई कष्ट पहुंचा हो तो उसके लिए भी अत्यंत विन्रम शब्दों में क्षमायाचना चाहता हूं। उपरोक्त जन्म कुंडलियां संयोगवश किसी अन्य व्यक्ति की कुंडली से मिल जाएं तो उसके लिए लेखक, संपादक व प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है। आगे के पृष्ठों से किस लग्न में कौन से रोग की संभावना है। इस पर लग्नानुसार विचार किया गया है साथ में आयु का परिमापन किया गया है जो कि महत्वपूर्ण है।

मेष लग्न और रोग

(1) मेष लग्न में षष्टेश बुध लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसा जातक जलस्राव से अंधा होता है।

(2) मेष लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश चंद्रमा पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) मेष लग्न में चंद्रमा यदि मंगल के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) मेष लग्न में चतुर्थेश चंद्रमा मिथुन, कन्या या वृश्चिक का हो एवं निर्बल हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) मेष लग्न में शनि कर्क का, षष्टेश बुध एवं सूर्य अन्य पापग्रहों के साथ या, पापमध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(6) जातक पारिजात के अनुसार मेष लग्न में चौथे और पांचवें भाव में पापग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(7) मेष लग्न में कर्क का शनि एवं कुंभ का सूर्य हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(8) मेष लग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश मंगल निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) मेष लग्न में वृश्चिक का सूर्य पापग्रहों के मध्य हो, पापदृष्ट हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) मेष लग्न में मंगल+चंद्रमा+शनि एक साथ दुःस्थान में हों तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।

(11) मेष लग्न में मंगल+शनि लग्नस्थ हो, चंद्रमा चौथे, सूर्य+शुक्र बारहवें हो तो जातक को 24 वर्ष की आयु में भयंकर पीलिया, रक्त-पित्त दोष होता है।

(12) मेष लग्न में लग्नस्थ पापग्रह हो, लग्न का स्वामी मंगल बलहीन हो तो मनुष्य सदैव रोगी होता है।

(13) मेष लग्न में क्षीण चंद्रमा बलहीन हो, किसी पापग्रह की लग्न पर दृष्टि हो तो व्यक्ति सदैव रोगी रहता है।

(14) मेष लग्न में मंगल चौथे या द्वादश भाव में शनि+बुध के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(15) मेष लग्न में शनि+चंद्रमा से युत होकर लग्नस्थ हो, बृहस्पति छठे भाव में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(16) मेष लग्न में उच्च का बृहस्पति केंद्र में हो, बुध त्रिकोण में हो तथा मंगल बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु प्राप्त करता है।

(17) मेष लग्न में लग्नेश मंगल लग्न को देखता हो, सभी शुभग्रह केंद्र में हों तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(18) मेष लग्न में मंगल हो, अथवा मंगल पांचवें सिंह का तथा सूर्य सातवें तुला का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

(19) मेष लग्न में शनि+मंगल+सूर्य हो, चंद्रमा द्वादश में तथा गुरु बलहीन हो तो ऐसा जातक 70 वर्ष तक जीता है।

(20) मेष लग्न में चंद्रमा+सूर्य दसम भाव में, शनि नीच का लग्न में, बृहस्पति कर्क का चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार के उच्च राजयोग की सृष्टि होती है पर ऐसा जातक मात्र 68 वर्ष तक ही जी पाता है।

(21) यदि शनि लग्न में, कर्क का चंद्रमा चौथे, मंगल सातवें और सूर्य दसवें किसी भी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(22) मेष लग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चंद्रमा छठे या आठवें स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(23) शनि लग्न में किसी भी अन्य ग्रह के साथ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक सैद्धांतिक तथा विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में ही गुजर जाता है।

(24) मेष लग्न में बलवान चंद्रमा लग्न में हो पर सूर्य से 120 अंश दूर हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 48 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(25) मेष लग्न में लग्नेश मंगल अष्टम भाव में पापग्रहों के साथ हो, और छठे स्थान में बुध पापग्रहों के साथ हो तथा शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जीता है।

(26) मेष (चर) लग्न में चंद्रमा कन्या या वृश्चिक का शुभग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केंद्र में न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक जीता है।

(27) मेष लग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त होता है।

(28) मेष लग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश निर्बल हो, लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त होता है।

(29) मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर एक-दूसरे के घर में बैठने से **'बालारिष्ट योग'** बनता है ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

(30) मेष लग्न में चौथे राहु तथा चंद्रमा आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक आठ वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

(31) मेष लग्न में अष्टमेश मंगल छठे स्थान में षष्ठेश बुध के साथ हो, शनि सप्तम में अन्य पापग्रहों के साथ हो, अष्टम स्थान में भी पापग्रह हो तो जातक 31 वर्ष की आयु में ही शल्य चिकित्सा या गुप्तरोग के कारण मृत्यु को प्राप्त करता है।

(32) मेष लग्न में मंगल हो, बृहस्पति बारहवें हो, शुक्र छठे स्थान में नीच का हो, शुभ ग्रहों की लग्न पर दृष्टि न हो तो उपाय न करने पर ऐसे जातक की एक माह में मृत्यु हो जाती है।

(33) मेष लग्न में सूर्य+चंद्रमा यदि कन्या राशि में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है तथा बालक की नौ वर्ष की आयु में मृत्यु होती है।

(34) मेष लग्न में बृहस्पति लग्नस्थ हो, चंद्रमा छठे या आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे जातक की आयु आठ वर्ष की होती है।

(35) मेष लग्न में सूर्य द्वादश में, चंद्रमा छठे या आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की **'तत्काल मृत्यु'** हो जाती है।

(36) मेष लग्न के लग्न या पंचम भाव में सूर्य+राहु+शनि+मंगल+ गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चंद्रमा निर्बल हो तो जातक शीघ्र मर जाता है।

(37) मेष लग्न के सप्तम भाव में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(38) मेष लग्न के चतुर्थ भाव में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(39) मेष लग्न में लग्नस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(40) लग्न एवं लग्नेश दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

(41) मेष (चर) लग्न में चंद्रमा पापग्रह के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(42) मेष लग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो, व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार के रोग से पीड़ित रहता है।

(43) मेष लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक पिशाच बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है एवं **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

वृष लग्न और रोग

(1) वृष लग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जल स्राव से अंधा होता है।

(2) वृष लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश सूर्य पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) वृष लग्न में चतुर्थेश सूर्य यदि अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) वृष लग्न में चतुर्थेश सूर्य, तुला, या मकर राशि का हो अथवा अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) वृष लग्न में सिंह का शनि चतुर्थ में हो, तथा सूर्य एवं षष्टेश शुक्र पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(6) वृष लग्न में चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो, सूर्य नीच का हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) वृष लग्न में सिंह का शनि एवं कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है पर जातक उपाय करने से बच जाता है।

(8) वृष लग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-टैक)होता है।

(9) वृष लग्न में वृश्चिक का सूर्य पापग्रहों के मध्य हो, पापदृष्ट हो तो जातक को असह्य (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) वृष लग्न में शुक्र+सूर्य+गुरु की युति एक स्थान दुःस्थान में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।

(11) वृष लग्न में पापग्रह हो, लग्न का स्वामी शुक्र बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) वृष लग्न में क्षीण चंद्रमा स्थित हो, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति सदैव रोगी रहता है।

(13) वृष लग्न में अष्टमेश गुरु लग्न में एवं लग्नेश शुक्र अष्टम में हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी रहता है।

(14) वृष लग्न में शुक्र चौथे या बारहवें भाव में मंगल +बुध के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(15) वृष लग्न में शनि+चंद्रमा से युत बृहस्पति छठे हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(16) वृष लग्न में शनि मेष का बारहवें, मंगल कन्या का पांचवें एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु प्राप्त करता है।

(17) वृष लग्न में कुंभ का बृहस्पति पापग्रहों के साथ केंद्र में हो ऐसा जातक ख्यातिप्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(18) वृष लग्न में शुक्र हो, तथा बुध और शनि केंद्र में हो, तीसरे भाव में उच्च का गुरु, एकादश में कोई भी शुभ ग्रह हो तों जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(19) शनि यदि लग्न में, सिंह का चंद्रमा चौथे, मंगल वृश्चिक का सातवें, सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(20) वृष लग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(21) वृष लग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश भाव में हो तो जातक सैद्धांतिक विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(22) वृष लग्न में लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में पापग्रहों के साथ हो, अष्टमेश गुरु पापग्रहों के साथ छठे भाव में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा व्यक्ति मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(23) वृष लग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(24) वृष लग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो, लग्न, द्वितीय एवं द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(25) वृष लग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर एक-दूसरे के घर में बैठने से **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

(26) वृष लग्न में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा सातवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक ज्यादा नहीं जीता।

(27) वृष लग्न में छठे स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(28) वृष लग्न में द्वादशस्थ शनि के साथ राहु का केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(29) वृष लग्न में तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(30) वृर्ष लग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(31) वृष लग्न का षष्ठेश शुक्र सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(32) वृष लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, शनि सातवें हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(33) वृष लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक पिशाच बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है एवं अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

मिथुन लग्न और रोग

(1) मिथुन लग्न में षष्टेश मंगल लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्त्राव से अंधा होता है।

(2) मिथुन लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश बुध पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) मिथुन लग्न में चतुर्थेश बुध अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) मिथुन लग्न में चतुर्थेश बुध कर्क या मीन राशि में हो, अस्त हो तो जातक को तीव्र हृदय रोग होता है।

(5) मिथुन लग्न में शनि चौथे कन्या का, षष्टेश मंगल एवं सूर्य पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग है।

(6) मिथुन लग्न में चतुर्थ एवं पंचम भाव में पापग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(7) मिथुन लग्न में कन्या का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य नवमें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(8) मिथुन लग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) मिथुन लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) मिथुन लग्न में बुध+शनि+मंगल की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से जातक की मृत्यु होती है।

(11) मिथुन लग्न में पापग्रह हो, लग्न का स्वामी बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) मिथुन लग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(13) अष्टमेश शनि लग्न में एवं लग्नेश बुध अष्टम में हो लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।

(14) मिथुन लग्न में लग्नेश बुध चौथे या द्वादश भाव में शनि+मंगल के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

(15) मिथुन लग्न में शनि + चंद्रमा से युत होकर बृहस्पति छठे भाव में स्थित हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

(16) मिथुन लग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(17) मिथुन लग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(18) मिथुन लग्न में लग्नेश बुध पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शनि पापग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(19) मिथुन लग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त होता है।

(20) मिथुन लग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(21) मिथुन लग्न में शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।

(22) मिथुन लग्न के चौथे स्थान में राहु एवं छठे स्थान में चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

(23) मिथुन लग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पापग्रहों के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चंद्रमा पापग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51 वें वर्ष में फांसी के द्वारा होती है।

(24) मिथुन लग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

(25) मिथुन लग्न में सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

(26) मिथुन लग्न के आठवें स्थान में सूर्य +मंगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही गुजर जाता है।

(27) मिथनु लग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, गुरु पंचम या अष्टम में हो, अन्य शुभयोग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

(28) मिथुन लग्न के आठवें स्थान में सूर्य+राहु+बृहस्पति+मंगल हो, तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसके शरीर में शारीरिक रुग्णता बनी रहती है।

(29) मिथुन लग्न के द्वितीय स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(30) मिथुन लग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(31) मिथुन लग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन में निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(32) मिथुन लग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(33) मिथुन लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के मध्य हो, शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(34) मिथुन लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

कर्क लग्न और रोग

(1) कर्क लग्न में सूर्य सातवें हो तो मनुष्य को नेत्र रोग होता है।

(2) कर्क लग्न में षष्ठेश गुरु पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(3) कर्क लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश शुक्र पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) कर्क लग्न में चतुर्थेश शुक्र अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) कर्क लग्न में चतुर्थेश शुक्र कन्या या सिंह राशि में हो, अस्त हो तो जातक को हृदयरोग होता है।

(6) कर्क लग्न में शनि तुला का चतुर्थ में हो तथा षष्ठेश शनि सूर्य के साथ पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) कर्क लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(8) कर्क लग्न में तुला का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य आठवें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(9) कर्क लग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश चंद्रमा हीनबली हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) कर्क लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(11) कर्क लग्न में चंद्रमा+शुक्र+शनि की एक साथ युति दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।

(12) कर्क लग्न में पापग्रह हो, लग्न का स्वामी मंगल बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी होता है।

(13) कर्क लग्न में क्षीण चंद्रमा लग्न में हो, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी होता है।

(14) कर्क लग्न में अष्टमेश शनि लग्न में तथा लग्नेश चंद्रमा अष्टम में हो, लग्न पापग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी बना रहता है।

(15) कर्क लग्न में चंद्रमा यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।

(16) कर्क लग्न में लग्नस्थ चंद्रमा हो तथा चंद्रमा, शनि और मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति छोटे कद का एवं कुबड़ा होता है।

(17) कर्क लग्न हो बृहस्पति लग्न में, मंगल मकर एवं शुक्र मीन या वृष में हो, अन्य सभी ग्रह केंद्र स्थानों में हों तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।

(18) कर्क लग्न में गुरु + चंद्र लग्नस्थ हो, शुक्र एवं बुध केंद्र में हो, मंगल और शनि तीसरे, छठे या एकादस स्थानों में हो तो ऐसा व्यक्ति 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।

(19) कर्क लग्न में पंचम भाव में वृश्चिक का चंद्रमा त्रिकोण में बृहस्पति एवं दसम स्थान में मंगल हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(20) कर्क लग्न में शनि आठवें हो तो जातक दीर्घायु को भोगता है अथवा शनि यदि पंचम भाव में वृश्चिक का हो तो भी दीर्घायु होती है।

(21) कर्क लग्न में शनि चंद्रमा के साथ सप्तम भाव में केंद्रवर्ती हो तो जातक स्वस्थ सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है।

(22) कर्क लग्न में दसमेश मंगल पंचम भाव में, अष्टमेश केंद्र में अन्य शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक सौ वर्ष तक जीता है।

(23) कर्क लग्न में अष्टमेश शनि लग्न में गुरु एवं शुक्र के द्वारा दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।

(24) कर्क लग्न में चंद्रमा छठे धनु का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केंद्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(25) कर्क लग्न में बृहस्पति उच्च का हो, चंद्रमा बलवान हो तथा शुभग्रह केंद्र-त्रिकोण में हो तो जातक 80 वर्ष की आयु को भोगता है।

(26) कर्क लग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें वृश्चिक का, सूर्य सातवें मकर का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

(27) कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा लग्न को देख रहा हो तथा सभी शुभग्रह केंद्र में हो जातक की आयु 70 वर्ष की होती है।

(28) कर्क लग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश या पंचम भाव में हो, गुरु बलहीन हों तो जातक की आयु 70 वर्ष की होती है।

(29) कर्क लग्न में बृहस्पति+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन राशि का नवम में तथा चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर द्वादश में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है। पर ऐसे व्यक्ति की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है।

(30) शनि लग्न में, तुला का चंद्र चौथे, उच्च का मंगल सातवें, उच्च का सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(31) कर्क लग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो ऐसा व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(32) कर्क लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक सैद्धांतिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(33) कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा पापग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश शनि पापग्रहों के साथ छठे स्थान में, किसी भी शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(34) कर्क लग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(35) कर्क लग्न में द्वितीय या द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश चंद्रमा निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की **'अल्पायु'** को प्राप्त करता है।

(36) कर्क लग्न में शनि दो पापग्रहों के मध्य हो, चतुर्थ भाव का स्वामी शुक्र, छठे स्थान में पापग्रह के साथ हो, चंद्रमा पाप दृष्ट एवं निर्बल हो तो ऐसा जातक 67 वर्ष की आयु में अपने ही नौकर द्वारा अस्त्र-शस्त्र से मारा जाता है।

(37) कर्क लग्न में सूर्य कुंभ में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसा बालक 12 वर्ष की आयु के पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त करता है।

(38) कर्क लग्न में सूर्य+ मंगल आठवें हो, लग्नेश चंद्र निर्बल हो, अन्य शुभ योग न हो तो तीव्र **'बालारिष्ट योग'** बनता है। उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही मृत्यु को प्राप्त कर जाता है।

(39) कर्क लग्न में सूर्य चौथे, अष्टम में बृहस्पति एवं द्वादश में चंद्रमा, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त करता है।

(40) कर्क लग्न के दूसरे स्थान में सिंह का सूर्य हो तथा चौथे एवं दसवें भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

(41) कर्क लग्न के अष्टम या सप्तम स्थान में बृहस्पति+राहु+मंगल+सूर्य हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई- न- कोई बीमारी लगी ही रहती है।

(42) कर्क लग्न के दसम स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(43) कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(44) कर्क (चर) लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(45) कर्क लग्न में षष्टेश बृहस्पति सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(46) कर्क लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ, **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

सिंह लग्न और रोग

(1) सिंह लग्न में सूर्य सातवें हो तो मनुष्य को नेत्र रोग होता है।

(2) सिंह लग्न में शनि हो तो मनुष्य जन्म से अंधा होता है। अथवा

(3) सिंह लग्न में शनि हो तो मनुष्य भेंगा (बाडा) होता है।

(4) सिंह लग्न में षष्टेश शनि लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(5) सिंह लग्नस्थ सूर्य और चंद्रमा को यदि मंगल किंवा शनि देखे तो मनुष्य नेत्रहीन हो जाता है।

(6) सिंह लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश चंद्रमा पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) सिंह लग्न में चतुर्थेश मंगल अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) सिंह लग्न में चतुर्थेश मंगल कर्क राशि का अथवा आठवें हो एवं अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(9) सिंह लग्न में शनि वृश्चिक का चौथे, षष्टम भाव में सूर्य अन्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(10) जातक पारिजात के अनुसार सिंह लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(11) सिंह लग्न के चतुर्थ भाव में शनि हो तथा कुंभ का सूर्य सातवें हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(12) सिंह लग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश सूर्य निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(13) सिंह लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(14) सिंह लग्न में सूर्य+मंगल+गुरु की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो ऐसे जातक की वाहन दुर्घटना में अकाल मृत्यु होती है।

(15) सिंह लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश सूर्य बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(16) सिंह लग्न में क्षीण चंद्रमा लग्नस्थ हो, लग्न को पापग्रह देख रहा हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(17) सिंह लग्न में चंद्रमा छठे मकर का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केंद्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(18) सिंह लग्न में वृश्चिक का मंगल दसम भाव को देखता हो, बुध एवं शुक्र की युति केंद्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।

(19) सिंह लग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें धनु का एवं सूर्य सातवें कुंभ का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

(20) सिंह लग्न में कुंभ का बृहस्पति पापग्रहों के साथ केंद्र में हो तो ऐसा जातक ख्यातिप्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(21) शनि लग्न में, वृश्चिक का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें किसी अन्य शुभग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(22) सिंह लग्न में अष्टमेश बृहस्पति सातवें हो तथा पापग्रहों के साथ चंद्रमा छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(23) सिंह लग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है।

(24) सिंह लग्न में लग्नेश सूर्य पापग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश गुरु पापग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष की में गुजर जाता है।

(25) सिंह लग्न में शनि +मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(26) सिंह लग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश सूर्य निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(27) सिंह लग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

(28) सिंह लग्न में लग्नस्थ सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो लग्न से दूसरे एवं द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्न में एकाधिक शत्रुग्रहों की युति हो तो ऐसे जातक की 47वें वर्ष में मृत्यु अस्त्र-शस्त्र एवं विस्फोटक सामग्री से होती है।

(29) सिंह लग्न में सूर्य मकर का एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

(30) सिंह लग्न के दूसरे घर कन्या राशि में राहु+शुक्र+सुर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा कुछ समय बाद स्वयं भी मर जाता है।

(31) सिंह लग्न के प्रथम भाव में ही सूर्य+शनि+राहु+मंगल+ गुरु इन पांच ग्रहों की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते शीघ्र गुजर जाता है।

(32) सिंह लग्न के छठे भाव में बृहस्पति+सूर्य+राहु+मंगल हो तथा सातवें शुक्र हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

(33) सिंह लग्न के द्वादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(34) सिंह लग्न के नवम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(35) सिंह लग्न में लग्नेश सूर्य एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में शनि एवं चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(36) सिंह लग्न में चंद्रमा पापग्रह के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(37) सिंह लग्न में षष्ठेश शनि सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(38) सिंह लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ, **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

कन्या-लग्न और रोग

(1) कन्या लग्न में षष्टेश शनि लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(2) कन्या लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश बृहस्पति पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) कन्या लग्न में चतुर्थेश बृहस्पति यदि अष्टमेश मंगल के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) कन्या लग्न में चतुर्थेश बृहस्पति मकर राशि में निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदयरोग होता है।

(5) कन्या लग्न के चतुर्थ स्थान में शनि धनु का, एवं छठे स्थान में सूर्य अन्य पापग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(6) जातक पारिजात के अनुसार कन्या लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(7) कन्या लग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं कुंभ का सूर्य छठे हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) कन्या लग्न के चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) कन्या लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) कन्या लग्न में बुध+बृहस्पति+मंगल की एक साथ युति दुःस्थानों में हो तो ऐसे जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।

(11) कन्या लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) कन्या लग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

(13) कन्या लग्न में अष्टमेश मंगल लग्न में हो, लग्नेश बुध अष्टम में हो, लग्न को कोई पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

(14) कन्या लग्न में लग्नेश बुध चौथे या बारहवें मंगल और शनि के साथ हो तो जातक को कुष्ट (कोढ़) होता है।

(15) कन्या लग्न में शनि+चंद्रमा+बृहस्पति छठे स्थान में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(16) कन्या लग्न में शुक्र+शनि हो, बृहस्पति पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को वीर्यस्त्राव का रोग होता है।

(17) कन्या लग्न में शुक्र+शनि हो, तथा सूर्य+बुध की युति कहीं भी हो तो व्यक्ति में नपुंसकता आती है।

(18) कन्या लग्न में मंगल+शनि सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री व संतान को कष्ट मिलता है।

(19) कन्या लग्न में षष्ठ भाव में स्थित राहु जातक को रोगी बनाता है।

(20) कन्या लग्न के दूसरे भाव में शनि हो, छठे राहु तथा द्वादश में मंगल जातक को भयंकर नेत्रपीड़ा व दिमाग में गर्मी देता है।

(21) कन्या लग्न में नीच का शनि अष्टमस्थ होने से जातक को मूत्र विकार (Urine-problem) रहती है।

(22) कन्या लग्न में नीचस्थ शनि के साथ सप्तमेश गुरु भी आठवें हो तो मधुमेह, संधिरोग तथा गुह्यरोगों के कारण जातक पीड़ित रहता है।

(23) कन्या लग्न पर शनि व बुध का प्रभाव हो तथा शुक्र मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर सकता।

(24) कन्या लग्न में मंगल+ शुक्र छठे हो, उन पर शनि या गुरु की दृष्टि हो तो जातक के पेट में घाव (अल्सर) होता है।

(25) कन्या लग्न में चंद्रमा अष्टम भाव में हो तथा बुध+सूर्य+मंगल की युति कहीं भी हो तो जातक की पाचन तंत्रिका खराब होती है तथा जातक ब्लडप्रैशर के कारण मरता है।

(26) कन्या लग्न के तीसरे भाव में मंगल व राहु तुला के हों जातक के अंडकोश पर जहरीला कीड़ा काटता है अथवा जातक के अंडकोश का ऑपरेशन (पोस्टग्लैंड) होता है।

(27) कन्या लग्न में सूर्य+शनि सप्तमस्थ हो तथा बुध व चंद्रमा छठे स्थान में हो तो जातक को मूर्च्छी रोग (मृगी की बीमारी) होती है।

(28) कन्या लग्न में चंद्रमा, अष्टम में गुरु एवं नवम में राहु हो तो राहु की दशा तथा गुरु के अन्तर में जातक को भयंकर शारीरिक कष्ट होता है।

(29) कन्या लग्न में राहु+चंद्रमा चतुर्थ में हो तथा उस पर शनि का प्रभाव हो, शुभग्रह न देखते हों तो व्यक्ति को टी०बी० का रोग अवश्य होता है।

(30) कन्या लग्न में शनि का पंचमभाव में मकर का, तथा बुध+गुरु सप्तम में मीन राशि के हों तो जातक नपुंसक होता है।

(31) कन्या लग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।

(32) कन्या लग्न में सूर्य+चंद्रमा दसम भाव में, शनि लग्न में, एवं स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार का उच्च राजयोग बनता है पर ऐसा जातक मात्र 68 वर्ष तक ही जी पाता है।

(33) शनि लग्न में, धनु का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(34) कन्या लग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष में गुजर जाता है।

(35) कन्या लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(36) कन्या लग्न में लग्नेश बुध पापग्रहों क साथ अष्टम स्थान में हो तो अष्टमेश मंगल पापग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(37) कन्या लग्न में अष्टमेश मंगल यदि मेष या सिंह राशि में हो तो जातक 42 वर्ष तक ही जी पाता है।

(38) कन्या लग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(39) कन्या लग्न के द्वितीय या द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(40) कन्या लग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

(41) कन्या लग्न में सूर्य+शनि+मंगल आठवें शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। यदि उपाय न किया जाए तो ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में होती है।

(42) कन्या लग्न में सूर्य कुंभ राशि में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

(43) कन्या लग्न में राहु+बुध+शनि द्वादश में हो, गुरु पंचम में हो तथा अन्य शुभ योग न हो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

(44) कन्या लग्न के पंचम या छठे स्थान में सूर्य+बृहस्पति+राहु+मंगल हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

(45) कन्या लग्न के आठवें स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(46) कन्या लग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(47) कन्या लग्न के एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(48) कन्या लग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(49) कन्या लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(50) कन्या लग्न में षष्टेश शनि सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(51) कन्या लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

तुला लग्न और रोग

(1) तुला लग्न में षष्ठेश गुरु लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(2) तुला लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश शनि पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) तुला लग्न में चतुर्थेश शनि यदि अष्टमेश शुक्र के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) तुला लग्न में चतुर्थेश शनि मेष, सिंह या वृश्चिक राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) तुला लग्न के चतुर्थ स्थान में शनि एवं छठे स्थान में सूर्य अन्य पापग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(6) तुला लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(7) तुला लग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं पंचम भाव में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) तुला लग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असहय हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) तुला लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) तुला लग्न में शुक्र+शनि+गुरु की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो जातक की अकाल मृत्यु वाहन दुर्घटना से होती है।

(11) तुला लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश शुक्र बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) तुला लग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पापग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

(13) तुला लग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह हो तथा लग्न पर एकाधिक पापग्रहों का प्रभाव हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

(14) तुला लग्न में लग्नेश शुक्र चौथे या द्वादश भाव में मंगल+बुध के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(15) तुला लग्न में चंद्र+शनि+बृहस्पति छठे स्थान में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

(16) तुला लग्न में उच्च का बृहस्पति केंद्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शुक्र बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

(17) तुला लग्न में मंगल पांचवें कुंभ का, शनि मेष का, सूर्य सातवें शनि के साथ हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को प्राप्त करता है।

(18) तुला लग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।

(19) शनि लग्न में, मकर का चंद्र चौथे, मंगल स्वगृही सातवें, सूर्य दसवें किसी अन्य शुभग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(20) तुला लग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(21) तुला लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति सैद्धांतिक, चरित्रवान एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(22) तुला लग्न में लग्नेश शुक्र पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा षष्टम भाव में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(23) तुला लग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें एवं बृहस्पति छठे पापग्रहों के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करता हुआ मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

(24) तुला लग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(25) तुला लग्न में बृहस्पति मेष का तथा मंगल मीन का परस्पर घर बदल कर बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

(26) तुला लग्न में बुध यदि छठे हो, लग्न व चंद्रमा कमजोर हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है उपाय न करने पर ऐसा जातक छः वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

(27) तुला लग्न में शनि सप्तम में नीच का एवं द्वादश भाव में गुरु+शुक्र+राहु हो अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(28) तुला लग्न में सूर्य चौथे, अष्टम में बृहस्पति, द्वादश में चंद्रमा हो तथा लग्नेश शुक्र कमजोर हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही **'शीघ्र मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

(29) तुला लग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्र की युति, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा बालक **'शीघ्र मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

(30) तुला लग्न के दूसरे स्थान में वृश्चिक का मंगल हो तथा चतुर्थ एवं दसम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

(31) तुला लग्न के सप्तम भाव में शनि के साथ, राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(32) तुला लग्न में लग्नस्थ सूर्य के साथ, राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(33) तुला लग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(34) तुला (चर) लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार कर्म से पीड़ित रहता है।

(35) तुला लग्न में षष्ठेश बृहस्पति सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

(36) तुला लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

वृश्चिक लग्न और रोग

(1) वृश्चिक लग्न में षष्ठेश मंगल लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(2) वृश्चिक लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश शनि पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) वृश्चिक लग्न में चतुर्थेश शनि यदि अष्टमेश बुध के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) वृश्चिक लग्न में चतुर्थेश शनि मेष, सिंह या वृश्चिक राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) वृश्चिक लग्न के चतुर्थ स्थान में शनि पापग्रहों से दृष्ट एवं छठे स्थान में सूर्य पापग्रहों के साथ बैठा हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(6) वृश्चिक लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।

(7) वृश्चिक लग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असहय हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(8) वृश्चिक लग्न के चतुर्थ स्थान में शनि एवं कुंभ का सूर्य साथ में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(9) वृश्चिक लग्न में लग्नस्थ सूर्य यदि दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) वृश्चिक लग्न में मंगल+शनि+बुध की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो जातक की अकाल मृत्यु वाहन दुर्घटना से होती है।

(11) वृश्चिक लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश मंगल बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) वृश्चिक लग्न में चंद्रमा बैठा हो, लग्न पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक रोग ग्रस्त रहता है।

(13) वृश्चिक लग्न में अष्टमेश बुध लग्न में हो, लग्नेश मंगल आठवें हो, लग्न पर पापग्रहों का प्रभाव हो तो ऐसा जातक दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

(14) वृश्चिक लग्न में लग्नेश मंगल चौथे या द्वादश भाव में बुध+शनि के साथ हो तो जातक कुष्ट रोग से ग्रसित रहता है।

(15) शनि लग्न में, कुंभ का चंद्र चौथे, मंगल सातवें तथा दसम भाव में स्वगृही सूर्य किसी अन्य शुभग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(16) वृश्चिक लग्न में अष्टमेश बुध सातवें हो तथा चंद्रमा किसी पापग्रह के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(17) वृश्चिक लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(18) वृश्चिक लग्न में लग्नेश मंगल पापग्रहों के साथ आठवें स्थान में हो, अष्टमेश बुध पापग्रहों के साथ छठे भाव में अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(19) वृश्चिक लग्न में चंद्रमा मेष या मिथुन राशि का शुभग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शत्रुग्रह केंद्र में न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक ही जी पाता है।

(20) वृश्चिक लग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(21) वृश्चिक लग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

(22) वृश्चिक लग्न में सूर्य+चंद्रमा यदि मिथुन राशि में, किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसा बालक नौ वर्ष की आयु तक मृत्यु को प्राप्त कर जाता है।

(23) वृश्चिक लग्न में बृहस्पति मेष का और चंद्रमा आठवें, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष तक ही जी पाता है।

(24) वृश्चिक लग्न में सूर्य द्वादश में, चंद्रमा आठवें, शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसे जातक की **'तत्काल मृत्यु'** होती है।

(25) वृश्चिक लग्न के छठे भाव में सूर्य+मंगल+बृहस्पति+राहु हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

(26) वृश्चिक लग्न में द्वादश सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(27) वृश्चिक लग्न में षष्टस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(28) वृश्चिक लग्न में नवम भाव स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(29) वृश्चिक लग्न में लग्नेश मंगल एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में पापग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(30) वृश्चिक लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(31) वृश्चिक लग्न में षष्ठेश मंगल सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(32) वृश्चिक लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम भाव में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

धनु लग्न और रोग

(1) धनु लग्न में षष्ठेश शुक्र लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा हो जाता है।

(2) धनु लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो तथा चतुर्थेश बृहस्पति पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) धनु लग्न में चतुर्थेश बृहस्पति यदि अष्टमेश चंद्र के साथ अष्टम स्थानमें पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) धनु लग्न में चतुर्थेश बृहस्पति मकर राशि में, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) धनु लग्न में शनि चतुर्थ भाव में मीन का, षष्ठेश चंद्रमा एवं सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(6) जातक पारिजात के अनुसार धनु लग्न के चतुर्थ एवं पंचम भाव में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) धनु लग्न में मीन का शनि चतुर्थ में एवं कुंभ का सूर्य तृतीय में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) धनु लग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो, लग्नेश, बृहस्पति निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) धनु में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) धनु लग्न में वृश्चिक +चंद्रमा+शुक्र की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।

(11) धनु लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश बृहस्पति बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) धनु लग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसा जातक रोगग्रस्त रहता है।

(13) धनु लग्न में अष्टमेश चंद्रमा लग्न में हो, लग्नेश बृहस्पति अष्टम में हो, लग्न पापदृष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी रहता है।

(14) धनु लग्न में बृहस्पति लग्न को देखता हो तथा सभी शुभग्रह केंद्र में हों तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

(15) धनु लग्न में मंगल पांचवें एवं शनि मेष का साथ में हो एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

(16) धनु लग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष तक जीता है।

(17) धनु लग्न में सूर्य+चंद्रमा दसवें, शनि लग्न में तथा स्वगृही बृहस्पति चौथे स्थान में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है परंतु ऐसा व्यक्ति मात्र 68 वर्ष तक की आयु को ही भोग पाता है।

(18) धनु लग्न में बृहस्पति+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन का केंद्र में तथा वृश्चिक राशि का चंद्रमा द्वादश में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे जातक की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है।

(19) शनि लग्न में, मीन का चंद्र हो चौथे, मंगल सातवें एवं दसवें स्थान में सूर्य किसी अन्य शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(20) धनु लग्न में अष्टमेश चंद्रमा सातवें हो तथा लग्नेश पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(21) धनु लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(22) धनु लग्न में बृहस्पति लग्नस्थ हो तथा मंगल और राहु आठवें हो तो जातक 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(23) धनु लग्न में लग्नेश बृहस्पति पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे, अन्य किसी शुभग्रह से दृष्ट न हो तों जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(24) धनु लग्न में शनि+मंगल हो पापग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(25) धनु लग्न में द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो लग्नेश बृहस्पति निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(26) धनु लग्न में बृहस्पति वृश्चिक में एव मंगल धनु में परस्पर परिवर्तन करके बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर हो जाती है।

(27) धनु लग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

(28) धनु लग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही **'शीघ्र मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

(29) धनु लग्न के दूसरे भाव में मकर का शनि हो तथा चतुर्थ, दसम भाव में भी क्रूर ग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

(30) धनु लग्न के द्वितीय, तृतीय या द्वादश भाव में सूर्य+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-ना-कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

(31) धनु लग्न के अष्टम भाव में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(32) धनु लग्न के पंचमस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(33) धनु लग्न में लग्नेश गुरु एवं लग्न दोनों पापग्रहों के साथ हों, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(34) धनु लग्न में षष्टेश शुक्र सप्तम या दसम में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(35) धनु लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

मकर लग्न और रोग

(1) मकर लग्न में षष्ठेश बुध लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(2) मकर लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश मंगल पापग्रह के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) मकर लग्न में चतुर्थेश मंगल यदि अष्टमेश सूर्य के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) मकर लग्न में चतुर्थेश मंगल कर्क राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) मकर लग्न के चतुर्थ स्थान में शनि एवं षष्ठेश सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(6) मकर लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) मकर लग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं द्वितीय भाव में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) मकर लग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो लग्नेश शनि निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) मकर लग्न में वृश्चिक के सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हों तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) मकर लग्न में शनि+मंगल+सूर्य की युति एक साथ, दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।

(11) मकर लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश शनि बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) मकर लग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

(13) मकर लग्न में अष्टमेश सूर्य लग्न में, लग्नेश शनि अष्टम में हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।

(14) मकर लग्न में चंद्रमा छठे मिथुन का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केंद्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(15) मकर लग्न में मेष का मंगल दसम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केंद्र-त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।

(16) मकर लग्न में उच्च का बृहस्पति केंद्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शनि बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(17) मकर लग्न में लग्नेश शनि को देखता हो, सभी शुभग्रह केंद्र में हों तो जातक 73 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(18) मकर लग्न में पांचवें, सूर्य सातवें कर्क का एवं शनि मेष का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

(19) शनि लग्न में, मेष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(20) मकर लग्न में अष्टमेश सूर्य सातवें हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(21) मकर लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धांतिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(22) मकर लग्न में लग्नेश शनि पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश सूर्य पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(23) मकर लग्न शनि+मंगल लग्न में हो, पापग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें, एवं बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

(24) मकर लग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

(25) मकर लग्न में मंगल धनु में एवं बृहस्पति वृश्चिक में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

(26) मकर लग्न में चतुर्थेश मंगल द्वादश में हो, सप्तम भाव में कर्क का शनि हो, सप्तमेश चंद्रमा आठवें हो तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु 34 वें वर्ष में वायुयान दुर्घटना द्वारा होती है

(27) मकर लग्न में सूर्य+मंगल+शनि अष्टम स्थान में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

(28) मकर लग्न में शनि सिंह में एवं सूर्य मकर का लग्न में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व ही हो जाती है।

(29) मकर लग्न के में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही **'शीघ्र मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

(30) मकर लग्न प्रथम भाव में राहु+सूर्य+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चंद्रमा हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही **'शीघ्र मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

(31) मकर लग्न के दूसरे भाव में कुंभ का शनि हो तथा चतुर्थ, दसम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

(32) मकर लग्न में सप्तमस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(33) मकर लग्न में चतुर्थ भाव स्थित शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(34) मकर लग्न में लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(35) मकर (चर) लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(36) मकर लग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दसम भाव में, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(37) मकर लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

कुंभ लग्न और रोग

(1) कुंभ लग्न में षष्ठेश चंद्रमा लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(2) कुंभ लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश शुक्र पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(3) कुंभ लग्न में चतुर्थेश शुक्र यदि अष्टमेश बुध के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) कुंभ लग्न में चतुर्थेश शुक्र कन्या राशि में, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) कुंभ लग्न के चतुर्थ स्थान में शनि, षष्ठेश बुध एवं सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(6) जातक पारिजात के अनुसार कुंभ लग्न के चौथे एवं पांचवें भावों में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) कुंभ लग्न के चतुर्थ स्थान में वृष का शनि एवं लग्न में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) कुंभ लग्न के चतर्थ भाव में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(9) कुंभ लग्न में वृश्चिक सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) कुंभ लग्न में शनि+शुक्र+बुध की युति एक साथ, दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होती है।

(11) कुंभ लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश शनि बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(12) कुंभ लग्न में क्षीण लग्नस्थ हो, लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

(13) कुंभ लग्न में अष्टमेश बुध लग्न में एवं लग्नेश शनि अष्टम में हो, लग्न पापग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

(14) कुंभ लग्न में मंगल पांचवें मिथुन का, शनि मेष का एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

(15) कुंभ लग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा पंचम या द्वादश भाव में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष की होती है।

(16) कुंभ लग्न में बृहस्पति पापग्रहों के साथ लग्न में हो तो ऐसा जातक ख्यातिप्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(17) शनि लग्न में, वृष का चंद्र, चौथे, मंगल सातवें एवं दसम भाव में सूर्य अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(18) कुंभ लग्न में अष्टमेश बुध सातवें एवं चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(19) कुंभ लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो जातक चरित्रवान एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(20) कुंभ लग्न में लग्नेश शनि पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश बुध पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रहों से दृष्ट न होतो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(21) कुंभ लग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवे एवं बृहस्पति पापग्रहों के साथ छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

(22) कुंभ लग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

(23) कुंभ लग्न में सूर्य+चंद्रमा कन्या राशि में शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु नौ वर्ष की आयु तक हो जाती है।

(24) कुंभ लग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसे बालक जन्म लेते ही **'शीघ्र मृत्यु'** को प्राप्त हो जाते हैं।

(25) कुंभ लग्न में चंद्रमा आठवें एवं सूर्य बारहवें भाव में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की **'तत्काल मृत्यु'** होती है।

(26) कुंभ लग्न के प्रथम या द्वादश भाव में सूर्य+शनि+मंगल+राहु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

(27) कुंभ लग्न में छठे भाव में स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

(28) कुंभ लग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(29) कुंभ लग्न में शनि एवं लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(30) कुंभ लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(31) कुंभ लग्न में षष्ठेश चंद्रमा सप्तम या दसम में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(32) कुंभ लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

मीन लग्न और रोग

(1) मीन लग्न में षष्ठेश सूर्य लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।

(2) मीन लग्न में षष्ठेश सूर्य पापक्रांत हो तथा शुभग्रह छठे या व्यय स्थान में हो तो जातक को असहय हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(3) मीन लग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश बुध पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(4) मीन लग्न में चतुर्थेश बुध कर्क राशि में, निर्बल या अस्तगत हो अथवा आठवें हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(5) मीन लग्न के चतुर्थ शनि में शनि हो षष्ठेश शुक्र एवं सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(6) मीन लग्न में चतुर्थेश बुध यदि अष्टमेश शुक्र के साथ अष्टमा में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(7) जातक पारिजात के अनुसार मीन लग्न के चौथे एवं पांचवें भावों में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(8) मीन लग्न के चतुर्थ स्थान में मिथुन का शनि एवं कुंभ का सूर्य द्वादश में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(9) मीन लग्न के चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो, लग्नेश, बृहस्पति निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय (हार्ट-अटैक) होता है।

(10) मीन लग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

(11) मीन लग्न में गुरु+बुध+शुक्र की युति एक साथ, दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होती है।

(12) मीन लग्न में पापग्रह हो, लग्नेश बृहस्पति बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

(13) मीन लग्न में क्षीण चंद्रमा लग्नस्थ हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

(14) मीन लग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में हो, लग्नेश गुरु अष्टम में हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

(15) मीन लग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में बैठा हो तथा लग्न गुरु एवं अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(16) मीन लग्न में चंद्रमा छठे सिंह का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केंद्रवर्ती हों तो ऐसा जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

(17) मीन लग्न में मंगल पांचवें कर्क का हो, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

(18) शनि लग्न में, मिथुन का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसम भाव में अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(19) मीन लग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(20) मीन लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धांतिक, चरित्रवान एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

(21) मीन लग्न में लग्नेश बृहस्पति पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शुक्र पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

(22) मीन लग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(23) मीन लग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश बृहस्पति निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

(24) मीन लग्न में शनि मंगल दूसरे स्थान में एवं राहु तीसरे स्थान में बैठा हो तथा शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक एक वर्ष के भीतर मर जाता है।

(25) मीन लग्न में शनि सप्तम भाव में हो तथा बृहस्पति+शुक्र+राहु द्वादश भाव में हो तथा अन्य कोई शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त करता है।

(26) मीन लग्न के दूसरे घर में (मेष राशि) में राहु+शुक्र+शनि +सूर्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो, लग्नेश निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा स्वयं भी कुछ समय बाद गुजर जाता है।

(27) मीन लग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्र की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

(28) मीन लग्न के दूसरे भाव में मेष का मंगल का हो तथा चतुर्थ, दसम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

(29) लग्न के द्वादश भाव में बृहस्पति +सूर्य राह + मंगल हो सातवें शुक्र हो तो जातक बहुत कष्टमय जीवन जीता है। उसे शारीरिक रुग्णता रहती है।

(30) मीन लग्न के द्वितीय, एकादश या द्वादश भाव में शनि +मंगल +राहु +बृहस्पति की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न-कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

(31) मीन लग्न में अष्टमस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(32) मीन लग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

(33) मीन लग्न में लग्नेश बृहस्पति व लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

(34) मीन लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

(35) मीन लग्न में षष्ठेश सूर्य सप्तम या दसम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

(36) मीन लग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

1. रोगग्रस्त योग

निष्पत्ति — (क) यदि लग्नाधिपति लग्न भाव में स्थित हो और षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश से युक्त हो।

(ख) यदि कमजोर लग्नाधिपति त्रिकोण या केंद्र में स्थित हो तो रोगग्रस्त योग बनता है।

परिणाम — जातक का शरीर कमजोर होगा और रोगी रहेगा।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. रोगी योग

निष्पत्ति — **लग्ने सपापे लग्नेशे बलहीनेऽतु रोमवान् ।** *जातक पारिजात*

परिणाम — लग्न में पापग्रह हो और लग्न का स्वामी बलहीन हो तो वह रोगी होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

3. रोगग्रस्त योग

निष्पत्ति — **तनुभं चंद्रसंयुक्तं चन्द्रोऽपि क्षीणतां गतः**

रोगातुरो नरश्चैव कथितो गणकोत्तमैःहोरा रत्न

परिणाम — लग्न में क्षीण चंद्रमा हो तो आदमी रोगी होता है।

उपाय — लग्नेश व मोती का संयुक्त यन्त्र धारण करें।

4. रोगग्रस्त योग (परिवर्तन से)

निष्पत्ति — **लग्नाधिपो मृत्युभावे मृत्युपो यदि लग्नगः**

लग्नभं क्रूरसंयुक्त क्रूरदृष्टं स रोगिणःहोरा रत्न

परिणाम — लग्न का स्वामी अष्टम में और अष्टम का स्वामी लग्न में पापग्रह हो और लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो मनुष्य रोगी होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

5. विशेष रोगी योग

निष्पत्ति — **लग्ननाथो रिपुगतो लग्नभं चंद्रसंयुतं**

क्रूरग्रहेण संदृष्टं नरो रोगी विशेषतः। *होरा रत्न*

परिणाम — लग्न का स्वामी छठे स्थान में हो, लग्न में चंद्रमा हो, लग्न को पापग्रह देखते हों तो आदमी विशेष रोगी होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

6. रोगी योग

निष्पत्ति — **लग्नाधीशे अष्टमस्थे क्रूरश्चैव तु पंचमे**

लग्ननाथः क्रूरयुतो रोगवान्पुरुषः किल। *होरा रत्न*

परिणाम — लग्न का स्वामी अष्टम स्थान में और पंचम स्थान में क्रूर ग्रह हो, लग्न का स्वामी क्रूरग्रह युक्त हो तो रोगी होती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

7. रोगी योग

निष्पत्ति — **देहाधिपश्चंद्रगृहाधिपो वा**

तृतीयरिष्कारिगतो बलः स्यात् ।

नीचास्तगद्विष्टगृहे स्थितो वा

कार्श्य शरीरेति गदंकरोति ।। *—बृहद पारासर*

परिणाम — लग्न का स्वामी और चंद्रमा 3/6/12 स्थान में निर्बल अथवा नीच राशि का हो तो शरीर रोगी और कमताकत (दुर्बल) रहता है।

उपाय — लग्नेश का रत्न एवं मोती संयुक्त रूप से 'बीसा यंत्र' में धारण करें।

8. रोगग्रस्त योग

निष्पत्ति — **अरिपरिस्तनुपोऽथ परस्परं ।**

सकलदृष्टिभिरेव विलोकितः ।

बहुविधां लभते रिपुजां व्यथो

विधि रोगनिपीडितः सर्वदा ।। *—होरा रत्न*

परिणाम — लग्न का स्वामी और छठे स्थान का स्वामी दोनों की परस्पर दृष्टि हो तो शरीर को बहुत रोग होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

9. रोगी योग

निष्पत्ति — **तनुगताः शशिभास्करपंगवो**
विधिरोगकराश्च भवंति हि ।
प्रबलवातविशेष शिराव्यथां
खुल तदा लभते भुवि मानवः ।।

परिणाम — लग्न में क्षीण चंद्रमा सूर्य के साथ हो तो बहुत ही रोग से आदमी पीड़ित होता है।

उपाय — लग्नेश + माती + माणिक के संयुक्त रत्न 'बीसा यंत्र' में धारण करें।

10. पांडु रोग

निष्पत्ति — **यदि भवंति हि कार्श्यतनुर्भवेत्**
तनुगता रविराहुकुजार्कजाः ।

रुधिर पांडुपराः परतापदाः

शुभतमागददानकरा विदुः ।।

परिणाम — लग्न में सूर्य, मंगल और शनिश्चर यह शुभ ग्रह के साथ होते हुए भी रक्त विकार पांडुरोग की बीमारी होती है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्न 'बीसा यंत्र' में धारण करें।

2. रविवार के दिन सूर्य को अर्ध्य दें।

11. रोगग्रस्त योग

निष्पत्ति — **देहाधीशः सपापो व्ययरिपु**

मूर्तिगश्चेत्तदा देहसौख्यं

नश्याज्जंतोर्निजर्क्षे व्ययरिपु

मृतपस्तत्फलस्यैव कर्ता ।।

परिणाम — लग्न का स्वामी क्रूर ग्रह से युक्त 6/8/12 स्थान में हो तो रोगी होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

12. दुर्मुख योग

निष्पत्ति — यदि दूसरे भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो और उसका अधिपति बुरे ग्रहों से युक्त हो या नीच राशि में हो तो यह योग बनता है।

परिणाम — जातक कुरूप या घिनौने चेहरे वाला होगा और वह क्रोधित तथा चिड़चिड़ा होगा।

13. दुर्मुख योग

निष्पत्ति — यदि द्वितीयेश अशुभ ग्रह हो और गुलिक से युक्त हो या शत्रु राशि में स्थित हो और नवांश में अशुभ ग्रह के साथ नीच का हो तो यह योग बनता है।

परिणाम — जातक कुरूप या घिनौने चेहरे वाला होगा और वह क्रोधित तथा चिड़चिड़ा होगा।

14. नेत्रनाश योग

निष्पत्ति —

यदि 10वें और छठे भावों के अधिपति द्वितीयेश के साथ लग्न में स्थित हों या यदि वे नीचांश में हों तो नेत्रनाश योग बनता है।

परिणाम — जातक शासकों की अप्रसन्नता के कारण दृष्टि खो देता है।

15. चश्मा योग

निष्पत्ति — **चन्द्रो बुधस्तथा सूर्यः शनिश्चान्ते यदा भवेत् ।**
मध्यस्थाने यदा भौमो हीनदृष्टिस्तदा भवेत् ।।

—मानसागरी अ० 34/85, पृ०.273

परिणाम — चंद्रमा, बुध, सूर्य और शनि द्वादश भाव में हो और मंगल केंद्र में हो तो बालक कम देखता है।

उपाय — नेत्रोपनिषद् का नित्य पाठ करें। चश्मा पहनें।

16. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **षष्ठेशेवक्रर्क्षऽगेक्षिरोगी ।।** *—जातकतत्वम् 3/220*

परिणाम — षष्ठेश यदि किसी वक्रगति ग्रह की राशि में स्थित हो।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

17. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **ज्ञारर्क्षे लग्नपे ज्ञारदृष्टेऽक्षिरोगी ।।** —*जातकतत्वम् 3/221*

परिणाम — लग्नेश, यदि बुध (3-6) या मंगल (1-8) की राशि में स्थित हो।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

18. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **रन्ध्रांमेशी पष्ठे सव्यनेत्रे रोगः ।।** —*जातकतत्वम् 3/222*

परिणाम — अष्टमेश व लग्नेश षष्ठ स्थान में हो तो बायीं आंख में विकार होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

19. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **षष्ठेऽष्टमेशुक्रे दक्षिणनेत्रेरोगः ।।** —*जातकतत्वम् 3/223*

परिणाम — शुक्र षष्ठ या अष्टम स्थान में हो तो दायें नेत्र में रोग होता है

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

20. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **मन्दारगलिकयुते नेत्रेशे नेत्ररोगः ।।**—*जातकतत्वम् 3/224*

परिणाम — शनि, मंगल व गुलिक से युक्त यदि द्वितीयेश व द्वादशेश हो तो नेत्र रोग होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं मंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

21. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **धनेशे शुभक्षिते लग्नेशे पापयुते ससेमनेत्र ।।** *जातकतत्वम् 3/225*

परिणाम — धनेश पर ग्रहों की दृष्टि हो तथा लग्नेश पापदृष्ट हो तो नेत्र रोग होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

22. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **नेत्रे पापायमदृष्टा नेत्र रोगहतं भवेत् ।।** *जातकतत्वम् 3/226*

23. अथवा

शन्यारयोगे गुलिकेन युक्ते नेत्रेशवरे तत्र तु नेत्ररोगः ।।

नेत्रे यदा पापबहुत्वयोगे यमेन दृष्टे सति रुग्णनेत्र ।।

—सर्वार्थ चिंतामणि अ० 3/226, पृ० 181

परिणाम — नेत्र स्थान में पापग्रह शनि से दृष्ट हो तो रोग से आँख नष्ट होती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

24. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **नेत्रेशाशे पापर्क्षे रोगहत नेत्रः ।।** *—जातकतत्वम् 3/227*

परिणाम — द्वितीयेश व द्वादशेश की नवांश राशि का स्वामी किसी पाप ग्रह की राशि में हो तो नेत्र रोग होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

25. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **लग्ने भौमे शयने नयने गदः ।।** *—जातकतत्वम् 3/228*

26. अथवा

नीचेऽब्जे चांत्यद्विषोः क्रूरदृष्टे भूमिपुत्रेऽभ्युद्यतेऽर्कास्तगे च ।
केंद्रेऽकेंद्वोरंधभागेऽम्बुराशौ नीचे मंदे चाशुगेर्कोपरागे ॥

—बृहद्योगरत्नाकर पृ० 189

परिणाम — लग्न में मंगल शयनावस्था में हो तो नेत्र रोगी होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

27. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **लग्नाष्टमे शुक्रे क्रूरदृष्टेऽश्रुपातान्नेत्रपीडा ।।** *जातकतत्वम् 3/229*

परिणाम — लग्न से अष्टम में शुक्र क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो आँसू बहने या आँख से पानी बहने से नेत्र रोग होता है।

उपाय —

ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

28. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **स्वेशशुक्रयोग नेत्ररोगी ।।** —*जातकतत्वम् 3/230*

परिणाम — द्वितीयेश और शुक्र यदि एकत्र हो तो नेत्र रोग होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

29. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **शुक्रात् त्रिके नेत्रेशे नेत्ररोगी ।।** —*जातकतत्वम् 3/231*

परिणाम — शुक्र से त्रिक (6,8,12) स्थानों में द्वितीयेश व द्वादशेश हों तो नेत्र रोग होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

30. नेत्ररोग योग

निष्पत्ति — **त्रिकोणे सूर्ये पापदृष्टे निस्तेजो नेत्रः ।।** —*जातकतत्वम् 3/232*

परिणाम — त्रिकोण (6,8,12) स्थानों में पापग्रहों से दृष्ट सूर्य स्थित हो तो नेत्र रोग होता है, उसे कम दिखाई देता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

31. नेत्रघात योग

निष्पत्ति — **भौमेऽन्त्ये वामनेत्रे घातः ।।** —*जातकतत्वम् 3/258*

परिणाम — मंगल द्वादश स्थान में हो तो बाएं नेत्र में, शनि द्वितीय स्थान में हो तो दाएं नेत्र में चोट लगती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

32. नेत्रघात योग

निष्पत्ति — **मन्देऽर्थे दक्षनेत्रघातः ।।** *—जातकतत्वम् 3/259*

परिणाम — मंगल द्वादश स्थान में हो तो बाएं नेत्र में, शनि द्वितीय स्थान में हो तो दाएं नेत्र में चोट लगती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

33. नेत्रघात योग

निष्पत्ति — **लग्नेधनारिकर्मेशाः शुक्रयुता नृपकोपान्नेत्रोत्पाटनम् ।।**

—जातकतत्वम् 3/260

परिणाम — लग्न में द्वितीय, षष्ठ व दशम स्थानों के स्वामी शुक्र से युत हों तो नेत्रधात का योग बनता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

34. नेत्रघात योग

निष्पत्ति — **अच्छाक्षिमौ नीचांशगौ पापयुतौ नृपकोपान्नेत्रोत्पाटनम् ।।**

—जातकतत्वम् 3/261

परिणाम — शुक्र, द्वितीयेश व द्वादशेश, नीच नवांश में पायुत हों तो नेत्रधात का योग बनता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

35. नेत्रघात योग

निषत्ति — **राजारिनाथांशेषौ त्रिके लग्नेशयुतौ नृपकोपान्नेत्रोत्पाटनम् ।।।**

—जातकतत्वम् 3/262

परिणाम — दशम व षष्ठ स्थानों में पड़ने वाले नवांश के स्वामी त्रिक स्थानों में लग्नेश से युत हों।

उपाय —

ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

36. नेत्रदोष योग

निष्पत्ति — **शुक्राक्षिपौ षष्ठगौ शुभैनंदृष्टौ नेत्रप्रमादः ।।** *जातकतत्वम्*

3/263

परिणाम — **शुक्र व नेत्रेश, षष्ठ स्थान में शुभग्रहों की दृष्टि से रहित हों तो मनुष्य की दृष्टि में दोष होता है।**

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

37. काण योग

निष्पत्ति — **व्ययस्थानस्थिते चंद्रे वामचक्षुर्विनश्यति ।**

यदा सूर्यो द्वितीयस्थस्तदा ह्यन्धं समादिशेत् ।।

— मानसागरी अ० 4/76, पृ० 272

परिणाम —

लग्न से व्यय (12) में चंद्रमा हो तब वह मनुष्य वाम नेत्र से काना होता है और उसी योग में सूर्य हो तो वह मनुष्य अंधा होता है।

38. काण योग

निष्पत्ति — **होरायां द्वादशे राशौ, स्थितो यदि दिवाकरः ।**
करोति दक्षिणे काणं, वामनेत्रे च चंद्रमाः ।।

— मानसागरी अ० 4/78, पृ० 272

परिणाम — लग्न से 12वें स्थान में सूर्य स्थित हो तो मनुष्य दाहिने नेत्र से काना होता है और जो चंद्रमा 12वें में हो तो वाम नेत्र से काना होता है।

39. काण योग

निष्पत्ति — **सिंहे चन्द्रेऽस्ते भौमदृष्टे काणः ।।** *—जातकतत्वम् 3/265*

परिणाम — सिंह राशि में सप्तम स्थान में चद्रंमा मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति एक आंख से काणा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

40. काण योग

निष्पत्ति — **कर्केऽके सप्तमे भौमदृष्टे काणः ।।**— *जातकतत्वम् 3/266*

परिणाम — मकर लग्न में कर्क का सूर्य सप्तम स्थान में मंगल से दृष्ट हो तो मनुष्य एक आँख वाला अर्थात् काना होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

41. काण योग

निष्पत्ति — **चन्द्राच्छावन्त्ये वा द्यूने वामाक्षणाः काणः ।।**

— *जातकतत्वम् 3/267*

परिणाम — व्यय व षष्ठ स्थान में चंद्रमा एवं सूर्य हों तो पति-पत्नी दोनों ही काने होते हैं।

उपाय —

ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए एवं सूर्य की उपासना करनी चाहिए।

42. काण योग

निष्पत्ति — **व्ययारिगौ चन्द्रार्कौ दम्पती काणौ ॥** *जातकतत्वम् 3/268*

परिणाम — व्यय व षष्ठ स्थान में चंद्रमा सूर्य हों तो पति-पत्नी दोनों ही काने होते हैं।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए एवं सूर्य की उपासना करनी चाहिए।

43. काण योग

निष्पत्ति — **धनगता रविराहुशनैश्चरा धनपतिर्यदि चास्तमुपागतः ।**

खलयुतो धनपस्यति तत्पदं भवति चात्र नरो भुवि काणकः ।

—होरा रत्न

परिणाम — धनेश धनस्थान में अस्तगत और सूर्य, राहु, शनि ये ग्रह धनस्थान में हों तो व्यक्ति काणा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

44. काण योग

निष्पत्ति — **व्ययगृहं रविराहुसमायुतं व्ययपतिर्यदि चास्तमुपागतः ।**

अथयुतं शनिनाकुजेन वा भवति चात्र नरो भुवि काणकः ।।

— ज्योतिष शास्त्र संग्रह

परिणाम — **व्ययस्थान में सूर्य, राहु, अथवा व्ययेश व्ययस्थान में अस्तगत और शनि अथवा मंगल व्ययस्थान में हों तो काणा होता है।**

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र से अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

45. अंध योग

निष्पत्ति — यदि बुध और चंद्रमा दूसरे भाव में हों अथवा लग्नाधिपति और द्वितीयेश सूर्य के साथ दूसरे भाव में हों तो अंध योग बनता है।

परिणाम — रात में जातक की दृष्टि कमजोर होगी या वह जन्म से अंधा होगा।

46. अंध योग

निष्पत्ति — **सिंहलग्ने यदा जन्म शनिर्मूर्तौ यदा भवेत् ।**
चक्षुर्हीनो भवेद्बालः शुक्रे जन्मान्धको भवेत् ।।

— मानसागरी अ०4/77 पृ० 272

परिणाम — सिंह लग्न में जन्म हो उसमें शनि हो तो वह नेत्रहीन होता है। यदि शुक्र क हो तो वह मनुष्य जन्मान्धिा होता है।

47. अंध योग

निष्पत्ति — **रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षते**
नयनरहितः सौम्याऽसौम्यैः स बुद्धुदलोचनः ।
व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं रवि
र्न शुभा गदिता योगा याप्या भवन्ति शुभेक्षिताः ।।

— मानसागरी अ०4/99 पृ० 275

परिणाम — सूर्य चंद्रमा सिंह लग्न में हो और मंगल, शनि से देखता जाता हो तो जातक अंधा हो तथा सब शुभ और अशुभ ग्रह लग्न को देखें तो आँख की दृष्टि कमजोर हो,बारहवें स्थान में चंद्रमा हो तो बाएं आँख से काना होता है और सूर्य यदि बारहवें भाव में हो तो दाहिने आँख का काना होता है। शुभ ग्रह की दृष्टि से इसके फल में कुछ परिवर्तन हो जाता है।

48. अंध योग

निष्पत्ति — यदि राहु सूर्य से युक्त होकर लग्न में हो और क्रूर ग्रह त्रिकोण में हो तो अंध योग बनता है।

परिणाम — जातक जन्म से अंधा होगा।

49. अंध योग

निष्पत्ति — **लग्नेशे सार्कशुक्रे त्रिके जन्मान्धः ।।** *जातकतत्वम् 3/233*

परिणाम — लग्नेश यदि सूर्य के साथ त्रिक स्थानों में हो तो मनुष्य जन्मांध होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

50. अंध योग

निष्पत्ति — मंगल, चंद्रमा शनि और सूर्य क्रमशः 2,6,12, और 8 में हों।

परिणाम — जातक जन्म से अंधा होगा।

उपाय — सूर्य की विशेष उपासना करें।

51. अंध योग

निष्पत्ति — **सूर्य राहुग्रस्तेऽङ्गे मन्दारौ त्रिकोणे जन्मान्धः ।।**

—जातकतत्वम् 3/234

परिणाम — सूर्य यदि राहु से ग्रस्त होकर लग्न में हो तथा शनि व मंगल त्रिकोण में हों तो भी जन्मांध होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

52. अंध योग

निष्पत्ति — **त्रिके चन्द्रारयोगे पातादन्धः ।।** *— जताकतत्वम् 3/235*

परिणाम — चंद्रमा व मंगल त्रिक स्थान में हो तो गिरने से आँखे नष्ट होती हैं।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

53. अंध योग

निष्पत्ति — **सेज्येन्दौ त्रिके सेकादन्धः ।।**

— जातकतत्वम् 3/236

परिणाम — बृहस्पति व चंद्रमा त्रिक में हों तो गर्मी से आँखे नष्ट होती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

54. अंध योग

निष्पत्ति — **चन्द्राच्छौ त्रिके कामान्धः ।।** *— जातकतत्वम् 3/237*

परिणाम — चंद्रमा व शुक्र त्रिक (6, 8,12) में हों तो कामातुरता से अंधापन होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए। एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

55. अंध योग

निष्पत्ति — **नेत्रांगेशौ भान्वच्छयुतौ त्रिके जन्मान्धः ।।** *— जातकतत्वम्*

3/238

परिणाम — लग्नेश व नेत्रेश सूर्य व शुक्र से युत होकर त्रिक (6, 8, 12) हों तो जन्मांध होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

56. अंध योग

निष्पत्ति — **ज्ञेन्दू त्रिके शास्त्रान्धः ।।** *— जातकतत्वम्*

3/239

परिणाम — बुध व चंद्रमा त्रिक में हों तो शास्त्र में अतिविश्वास के कारण अथवा अधिक स्वाध्याय के कारण व्यक्ति अंधा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

57. अंध योग

निष्पत्ति — **इन्द्वर्कौ सोत्थे वा केन्द्रेऽन्धः ।।** — *जातकतत्वम् 3/240*

परिणाम — सूर्य चंद्रमा तृतीय स्थान में या केंद्र में हों तो अंधा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

58. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **पापर्क्षे, भौमे केन्द्रेऽन्धः ।।** — *जातकतत्वम् 3/241*

परिणाम — मंगल पापग्रह की राशि में केंद्रगत हो तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — 1. ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

2. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

59. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **यमर्क्षेऽस्ते सूर्येऽन्धः ।।** — *जातकतत्वम् 3/242*

60. अथवा

चंद्रादित्यौ विक्रमे केंद्रमे केंद्रगौ वा भौमे केंद्रे चेंदुसौम्यर्क्षगे वा ।

क्रूरैर्दृष्टे रंध्रषष्ठांत्यगाः स्युः सौम्याः सूर्यैस्ते यमर्क्षे तदांधः ।।

—बृहद्योगरत्नाकर पृ० 182

परिणाम — शनि की राशि में सूर्य सप्तम स्थान में हो तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

61. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **सौम्यास्त्रिके क्रूरैर्दृष्टा अन्धः ॥** —*जातकतत्त्वम् 3/243*

परिणाम — शुभ ग्रह त्रिक (6, 8, 12) स्थानों में क्रूरदृष्ट हों तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — 1. ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

2. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

62. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **कुजेऽंगे कुम्भेऽन्धः ॥** — *जातकतत्त्वम् 3/244*

परिणाम — कुंभ लग्न में मंगल हो तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

63. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **सुताम्बुगौ पापौ अन्धः ।।** —*जातकतत्वम्* *3/245*

परिणाम — चतुर्थ व पंचम स्थान में दो पापग्रह हों तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

64. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **शुक्रंगेशयुतौ स्वान्त्येशौ त्रिकस्थावन्धः ।।** —*जातकतत्वम्* *3/246*

परिणाम — शुक्र व लग्नेश के साथ द्वितीय द्वादशेश त्रिक स्थानों में हो तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

65. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **शुक्रपापाभ्यां युक्तश्चेन्दुर्धऽनेन्धः ।।**– *जातकतत्वम् 3/247*

परिणाम — चंद्रमा, शुक्र व पापग्रहों से युत द्वितीय स्थान में हो तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

66. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **चन्द्रार्कौ व्यये शुभद्रग्घीनौ अन्धः ।।**– *जातकतत्वम् 3/248*

परिणाम — सूर्य व चंद्रमा व्यय स्थान में शुभ दृष्टि रहित हों तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

67. अंध योग

निष्पत्ति — **सिंहेऽर्केजेऽगे वा शुक्रेऽन्धः ।।** — *जातकतत्वम् 3/249*

परिणाम — सिंह में शनि या शुक्र लग्न में हो तो जातक अंधा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

68. अंध योग

निष्पत्ति — **यमेन्द्वर्काः क्रमादन्त्यार्थाष्टमगा नेत्रहीनः ।।** *जातकतत्वम् 3/250*

परिणाम — शनि, चंद्रमा व सूर्य क्रमशः द्वादश, द्वितीय व अष्टम में हों तो जातक अंधा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

69. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **षष्ठान्त्यधनस्थाश्चन्द्रार्कारयमाबलिग्रहदोषजा नेत्रहीनता ।।**

— जातकतत्वम् 3/251

परिणाम — षष्ठ, अष्टम, द्वादश व धन स्थान में चंद्रमा, सूर्य, मंगल व शनि हों तो इन में से बलवान ग्रह के दोष के कारण आँखें चली जाती हैं। अर्थात् बली ग्रह के वात, पित्त, कफादि दोषों से उक्त फल होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

70. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **लग्नाच्छुक्राद्वा सुते राहुः सूर्यदृष्टश्चेन्नेत्रनाशः ।।** *— जातकतत्वम् 3/252*

परिणाम — लग्न या शुक्र से पंचम स्थान में राहु सूर्य से दृष्ट हो तो अंधे होने की सम्भावना रहती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

71. अंध योग की सम्भावना

निष्पत्ति — **मन्दे तुर्ये पापै दृष्टे नष्टदृष्टिः ।।** — *जातकतत्वम् 3/253*

परिणाम — चतुर्थ में शनि पापदृष्ट हो तो जातक की धीरे-धीरे दृष्टि नष्ट होती है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

72. निशांध योग

निष्पत्ति — **सेन्दु शुक्रस्त्रिकस्थो निशान्धः ।।** — *जातकतत्वम् 3/254*

73. अथवा

शुक्रः सेंदुस्त्रिकस्थो जनुषि निशि नरः प्रामुयादंधकत्वं ।
जन्मांधः सार्कशुक्रस्तनुभवनपतिः स्यात्तदानीं मनुष्यः ।।

— बृहद् योगरत्नाकर पृ० 202

परिणाम — चंद्रमा व शुक्र त्रिक (6, 8, 12) में हों तो जातक रात्रि में अंधा हो जाता है पर दिन को उसे दिखाई पड़ता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

74. निशांध योग

निष्पत्ति — **शुक्रेन्दुयुते नेत्रेशेऽंगे निशान्धो न तु स्वोच्चशुभैर्युते ।।**

— जातकतत्वम् 3/255

75. अथवा

निशि तदांध उतार्कसिकतान्वितस्तनु पतिर्जननांधकरस्तदा ।

पितृनुजमातृकुटुंबिनीपतय एवमिताहि तथा फलाः ।।

— जातक संग्रह

परिणाम — शुक्र, चंद्रमा व लग्नेश लग्न में हो तो निशांध योग बनता है परन्तु यदि शुक्र, चंद्रमा अथवा लग्नेश स्वोच्च में शुभयुत हों तो निशांध योग नहीं होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

76. अक्षिनाशः योग

निष्पत्ति — **लग्नार्थेशौत्रिकेऽक्षिनाशः ।।** *— जातकतत्वम् 3/256*

परिणाम — लग्नेश व द्वितीयेश त्रिक (6, 8, 12) में हों तो आंख का नाश होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

77. नेत्रनाशः योग

निष्पत्ति — **चन्द्रार्कौसिंहेऽगे शन्यारदृष्टे नेत्रनाशः ।।** *जातकतत्वम् 3/257*

78. अथवा

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते

नयनरहितः सौम्यौः खेटैः सबुद्लोचनः ।

व्ययगृहतशचंद्रो वा महिजस्त्वपरं रवि

र्नशुभा गदिता योगा भवन्ति शुभेक्षिताः ।। *मानसागरी*

परिणाम — सूर्य व चंद्रमा लग्न में सिंह राशिगत, शनि व मंगल से दृष्ट हों तो आँखें जाती रहती हैं।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

79. निशांध योग

निष्पत्ति — **शुक्रेंदुनयनाधीशौरेकस्थैस्तु निशांधकः ।।**

सूर्यशुक्रविलग्नेशै रदृध्यैर्मयलोचनः ।। —*जातक पारिजात*

परिणाम — शुक्र, चंद्रमा और धनेश लग्न में हो तो रात्रि में अंधा होता है। और सूर्य, शुक्र तथा लग्नेश (अदृश्य गुणधर्म) में हो तो नेत्र कमजोर होते है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

80. निशांध योग

निष्पत्ति — **तत्रस्थितौ चंद्ररवी निशांध्यं ।**

जात्यंधतां नेत्रपदेहपार्काः ।।

पैत्रर्क्षनाथेन युतास्तदांध्यं ।

कुर्वन्ति मात्रादिफलं तये दृक् ।।

—*बृहद् पाराशत होरा शास्त्र*

परिणाम —

द्वितीय, द्वादश स्थान में सूर्य, चंद्रमा हो तो जातक रात्रि में अंधा होता है तथा द्वितीय, द्वादश स्थान में लग्नस्वामी सूर्य और दशम का स्वामी हो तो अंधा होता है।

उपाय — ऐसे जातक को नित्य 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करना चाहिए एवं यंत्र द्वारा अभिमंत्रित जल से नेत्रों को धोना चाहिए।

81. मूक योग

निष्पत्ति — द्वितीयेश को बृहस्पति के साथ आठवें भाव में स्थित होना चाहिए।

परिणाम — जातक गूंगा होता है।

उपाय — मूकता नाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

82. मूक योग

निष्पत्ति — **ज्ञारिशौ लग्नगौ मूकः ।।** — *जातकतत्व 3/284*

परिणाम — बुध और छठे स्थान का स्वामी ये दोनों लग्न में होवें तो मूक होता है।

उपाय — मूकता नाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

83. मूक योग

निष्पत्ति — **जीवारीशांवगे मूकः ।।** — *जातकतत्व 3/285*

परिणाम — बृहस्पति और छठे स्थान का स्वामी लग्न में होवे तो गूंगा होता है।

उपाय — मूकता नाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

84. मूक योग

निष्पत्ति — **धनेशे ज्यौत्रिके मूकः ।।** — *जातकतत्व 3/286*

परिणाम — धनेश और बृहस्पति ये दोनों 6/8/12 स्थान में होवें तो जातक मूक (गूंगा) होता है।

उपाय — मूकता नाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

85. गुंग स्वर योग

निष्पत्ति — **कर्कालिझषझे चन्द्र दृष्टे सुखे सूर्ये षष्ठभे पापदृष्टे गुंगस्वरः ।**

— *जातकतत्व 3/287*

परिणाम — कर्क, वृश्चिक तथा मीन इन निःशब्द राशि में गए हुए बुध को चंद्रमा देखता हो तथा सूर्य चतुर्थ में एवं षष्ठम भाव पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति गुंग स्वर से बोलता है। अर्थात् मुख के साथ-साथ नाक से भी बोलता है। फलतः ऐसी अस्पष्ट वाणी समझ में नहीं आती। इसे गुंग स्वर भी कहते हैं।

उपाय — मूकता नाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

86. मूक योग

निष्पत्ति — **अवाग्गवींदावशुभैर्भसंधिगैः**

शुभक्षिते चेत् कुरूते गिरं चिरात् ।।– *जातक पारिजात*

परिणाम —

चंद्रमा वृषभ राशि में हो और पापग्रह राशि संधि में हो तो जातक मूक गूंगा होता है यदि चंद्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो जातक देरी से बोलता है।

उपाय — मूकता नाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

87. मूक योग

निष्पत्ति — **संधौ पापे शशिनि तु जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टः ।।** *पारिजात*

परिणाम — चंद्रमा के साथ पापग्रह राशि संधि में हो और शुभग्रह की दृष्टि न हो तो जातक जड़ बधिर, मूक होता है।

उपाय — मूकतानाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

88. मूक योग

निष्पत्ति — **वागीशवाक्ग्रहाधीशौ षडादि त्रयसंस्थितौ ।**
मूकतां कुरूतोप्येवं पितृमातृगृहाधिपा ।। *बृहद् पारिजात*

परिणाम — बृहस्पति जिस स्थान में हो उसी का मालिक 6/8/12 स्थान में हो अगर पिता माता स्थान के स्वामी 6/8/12 स्थान में हो तो व्यक्ति मूक (गूंगा) होता है।

उपाय — मूकतानाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

89. मूक योग

निष्पत्ति — **द्वितीयेश एवं अष्टमेश की युति हो**

90. अथवा

द्वितीयेश पाप पीड़ित हो तथा अष्टमेश उसको देखता हो।

परिणाम — ऐसा जातक गूंगा होता है।

उपाय — मूकतानाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

91. हकलाहट योग

निष्पत्ति — **कर्कालिझषे ज्ञे सूर्याधस्थ चन्द्र दृष्टे मूकः ।।**

अथवा

निष्पत्ति — **शुक्लेन्द्वारावंगे गुंगस्वरः ।।** *—जातकतत्वम् अ० 3/283-288*

परिणाम —

कर्क, वृश्चिक, मीन में निशब्द राशियां कही गई। इन लग्नों में बुध कहीं भी हो, तथा क्षीण चंद्रमा उसे देखे तो जातक अटक-अटक कर हकलाहट के साथ बोलता है।

अथवा

परिणाम — शुक्लपक्ष का चंद्रमा एवं मंगल लग्न में हो तो व्यक्ति गुंगस्वर वाला होता है अटककर बोलता है।

उपाय — मूकतानाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

92. तुतलाहट योग

निष्पत्ति — **धनस्थिते क्रूरयुते सितेस्यात् ।**

काणो अथवा अक्षणा विकृतः स्खलद्गीः *सागाधि*

परिणाम — कोई भी लग्न हो परंतु शुक्र यदि द्वितीय भाव में क्रूरग्रह से युक्त हो, तो व्यक्ति काणा, नेत्र विकार युक्त अथवा तोतला तुतला-तुतलाकर बोलने वाला होता है।

उपाय — मूकतानाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

93. सभा मध्ये मूकत्व

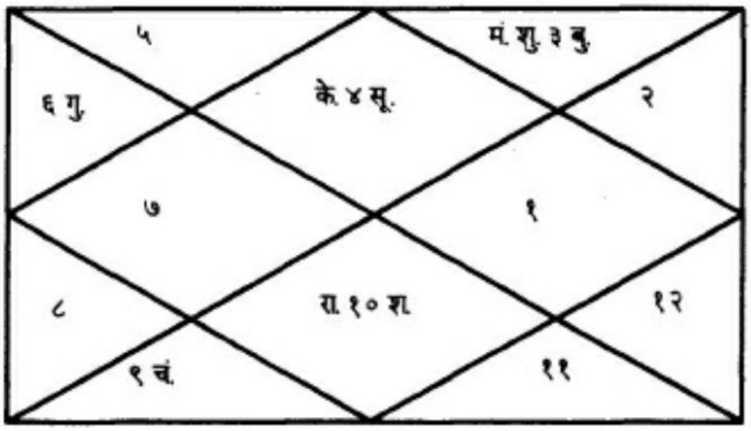
निष्पत्ति — **तुर्य्येशे अंगे अस्ते पंडितोऽपि सभा मूकः ।।** *…तत्वम् 5/74*

परिणाम — चतुर्थेश लग्न में हो या सप्तम में हो तो पांडित्य प्रतिभा होते हुए भी सभा में सामने बैठे मनुष्यों के बीच जातक मूक जैसा हो जाता है और बाद में पछताता है कि मुझे ऐसा-ऐसा बोलना चाहिए था। इस प्रकार से कहना चाहिए था, वगैरा-वगैरा।

उपाय — 1. मूकतानाशक वाचस्पति प्रयोग करावें।

2. धारणा सरस्वती स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

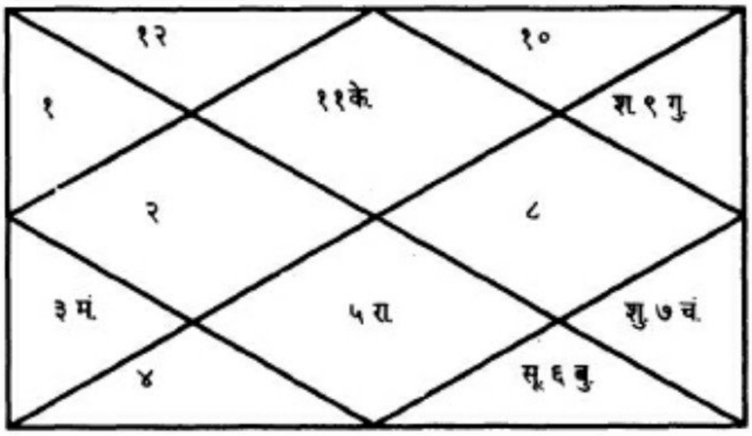
मूक योग पर उदाहरण कुण्डलियां



श्री जसराज अन्याव— जन्मः 24.7.1934; समयः 3/10; स्थानः बलोतरा

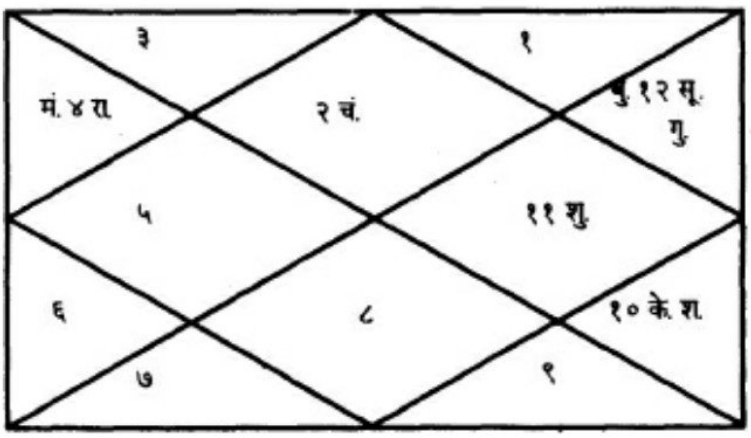
प्रस्तुत जातक जन्म से मूक (गूंगा) है। आप देखेंगे कि इस कुंडली में वाणी का अधिपति सूर्य पापपीड़ित है। वाणीकारक बुध व्यय भाव में है तथा कमजोर चंद्रमा बुध को देख रहा है। फलतः जातक करोड़पति होते हुए भी गूंगा है। जीवन में सभी प्रकार के इलाज कराने पर भी मूकत्व दूर नहीं हुआ। जातकतत्व के सभी सूत्र इस कुंडलि पर सही रूप से घटित हो रहे हैं। जो कि ज्योतिष शास्त्र की प्रमाणिकता को स्पष्टतः उजागर कर रहे हैं। इस जातक के दो पुत्र, दो कन्याएं हैं। जिसमें से एक पुत्र, एक कन्या मूक है बाकी दो सही हैं। ज्योतिष प्रेमियों के हितार्थ मेरे व्यक्तिगत गोपनीय संकलन में से ये दोनों कुंडलियां भी अध्ययन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं। जो इस प्रकार हैं।

इस कुंडली में वाणी (द्वितीय भाव) का अधिपति बृहस्पति पापग्रस्त है। वाणी का कारक बुध आठवें है।



श्री रोशन अन्याव— जन्मः 23.9.1960; समयः 17.50; स्थानः बालोतरा

खड्डे में गिरा हुआ अष्टमेश व सप्तमेश सूर्य (पापग्रह) पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान (वाणी भाव) को देख रहे हैं। फलतः जातक गूंगा (मूक) है। धन स्थान का स्वामी गुरु स्वगृही होकर लाभ में, उत्तम दृष्टियों वाला है। सो जातक को धन की कमी नहीं है।



श्रीमती निर्मला जैन— जन्मः 30.3.1963; समयः 9.48; स्थानः वालोतरा

प्रस्तुत कुंडली में द्वितीयेश एवं अष्टमेश की युति लाभ स्थान में है। अतः यह महिला भी जन्म से मूक (गूंगी) है। साथ ही वाणी का अधिपति बुध नीच राशिगत भी है। ज्योतिष विद्यार्थियों के लिए मूक योग का यह अनुपम उदाहरण है। जातक पारिजात का श्लोक भी काफी अंशों तक इस कुंडली में फलित हो रहा है। द्वितीयेश की बृहस्पति से युति होने पर जातक मूक होता है। यह बात भी यहां लागू हो रही है।

94. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — यदि राहु छठे भाव में हो, लग्न से केंद्र में मांदि हो और लग्नाधिपति अष्टम में हो तो यह योग बनता है।

परिणाम — जातक क्षयरोग से पीड़ित होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

95. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **चन्द्रक्षेत्रे यदा चान्द्रिर्जायते यस्य जन्मति ।**

स जातः क्षयरोगी स्यात् कुष्ठादिभिरूपद्रुतः ॥

—मानसागरी अ० 4/58, पृ० 269

परिणाम —

चंद्रमा के घर में यदि बुध हो तो वह क्षय रोग से और कुष्ठ के उपद्रव से युक्त होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

96. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **शुक्रांगेशोत्रिके क्षयरोगी।** — *जातकतत्व*

परिणाम — शुक्र और लग्न स्वामी 6/8/12 स्थान में हो तो क्षयरोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

97. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **अंशात्तुर्यात्यगौक्रमात्कुजराहू क्षयरोगी।** *जातकतत्व*

परिणाम — कारकांश लग्न से चौथे स्थान में मंगल और बारहवें स्थान में राहु हो तो क्षयरोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

98. श्वासक्षय योग

निष्पत्ति — **भौमार्क्यदृष्टे लग्ने श्वासक्षयादि ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — मंगल और शनैश्चर लग्न को देखते हों तो श्वासक्षयादि रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

99. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **सिंहे वा कर्के चंद्रार्कौ क्षयी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — सिंह राशि में अथवा कर्क राशि में सूर्य और चंद्रमा का योग हो तो क्षयरोगी होवे।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

100. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **कर्केज्ञे क्षयी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — कर्क राशि में बुध गया हो तो क्षय रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

101. श्वासक्षय रोग योग

निष्पत्ति — **पापमध्यगते चंद्रे सप्तमे मंद संयुते**

श्वासक्षयप्ली हगुल्मविद्राधिं भजते नरः ।

— *सर्वार्थ चिंतामणि*

परिणाम — पापग्रह के मध्य में चंद्रमा हो और सप्तम स्थान में शनैश्चर हो तो श्वास क्षय प्लीहा गुल्म विद्रधी रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

102. क्षयरोग व मृत्युयोग

निष्पत्ति — **जलराशिगते चंद्रे चाष्टमस्थेऽथवा गुरौ ।**

पापग्रहेण संदृष्टे क्षयरोगान्मृतिं वदेत् । *जातक पारिजात*

परिणाम — जलराशि में 4/10/11/12 स्थान में चंद्रमा हो तथा बृहस्पति अष्टम स्थान में हो और पापग्रह देखते हों तो क्षयरोग से मृत्यु होती है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

103. प्रमेह रोग से मृत्यु योग

निष्पत्ति — **अष्टमस्थानगे शुक्रे पापग्रहनिरीक्षिते**

वातरोगात्क्षयाद्वापि प्रमेहाद्वामृतिं वदेत् । *जातक पारिजात*

परिणाम — अष्टम स्थान में शुक्र हो, और उसे पापग्रह देखते हो तो वातरोग, क्षयरोग अगर प्रमेह रोग से मृत्यु होती है। ऐसे व्यक्ति को डाईबीटिज होती है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

104. श्वासक्षय मृत्यु योग

निष्पत्ति — **पापांतरेऽब्जे तपने मृगस्थे**

यद्वार्कसूनौ मदनालयस्थे ।

श्वासक्षयप्लीहकगुल्म रोगैः

प्रपीडितो विद्रधि वा मनुष्यः ।। —*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — चंद्रमा शनैश्चर मंगल के बीच में स्थित हो, मकर में सूर्य हो और सप्तम में शनैश्चर हो, तो श्वासक्षयी, प्लीहा, विद्रधी, गुल्म रोग से मरण आता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

105. शरीरकृश क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **सूनौमिथः क्षेत्रगतौ रवींदू**

परस्परांशपगतौं च यद्वा ।

शोषक्ष्यंतौ कुरूतौ नराणा

मेकैकगेहोपगते तथैव ।। —*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — सूर्य और चंद्रमा परस्पर राशि में हों और सूर्य के स्थान में या नवांश में चंद्रमा तथा चंद्रमा के स्थान में या नवांश में सूर्य हो तो कम ताकत रहकर क्षय रोग होता है। 2. कर्क या सिंह राशि में सूर्य या चंद्र हो तो क्षय रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

106. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **सारे विधौ लग्नपतीक्षिते वा**

विलोमबुद्धिः क्षयरोगयुक् स्यात । — *ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — मंगल सहित चंद्रमा छठे या आठवें स्थान में स्थित हो और लग्न स्वामी देखता हो तो उलटी बुद्धिवाला क्षयरोग से पीड़ित होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

107. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **लाभस्थितेऽर्के रविजसुतस्थे**

क्रूरेऽष्टमस्थे क्षयपीडितः स्यात् । —*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — ग्यारहवें स्थान में सूर्य और पंचम में शनैश्चर तथा अष्टम में पापग्रह हो तो क्षयरोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

108. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **सूर्ये तनुस्थे चतुरस्रगे वा ।**

खस्थौयमारौ क्षयपीडितः स्यात् ।—*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — लग्न, चौथे, आठवें इसमें से कोई भी स्थान में सूर्य हो और दशम स्थान शनैश्चर या मंगल होवे तो क्षयरोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

109. क्षयरोग योग

निष्पत्ति — **अन्योन्यक्षत्रगौस्यातामथवा तत्र चंद्रगौ**

चंद्रार्कौ चेत्तदाजातः क्षयरोगी भवेन्नर*होरा रत्न*

परिणाम — अन्योन्य स्थान में परस्पर सूर्य चंद्रमा हो अथवा सूर्य चंद्रमा के स्थान में चंद्रमा राहु हो अथवा सूर्य + चंद्रमा दोनों कर्क या सिंह राशि में हो तो क्षयरोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

110. श्वास गुल्म क्षयरोग

निष्पत्ति — **पापयोर्मध्यगे चंद्रे रवौ मकरराशिगे**

श्वासगुल्मक्षयप्लीहैराधिव्याधिप्रपीडितः *होरा रत्न*

परिणाम — पापग्रह के मध्य में चंद्रमा हो और सूर्य मकर राशि में होवे तो (श्वासगुल्म) क्षयरोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र धारण करें।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

111. बंधन योग

निष्पत्ति — यदि लग्नाधिपति और षष्ठेश केंद्र या त्रिकोण में शनि, राहु या केतु से युक्त हो तो यह योग बनता है।

परिणाम — जातक को कारावास होगा।

112. मतिभ्रम योग

निष्पत्ति — लग्न और सातवें भावों में क्रमशः बृहस्पति और मंगल को स्थित होना चाहिए।

परिणाम — जातक मति भ्रम होकर पागल हो जाता है।

113. मतिभ्रम योग

निष्पत्ति — लग्न में शनि और 9, 5 या 7 वें भाव से मंगल का संबंध होना चाहिए।

परिणाम — जातक धीरे-धीरे मतिभ्रम होकर पागल हो जाता है।

114. मतिभ्रम योग

निष्पत्ति — लग्न में शनि और 9, 5 या 7 वें भाव से मंगल का संबंध होना चाहिए।

परिणाम — जातक धीरे-धीरे मतिभ्रम होकर पागल हो जाता है।

115. मतिभ्रम योग

निष्पत्ति — 12वें भाव में शनि और क्षीण चंद्रमा को युक्त होना चाहिए।

परिणाम — जातक धीरे-धीरे मतिभ्रम होकर पागल हो जाता है।

116. खलवत योग

निष्पत्ति — वृष और धनु लग्न दो पापग्रहों के मध्य हो और लग्न पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो यह योग बनता है।

परिणाम — जातक गंजा होगा।

उपाय — लग्नेश का रत्न सवा चार रत्ती वजन का पहनें।

117. खल्वाट योग

निष्पत्ति — **धनुषि वृषेंगे क्रूरैर्दृष्टे खल्वाटः ॥** — *जातकतत्व 3/210*

परिणाम — क्रूर ग्रहों से दृष्ट धन तथा वृषभ लग्न होवे तो जातक खल्वाट (गंजा) होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्न सवा चार रत्ती वजन का पहनें।

118. खल्वाट योग

निष्पत्ति — **कर्के चंद्रे भौमदृष्टे सिंहचापाल्यंगनालग्ने खल्वाटः ॥**

— *जातकतत्व 3/212*

परिणाम — कर्क राशि में गए हुऐं चंद्रमा को मंगल देखता हो और 5/9/8/6 राशि का लग्न होवे तो व्यक्ति खल्वाट (गंजा) होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्न सवा चार रत्ती वजन का पहनें।

119. खल्वाट योग

निष्पत्ति — **सपापे पापर्क्षगे खल्वाटः ।।** *—जातकतत्व 3/211*

परिणाम — पापग्रह की राशि का लग्न पापग्रह से युक्त होवें तो जातक खल्वाट (गंजा) होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्न सवा चार रत्ती वजन का पहनें।

120. खल्वाट योग

निष्पत्ति — **सिंहचापालिकन्यासु लग्नेकर्कटगे विधौ**

वीक्षिते वनिपुत्रेण भवेत्खल्वाटमस्तकः । *—ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — सिंह धन वृश्चिक कन्या व कर्क इनमें से कोई भी लग्न में चंद्रमा हो और मंगल देखता हो तो खल्वाट (गंजा) होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्न सवा चार रत्ती वजन का पहनें।

121. ब्लडप्रेशर योग

निष्पत्ति — **चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा ।**

रक्तपित्तेन हीनागों नानाव्याधि समन्वितः ।।

— मानसागरी अ० 4/57, पृ० 269

परिणाम — चंद्र क्षेत्र में मंगल बैठा हो तो वह मनुष्य रक्त पित्त के विकार से हीन अंगों वाला और नाना प्रकार की व्याधि से युक्त होता है।

122. मृगी योग

निष्पत्ति — **जन्मस्थाने यदा राहुः षष्ठस्थाने च चन्द्रमाः ।**
अपस्मारस्तदा रोगो बालकस्य हि जायते ।।

—मानसागरी अ० 4/43, पृ० 267

परिणाम — लग्न में राहु और छठे घर में चंद्रमा हो तो उस बालक को अपस्मार (मृगी) का रोग होता है।

123. कुष्ठरोग योग

निष्पत्ति — यदि लग्नाधिपति 4 या 12 वें भाव में मंगल और बुध के साथ स्थित हो तो कुष्ठ रोग योग बनता है।

परिणाम — जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्त्रोत का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

124. कुष्ठरोग योग

निष्पत्ति — यदि शनि और चंद्रमा से युक्त होकर बृहस्पति छठे भाव में स्थित हो तो कुष्ठ रोग योग बनता है।

परिणाम — जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

125. कुष्ठरोगी योग

निष्पत्ति — **लग्नस्थाने यदा भौमो ह्यष्टमे च दिवाकरः ।**

सौरिशचतुर्थभवने तदा कुष्ठी भवेन्नरः ।।

— मानसागरी अ० 4/74, पृ० 271

परिणाम — लग्न में मंगल, अष्टम में सूर्य तथा चौथे में शनि हो तो वह कुष्ठी होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

126. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **पापमध्यनवभागगे विधौ**

मंदभौमयुतविक्षितेऽथवा।

मेषनक्रझषकर्कटांशगे

कुष्ठवानपि भवेत्तदा नरः ।। *— ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — मेष, मकर, मीन, कर्क इन राशियों में चंद्रमा पाप ग्रहों के बीच में स्थित हो और शनैश्चर मंगल करके दृष्ट हो तो कुष्ठी होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

127. श्वेतकुष्ठ योग

निष्पत्ति — यदि मंगल और शनि दूसरे अथवा 12वें भाव में हों, चंद्रमा लग्न में हो और सूर्य 7 वें में हो तो यह योग बनता है।

परिणाम — जातक को श्वेत कुष्ठ होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

128. निःसंदेह कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **धी धर्मस्था गोकुलीरारिनक्राः**

क्रूरैः खेटैः संयुता वीक्षिता वा ।

ते वै नूनं सूतिकाले प्रकुर्युः

निःसंदिग्ध मानवं कुष्ठयुक्तम् ।। —*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — जन्म काल में नवमे, पांचवें वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर इनमें से कोई भी राशि हो और पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो मनुष्य निःसंदेह कुष्ठी होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

129. दादकंडू श्वेत कुष्ठरोग

निष्पत्ति — **लग्नाधीशे धनस्थे प्रसूतौ**

क्रूरैः खेटैः संयुते वीक्षिते वा ।

पुसां काये मंदता दद्रुकंडू

पीडा वा स्याच्छ्वेतकुष्टः शरीरे ।।

परिणाम — जन्म समय में लग्न का स्वामी अष्टम स्थान में स्थित हो और पापग्रहों के साथ हो या दृष्ट हो तो मनुष्य के शरीर में दादकंडू रोग की पीड़ा होती है अथवा श्वेत कुष्ठ होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

130. रक्त कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **जीवभौमौ तु मृत्युस्थौ शनिसौम्यौ रिपुस्थतो**
पश्यंति लग्नक्रूराश्च रक्तकुष्टी तु मानवः। *होरा रत्न*

परिणाम — अष्टम स्थान में बृहस्पत और मंगल छठे स्थान में शनैश्चर, बुध हो और लग्न को पाप ग्रह देखते हो तो रक्तकुष्ठी रोग होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

131. रक्त कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **मीनालीकर्कटसंस्थाः शनि-शुक्र-कुजेंदुवो रुधिरकुष्टी ।** — *होरा रत्न*

परिणाम — मीन वृश्चिक और कर्क राशि में शनैश्चर, शुक्र, मंगल तथा चंद्रमा हो तो रक्तकुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

132. लूत कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **क्रूराः कुलीरझषवृश्चिकराशिसंस्था**

लूतादिंक समभवत्खलु तत्र कुष्टं ।— *होरा रत्न*

परिणाम — क्रूरग्रह कर्क, मीन और वृश्चिक जलराशि में होवे तो घुटने से पैर तक कुष्ठ सहित असाध्य रोग होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

133. श्वेत कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **क्रूरयुक्ते क्षितं लग्नं लग्नात्पंचमगोथवा**

गोकर्कालिमृगाख्यश्चेद्राशिः स्यात्सितकुष्ठवान् ।

परिणाम — लग्न में अगर पांचवें स्थान में पापग्रह हो और वृषभ, कर्क, वृश्चिक तथा मकर राशि में भी पापग्रह हो तो सफेद कुष्ठ होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

134. श्वेत कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **सक्रूरौ चंद्रशुक्रौ च कर्कवृश्चिकमीनगौ**

श्वेतकुष्टी खलाढ्येंदौ खर्जूः सुखविवर्जितः

परिणाम — चंद्रमा और शुक्र पापग्रहों के साथ कर्क वृश्चिक और मीन राशि में होवे तो सफेद कुष्ठ रोग होता है। अगर चंद्रमा पापग्रह से युक्त हो तो खुजली होकर शरीर सुखहीन होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. भोजन में ताम्बा तत्व (मूंग की दाल, बथुआ) का अधिक प्रयोग करें।

3. मूंग की दाल के छिलके, हल्दी व मोरपंख घिसकर नित्यप्रति दागों पर लगाएं।

135. जल कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **मंदारेंद्वच्छेषु क्रूरार्दितेषु जलभगेषु सजलकुष्टी।**

परिणाम — शनैश्चर, मंगल, चंद्रमा और शुक्र ये चारों ग्रह पापग्रह से युत वा दृष्ट और जल राशि में गए हों तो जिस कुष्ठ रोग में पानी बहता रहता है वैसा सजल कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. यज्ञ की भस्मी अथवा बाबा रामदेवजी की भभूत लगाएं।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें।

3. भोजन में अधिक ताम्बे का सेवन करें।

4. मोरपंख के बिछौने पर सोवें।

136. कफ कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **समंदेरीशेंगे कफकुष्टी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — षष्ठेश लग्न में शनि से युक्त होवे तो कफ कुष्ठी रोग होता है।

उपाय — 1. यज्ञ की भस्मी अथवा बाबा रामदेवजी की भभूत लगाएं।

2. आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें।

3. भोजन में अधिक ताम्बे का सेवन करें।

4. मोरपंख के बिछौने पर सोवें।

137. रक्त कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **सूर्यषष्टेशावंगे रक्तकुष्टी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — षष्ठेश लग्न मे सूर्य से युत होवे तो रक्त कुष्ठी होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

138. नील कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **अंशात्तुर्ये चंद्रे केतुदृष्टे नीलकुष्टी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — कारकांश लग्न से चतुर्थ स्थान में चंद्रमा केतु से दृष्ट होवे तो नीलकुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

139. श्वेत कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **चंद्राच्छौ सपापौ जलभगौश्श्वित्रि ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — जल राशि में गया हुआ चंद्र शुक्रयुत होवे तो सफेद कुष्ठ होता है।

उपाय — 1. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

2. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

140. श्वेतकुष्ठ योग

निष्पत्ति — **मंदारचंद्रा मेषे वा वृषेश्श्वित्रि ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — शनि, मंगल और चंद्रमा ये तीनों मेष अथवा वृषभ राशि में गए हों तो सफेद कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

141. श्वेतकुष्ठ योग

निष्पत्ति — **लग्नाधीशेंदुपुत्रौ क्षितितनयनिशानायकौ क्वापि संस्थौ ।**

युक्तौ स्वर्भानु नावा भवति हि मनुजः केतुना श्वेतकुष्टी ॥

— *बृहद् योगरत्नाकर पृ० 98*

परिणाम —

लग्न का स्वामी बुध, मंगल और चंद्रमा राहु अगर केतु के साथ कोई भी स्थान में होवे तो सफेद कुष्ठ का रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

142. कुष्टसमानरोग योग

निष्पत्ति — **रोगांधिपतौ यदा कुजबुधौ चंद्रेण वा राहुणा**
मंदेनापियुतौ प्रयच्छत इति प्रार्योंगगोरात्रिपो ।
युक्तो वा तमसासिंत च शशिना कुष्टं तदा श्यामलम् ।।

— *बृहद् योगरत्नाकर पृ० 100*

परिणाम — **(1)** लग्नस्वामी मंगल छठे स्थान का स्वामी बुध, चंद्रमा अगर शनि राहु के साथ हो तो कुष्ठ के समान रोग होता है।

(2) चंद्रमा राहु के साथ लग्न में हो तो सफेद कुष्ठ रोग होता है।

(3) चंद्रमा शनैश्चर से युक्त लग्न में हो तो काला कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

143. मुखकुष्ठ योग

निष्पत्ति — **शुक्रवेज्ये षष्टपेपापदृष्टे शोफोवक्रे त्ये शनौगुप्तदोषः ।**

— बृहद् योगरत्नाकर पृ० 105

परिणाम — छठे स्थान का स्वामी बृहस्पत या शुक्र पापग्रह से दृष्ट होवे तो मुख में कुष्ठ रोग होता है। बारहवें में शनि होवे तो गुह्यकुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

144. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **मृत्युस्थिताश्चंद्रजजीवभास्कराः**

षष्ठे स्थिता वा पुरुषस्य देहे ।

लग्नाधिपः क्रूरखगस्ततुलग्नं

निरीक्षिते क्रूरखगास्तु कुष्टी ।। — *होरा रत्न*

परिणाम — अगर छठे आठवें स्थान में बुध, बृहस्पति, सूर्य हो और लग्न का मालिक पाप ग्रह हो और लग्न को पापग्रह देखते हों या युक्त हो तो कुष्ठरोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

145. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **निशाकरे कार्मुकमध्यभागे**

मृगांश कर्कीवृषभाजयुक्ते ।

मंदारयुक्ते तदवेक्षणे वा

कुष्टी भवेत्सौम्यदृशा विहीनः ।। —*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — धन के पांचवें नवांश में चंद्रमा स्थित हो और शनैश्चर मंगल सहित स्थित हो अथवा दृष्ट हो तो कुष्ठी होता है।

इसके सिवाय मकर, कर्क, वृष और मेष इन नवांशों में कहीं चंद्रमा स्थित हो, शनैश्चर या मंगल से दृष्ट या युक्त हो, शुभ ग्रह नहीं देखते हों तो कुष्ठी होता है। शुभ ग्रह देखते हों तो कुष्ठी नहीं होता, कंडूरोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

146. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **यदि विलग्नपतिः खलु नष्टतां**
परिगतोष्टमभाव पतिर्बली ।
सकल सौम्य खगारिपुमृत्युगाः
सबलपापखगा यदि लग्नगाः ।। —*होरा रत्न*

परिणाम — लग्न का स्वामी हीनबली हो, अष्टम का स्वामी बलवान हो, छठे, आठवें स्थान में शुभग्रह हो तथा लग्न में पापग्रह बलवान हो तो कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

147. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **लग्नंपस्थतिपापश्च मृत्युभं नष्ट संयुतं**

सौम्याविवीर्यानटाश्च षष्ठमृत्युगतास्तथा।रा *रत्न*

परिणाम — लग्न को पापग्रह देखते हों, अष्टम स्थान में बलहीन ग्रह हो तथा शुभग्रह बलहीन छठे आठवें स्थान में होवे तो कुष्ठरोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

148. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **मेषेज्ञे खेब्जे शनिभौमयोगे कुष्टी ।**— *जातकतत्व*

परिणाम — **मेष राशि का बुध, दशम में चंद्रमा, शनैश्चर मंगल का योग हो तो कुष्ठ रोग होता है।**

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

149. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **युग्मकर्कटमीनांशे चंद्रेथमारदृष्टयोगे कुष्ठी ।** *— जातकतत्व*

परिणाम — मिथुन, कर्क तथा मीन राशि के नवांश में गया चंद्रमा शनि मंगल से युत या दृष्ट हो तो कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

150. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **कर्कालिवृषमृगगैः पापैः**

त्रिकोणे दृष्टे वा युते कुष्टी । *— जातकतत्व*

परिणाम — कर्क, वृश्चिक, वृषभ और मकर राशि में पापग्रह गए हों और यह राशि त्रिकोण में (9/5) हो और पापग्रह से युत वा दृष्ट हो तो कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

151. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **ज्ञेदुलग्नपा राहुकेतुयुताः कुष्टी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — बुध, चंद्रमा और लग्न का स्वामी राहु या केतु से युत हो तो कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

152. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **कुर्जेगे रंध्रेर्के तुर्येर्कजे कुष्टी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — लग्न में मंगल, आठवें भाव में सूर्य और चौथे भाव में शनैश्चर हो तो कुष्ठ रोग होता है।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

153. कुष्ठ योग

निष्पत्ति — **पैत्र्यं तु कुष्टं कुजसंयुतेषु शैत्यं भवेन्मंद समन्वितेषु ।**
रक्तं तदा सूर्यसमन्वितेषु ग्रहोक्तदेशे नियतं तदाहुः ।।

— *सर्वार्थ चिंतामणि*

परिणाम — लग्नेश से युक्त मंगल होवे तो पिता का कुष्ठ आया जानाना, शनैश्चर से युक्त होवे तो शीत से कुष्ठ होवे, सूर्य से युक्त होवे तो रुधिर से कुष्ठ होवे।

उपाय — 1. भोजन में ताम्रतत्व का अधिक सेवन करें।

2. दाल के छिलके, मोरपंख व हल्दी घिसकर दाग पर लगाएं।

3. आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

4. बाबा रामदेवजी की मनौती रखें।

154. मुखरोग योग

निष्पत्ति — **लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं मुखे जनिमतां।** *जातककुतूहल*

परिणाम — लग्न का स्वामी मंगल के घर में 1/8 बुध से युक्त हो तो मुख में रोग होता है।

155. मुखरोग योग

निष्पत्ति — **लग्नाधिपः कुजक्षेत्रे बुधस्य यदि संस्थितः**

यत्र कुत्रस्थिते ज्ञेन विक्षितो मुखरुक्प्रदः। *बृहद् पाराशरी*

परिणाम — लग्न का स्वामी मंगल के गृह में 1/8 बुध के साथ कोई भी स्थान में हो तो मुख में रोग होता है।

156. मुखरोग योग

निष्पत्ति — **कुजर्क्षेगेशे ज्ञयुते मुखरोगः ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — मंगल की राशि 1/8 में गया हुआ लग्नेश बुध से युक्त हो तो मुख में रोग होता है।

157. मुखरोग योग

निष्पत्ति — **कोशेर्कारौ मुखरोगः ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — धन स्थान में सूर्य मंगल का योग हो तो मुख रोग होता है।

158. मुखदौर्गन्ध्य योग

निष्पत्ति — **कर्काजगे शुक्रे मुखदौर्गन्ध्यम् ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — कर्क या मेष राशि का शुक्र कोई भी स्थान में हो तो व्यक्ति के मुख में दुर्गंध आती है।

159. मुखदौर्गन्ध्य योग

निष्पत्ति — **लग्ने इंदौ षष्टेशे ज्ञे मुखदौर्गन्ध्यम् ।**– *जातकतत्व*

परिणाम — लग्न में चंद्रमा होवे और छठे स्थान का स्वामी बुध होवे तो व्यक्ति के मुख में दुर्गंध आती है।

160. मुखदुर्गंध योग

निष्पत्ति — **शनिगृहे शनिहद्दगतेपिऽवा**

भवति चंद्रगृहेऽप्यथ भार्गवे ।

अजगते वपुषींदुगते वधे

रिपुपतौ च मुखस्य विगंधता ।।

—बृहद् योगरत्नाकर पृ० 31

परिणाम — **(1)** शनि के घर 10/11 में शनि के हद्द में शुक्र केंद्र में हो तो मुख में दुर्गंध आती है।

(2) चंद्रमा के घर कर्क का चंद्रमा हो तो मुख में दुर्गंध आती है।

(3) चंद्रमा और शुक्र मेष राशि का हो तो मुख में दुर्गंध आती है।

(4) छठे स्थान का मालिक बुध हो तो मुख में दुर्गंध आती है।

161. मुखदुर्गंध योग

निष्पत्ति — **इंद्वच्छौ मेषगौ लग्ने षष्टेशे मुखदौर्गध्यं।** *जातकतत्व*

परिणाम — चंद्रमा और शुक्र मेष राशि में होवे लग्न में तथा छठे स्थान में बुध होवे तो मुख में दुर्गंध आती है।

162. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **गोऽजधनेंगे क्रूरैर्दृष्टे वा युते दंतविकारः।** *जातकतत्व 3/310*

परिणाम — पापग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त वृषभ, मेष या धन राशि का लग्न होवे तो दंतविकार होता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

163. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **सप्तमे पापाः सौम्यैरदृष्ट दंतविकृतिः ।** *जातकतत्व 3/311*

परिणाम — सातवें स्थान में गए हुए पापग्रहों को शुभ ग्रह नहीं देखते होवें तो दंत विकृति होती है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

164. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **चंद्रार्क्यर्का वा पापा अस्ते दशनाभिघातः ।** *जातकतत्व 3/312*

परिणाम — चंद्रमा, शनैश्चर और सूर्य सातवें स्थान में जावें अथवा पापग्रह सातवें स्थान में जावें तो दांत जल्दी गिर जाते हैं।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

165. स्थूलदंत योग

निष्पत्ति — **सत्यमेशाद्धानेराहौ स्थूलदंतः ।** — *जातकतत्व 3/313*

परिणाम — सप्तमेश से दूसरे स्थान में राहु होवे तो दांत बड़े होते हैं।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

166. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **धनारीशौ युतौ सपापौ दंतरोगी ।** — *जातकतत्व 3/314*

परिणाम — धनेश और षष्ठेश ये दोनों पापग्रहों से युत होवें तो दंतरोगी होता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

167. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **सुतेंगे राहौ दंतुरे दंतरोगी वा ।** —*जातकतत्व 3/315*

परिणाम — पांचवें अथवा लग्नस्थान में राहु होवे तो बड़े दांतवाला दंतुर अथवा दंतरोगी होता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

168. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **वाक्स्थानपे षष्टगते च राहौ**
राहुस्थिर्क्षाधिमसंयुते वा ।
दंतस्य रोगं पतनं च तेषां
भुक्तौ तयोर्वा प्रवदंति तज्ज्ञाः ।। —*सर्वार्थ चिंतामणी*

परिणाम — धनस्थान का स्वामी राहु से युक्त छठे स्थान में हो अथवा जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त होवे तो उसकी दशा अंतर्दशा

में दांतों का रोग होता है और दांत गिर जाते हैं ऐसा पंडितों का मत है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

169. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **वाक्स्थानपेनापि युतोऽरिनाथ-**

स्तद्भावपस्थां शमयुक्तनाथः ।

षष्टेश्वरेणापि युतःस्वभुक्तौ

दंतारिरोगः पतनं च तेषां ।। —*सर्वार्थ चिंतामणी*

परिणाम — छठे स्थान का स्वामी द्वितीयेश से युक्त होवे तथा जिस भाव में उसका स्वामी जिसके नवांश में हो वह षष्ठेश से युक्त होवे तो दंत रोगी तथा दांत गिर जावे यह फल सम्बन्धित ग्रहों की दशा में होते हैं।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

170. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **सप्तमे क्रूरसंदृष्टाः क्रूरा दंतविकारदाः**

पापैर्दृष्टे गोजचापे लग्ने विकृतदंतवान्॥ *होरा रत्न*

परिणाम — सप्तम स्थान पर पापग्रह की दृष्टि हो और लग्न में ही पापग्रह हो तो दंतरोग होता है। अथवा मेष, वृषभ या धन राशिका लग्न हो और लग्न को पापग्रह देखते हों तो दंत रोग होता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

171. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **मंदार्क चंद्रास्त्रिसुतायधर्मे सौम्यैर्नयुक्ता न च वीक्षिताश्चेत् ।**

कर्णप्रणाश जनयंति नूनं स्मरस्थितास्ते दशनाऽभिघाते ।।

—बृहद् योगरत्नाकर पृ० 36

परिणाम — शनैश्चर, सूर्य और चंद्रमा यह तीन ग्रह तीसरे, पांचवें, ग्यारहवें और नवमें इसमें से कोई भी स्थान में स्थित हो और कोई भी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो व्यक्ति बहिरा होता है। और शनैश्चर सूर्य, चंद्रमा सप्तम स्थान में हो तो दंतहीन होता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

172. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **लग्ने गुरुराहु दंतरोगी ।** — *जातकतत्व*

परिणाम — लग्न में गुरु राहु का योग होवे तो दंतरोगी होवे।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

173. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **मेषे वृषे चापधरे विलग्ने विकारदंतो यदि पापदृष्टे ।।**

— *बृहद् योगरत्नाकर पृ० 36*

परिणाम — मेष, वृषभ और धनु इनमें से कोई भी लग्न हो और लग्न को पापग्रह देखते हों तो दंतरोग होता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

174. दंतरोग योग

निष्पत्ति — **स्याद्दंतुरो दंतरुजार्दितो वा।**

सिंहीसुते चेद्धनभावसंस्थे ।। —*ज्योतिष शास्त्र संग्रह*

परिणाम — दूसरे स्थान में राहु हो तो बड़े दांतवाला होकर दांतों से बीमार रहता है।

उपाय — 1. मोती युक्त यंत्र मंत्र धारण करें।

2. अच्छे दंत चिकित्सक से समय रहते इलाज कराएं।

3. कैलशियम युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करें।

175. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **व्ययेश नीचे व्यसनी।** —*जातकतत्व 3/109*

परिणाम — बारहवें स्थान का स्वामी नीच राशि का होवे तो व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढ़ाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययंत्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

176. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **अंगपे नीचे वारिक्षेत्रे व्यसनी ।** — *जातकतत्व 3/110*

परिणाम — लग्न का स्वामी नीच राशि में स्थित होवे अथवा अपनी शत्रुग्रह की राशि में होवे तो व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढ़ाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययंत्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

177. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **व्यये पापे व्यसनी ।** — *जातकतत्व 3/111*

परिणाम — बारहवें स्थान में पापग्रह होवे तो जातक व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढ़ाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययंत्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

178. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **मृगे जीवेंगे हिफेन व्यसनी ।** — *जातकतत्व 3/112*

परिणाम — लग्न में मकर राशि का बृहस्पति होवे तो व्यक्ति व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढ़ाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययन्त्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

179. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **लग्नपे निर्बले व्यसनी ।** — *जातकतत्व 3/112*

परिणाम — लग्न का स्वामी निर्बली होवे तो व्यक्ति व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढ़ाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययंत्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

180. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **लग्नपे सारे व्यसनी ।** — *जातकतत्व 3/113*

परिणाम — लग्न का स्वामी मंगल से युक्त होवे तो व्यक्ति व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययंत्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

181. व्यसनी योग

निष्पत्ति — **अंगे पापदृष्टयाधिक्ये व्यसनी ।** — *जातकतत्व 3/114*

परिणाम — लग्न पर पापग्रहों की दृष्टि अधिक होवे तो व्यक्ति व्यसनी होता है।

उपाय — 1. आत्मबल बढ़ाने हेतु आदित्यहृदय का पाठ करें।

2. माणिक युक्त सूर्ययंत्र धारण करें।

3. दृढ़ निश्चय के साथ संकल्पपूर्वक व्यसन को त्याग दें।

182. पंगुयोग

निष्पत्ति — **षष्ठे सूर्यारमंदा पंगुः ।** — *जातकतत्व 3/330*

परिणाम — सूर्य, मंगल और शनैश्चर छठे स्थान में होवे तो व्यक्ति पंगु होता है। अथवा पांव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

183. पंगु योग

निष्पत्ति — **मंदारीशौ व्यये पादृष्टौ पंगुः ।** — *जातकतत्व 3/331*

परिणाम — शनैश्चर और छठे स्थान का स्वामी ये दोनों बारहवें स्थान में होवें और पापग्रह देखते हो तो व्यक्ति पंगु होता है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

184. पंगु योग

निष्पत्ति — **रंध्रांकेशौ सपापौ तुर्ये पंगुः ।** — *जातकतत्व 3/332*

परिणाम — अष्टम स्थान का स्वामी और नवम का स्वामी चौथे स्थान में पापग्रह के साथ होवे तो व्यक्ति पंगु होता हैं। अथवा पांव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

185. पंगु योग

निष्पत्ति — **झषाल्यजकर्कमृगान्यतमगौ द्वंद्वर्कजौ**
सपापौ नवमपंचमगौ वा पंगुः । — *3/329*

परिणाम — मीन, वृश्चिक, मेष, कर्क और मकर इन राशि में से कोई भी राशि में चंद्रमा और शनैश्चर पापग्रह के साथ होवे अथवा पापग्रह से युक्त 9/5 स्थान में होवे तो भी व्यक्ति पंगु होता है। अथवा पांव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

186. पंगु योग

निष्पत्ति — **कर्के चंद्रार्कजौ शुभादृष्टौ पंगुः ।** — *जातकतत्व 3/333*

परिणाम —

चंद्रमा और शनैश्चर कर्क राशि में होवे और शुभ ग्रह उनको नहीं देखते होवें तो व्यक्ति पंगु होता है। अथवा पांव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

187. पंगु योग

निष्पत्ति — **मंदाच्छयुतौ शुभादृष्टौ पंगुः ।** — *जातकतत्व 3/334*

परिणाम — कोई भी स्थान में शनि शुक्र का योग होवे और उनको शुभग्रह नहीं देखते होवें तो व्यक्ति पंगु होता है। अथवा पांव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

188. पंगु योग

निष्पत्ति — **दारेशे सौरे सपापे पंगुः ।** — *जातकतत्व 3/335*

परिणाम — सातवें स्थान का स्वामी शनैश्चर पाप ग्रह के साथ होवे तो व्यक्ति पंगु होता है। अथवा पांव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

उपाय — लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

189. कंठरोग

निष्पत्ति — **चंद्रे सुखे तद्भवनांशयुक्ते**

पापान्विते स्याद्विज कंठरोगी ।

— बृहद् योगरत्नाकर पृ०75

परिणाम — चंद्रमा चतुर्थ स्थान में पूर्वोक्त नवांश में पापग्रह से युक्त हो तो कंठ रोगी होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

2. कंठरोग की अभिमंत्रित माला धारण करें।

190. गंडमालायोग

निष्पत्ति — **षहेतेऽथवा भूमिपुत्रार्कि योगे**

शुभाऽदृष्टितो गंडमालाव्रणाधम् ।।

— ज्योतिष शास्त्र संग्रह

परिणाम — छठे, बारहवें स्थान में शनैश्चर मंगल का योग हो और शुभग्रह नहीं देखते हों तो गंडमाला रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

2. कंठरोग की अभिमंत्रित माला धारण करें।

191. गंडमालायोग

निष्पत्ति — **षष्टेऽत्ये वा भूमिपुत्रार्कियोगे**

सौम्या दृष्टे गंडमालाव्रणाघम् । — *बृहद् योगरत्नाकर पृ०75*

परिणाम — शनैश्चर और मंगल छठे बारहवें स्थान में हों शुभग्रह नहीं देखते हों तो गंडमाला रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

2. कंठरोग की अभिमंत्रित माला धारण करें।

192. गंडमालायोग

निष्पत्ति — **षष्टे त्ये वा भुमिपुत्रार्कि योगे**

सौम्यादृष्टे गंडमालाव्रणाघम् । —*बृहद् योगरत्नाकर*

परिणाम — शनि के साथ मंगल छठे अथवा बारहवें स्थान में हो और शुभग्रह दृष्ट न हो तो गंडमाला रोग होता है।

उपाय — 1. लग्नेश का रत्नजड़ित यंत्र पहनें।

2. कंठरोग की अभिमंत्रित माला धारण करें।

193. हस्तपादच्छेदयोग

निष्पत्ति — **शनि भौंमो बुधश्चैव गुरुणा जायते ।**

शुक्रो यदि चतुर्थस्थो हस्ते पादेस्त्विहयोपदः।

परिणाम — शनैश्चर, मंगल, बुध और बृहस्पति एक ही स्थान में हों और चौथे स्थान में शुक्र हो तो हाथ-पैर का च्छेद होता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

194. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **जीव तस्य च पुण्यख्यं सद्मनश्च पतियेदा ।**

पापश्च तुष्टयस्थौ च जंघावैकल्पगौ-मतौ।

परिणाम — बृहस्पति विना नवम स्थान शुभ ग्रह के हो और चार ही केंद्र में पापग्रह हों तो जंघारोग होता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

195. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **षष्ठे स्वहद्दगे भौमे जंघाघातोतिविक्रमे ।**

शनाविति महाव्याधि रात्रिपश्च भृशं भवेत् ।

परिणाम — मंगल षष्टेश के हद्द में तीसरे स्थान में हो तो जंघाघात होता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

196. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **वक्रखेटगृहे चैवंविधे लग्नेंघ्रिहीनतः ।**

वक्रभे लग्नपे रिप्फे जंघाविघ्नं खलेक्षिते ।

परिणाम — मंगल के घर में 1/8 पूर्ण चंद्रमा बलवान न हो और लग्न का स्वामी वक्री बारहवें स्थान में हो तो जंघा रोग होता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

197. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **पुण्येश जीविपतयो मृग कुंभमीने**
जंघाक्षतिः शशिनि पुर्णविथेश्च षष्ठे ।
भौमान्विते शनिकुर्जेंदुगते व्यये च
यष्टया चलत्यशुभयुक्तेन पाश्विते च—।।*होरा रत्न*

परिणाम — **(1)** नवम का स्वामी तथा अष्टम का स्वामी मकर, कुंभ या मीन राशि का होवे।

(2) पूर्णा तिथि को पैदा होकर चंद्रमा और मंगल छठे होवे।

(3) शनैश्चर, मंगल और चंद्रमा बारहवें होवे और

(4) लग्न का स्वामी बारहवें स्थान में पापग्रह से युक्त या दृष्ट होवे तो जातक लकड़ी के सहारे से चलता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

198. शिरव्रण योग

निष्पत्ति — **शनिस्तथा चेद्रव्रण युत्तमांगे वाताग्निशस्त्रैः पतनेन वापि ।** *—होरा रत्न*

परिणाम — लग्न में शनि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट होवे तो अग्नि, शस्त्र अथवा गिरने से शिर में व्रण होता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

199. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **पूर्णेद्वारौ षष्ठे जंघाक्षतिः ।** — *होरा रत्न*

परिणाम — पूर्ण चंद्रमा और मंगल का योग छठे स्थान में होवे तो जंघा क्षति होती है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

200. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **शनीं द्वारा व्यर्य जंघाक्षतिः ।** — *होरा रत्न*

परिणाम — शनैश्चर, चंद्रमा और मंगल बारहवें स्थान में स्थित हो तो जंघाक्षति होती है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

201. जंघाक्षतियोग

निष्पत्ति — **पूर्णमा चंद्रभंदृष्टं चंद्रो मेलनमेति चेत् ।**

जंघार्तिः षष्ठगे भौमे स्वहद्दस्थे तथैव ह्योरा रत्न

परिणाम — पौर्णिमा के दिन जो नक्षत्र होगा उस नक्षत्र पर चंद्रमा हो और छठे स्थान में मंगल स्वहद्दाका हो तो जंघारोग होता है।

उपाय — बृहस्पति का अभिमंत्रित रत्न धारण करें।

मंत्र शक्ति द्वारा रोग चिकित्सा

बहुत से संत महात्मा अपनी मंत्र शक्ति से बहुत से असाध्य रोगियों को स्वस्थ बना देते हैं। यह प्राचीन काल की ही बात नहीं है, आज भी बहुत से लोग ऐसे रोगियों को संतों के चरणों में लाकर डाल देते हैं, जो चिकित्सकों की औषधि से निराश हो चुके होते हैं। औरों की बात छोड़ दीजिए, स्वयं चिकित्सक भी केवल औषधि से ही किसी को निरोग कर देने का दावा नहीं कर सकते। वे अपनी औषधि के साथ-साथ अपनी मंत्र शक्ति का भी प्रयोग करते हैं। ऐसे ही वैद्य हकीमों को दृष्टि में रख कर कहा जाता है कि अमुक हकीम के हाथ में "शफा" है या अमुक वैद्य के हाथ में "यश" है इससे सिद्ध होता है कि संत महात्मा ही नहीं, कुछ चिकित्सक भी रोग निवारण के लिए मंत्र शक्ति का प्रयोग करते रहे हैं।

मंत्र शक्ति की सहायता से रोग निवारण का प्रयोग दो प्रकार से किया जा सकता है। एक रोगी के पास स्वयं उपस्थित रह कर और दूसरे रोगी की दृष्टि से ओझल रह कर।

कलियुगी अवतार बाबा रामदेव ने कई कुष्ठ रोगियों को एवं अंधे लोगों को केवल हाथ फेर कर ठीक कर दिया। इसके पीछे उनकी दिव्य मंत्र-शक्ति थी। ईसाई धर्म के प्रणेता महात्मा ईसा मसीह भी प्रथम रीति से ही रोगियों को निरोग कर दिया करते थे। मानसिक शक्ति द्वारा रोगियों को स्वस्थ बना देने में

उन्हें इतनी अधिक दक्षता थी कि लोगों ने उनका नाम “मसीह” रख दिया था और वे गरीब अपंगों के मसीहा समझे जाते थे। रोग निवारण की प्रथम तकनीक-रोगियों के समक्ष स्वयं उपस्थित रहने की पद्धति-को अपनाने के अनेक कारण थे, वे रोगी के सम्मुख पहुंच कर अपने शब्दों और क्रियाओं के द्वारा ही रोगी पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग ही नहीं करते थे, बल्कि उस पर हाथ फेर कर उसमें अपनी शक्ति को संचारित करते थे। इसके अतिरिक्त वे अपनी दृष्टि रोगी की दृष्टि से मिला कर उसके शरीर में अपने सूक्ष्म शरीर को अधिक प्रभावशाली ढंग से आरोपित कर सकते थे। साथ ही वे रोगी को चेतावनी भी दे देते थे कि वह चमत्कारपूर्ण रीति से स्वस्थ होने की बात किसी से न कहे। ऐसा करने में उनका एकमात्र उद्देश्य यह होता था कि कोई अविश्वासी व्यक्ति अपने कुमंत्रणा से उसके मनोबल को गिरा कर उसे पुनः अस्वस्थ न बना दे।

मानसिक शक्ति से रोग निवारण करने की क्षमता मूलरूप से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान रहती है। किंतु यह सक्रिय न होकर सुषुप्तावस्था में रहती है। जो लोग इस तथ्य से परिचित हैं, वे ही इसका विकास करते हैं। कुछ लोग इस शक्ति का विकास करके भी इसका समुचित रीति से उपयोग नहीं करते। यह बात अवश्य है कि कुछ लोगों में यह क्षमता अधिक मात्रा में होती है जबकि कुछ लोगों में कम मात्रा में होती है; परंतु अभ्यास से दोनों ही मंत्र शक्ति को बहुत अधिक विकसित कर सकते हैं। यह ऐसी शक्ति है जिसका अनेक जन्मों तक विनाश नहीं होता। यही कारण है कि कुछ लोग छोटी आयु में ही साधना के द्वारा रोगियों के रोग को दूर करने की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं और उन्हें यह मालूम भी नहीं हो पाता कि उन्हें ऐसी अद्भुत क्षमता कहां से प्राप्त हो गई है।

बहुत से शंकालु व्यक्ति मंत्र शक्ति को कभी विकसित नहीं कर पाते, इसका कारण यह है कि इस प्रकार के कार्यों में मानसिक अविश्वास सबसे बड़ी

बाधा बन कर आ खड़ा होता है। जिन लोगों में सुदृढ़ और अटल आत्मविश्वास होता है वे ऐसे कार्यों को बड़ी सरलता से सम्पन्न कर सकते हैं जिन्हें दूसरे लोग असंभव या अत्यंत चमत्कारपूर्ण समझते हैं।

मंत्र शक्ति से किसी को निरोग करने के लिए पहली शर्त यह है कि उस व्यक्ति को मंत्र व शास्त्रों में पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा होनी चाहिए। इसका मुख्य कारण यह है कि किसी भी रोगी को वास्तव में आप रोग मुक्त नहीं करते, बल्कि वह स्वयं ही अपने आपको रोग मुक्त करता है। आपकी मानसिक शक्ति तो उसकी श्रद्धा का माध्यम लेकर उसे सहारा भर देती है। इसलिए महात्मा ईसा किसी भी रोगी की चिकित्सा करने के पूर्व उससे पूछ लिया करते थे, "क्या तुम्हें विश्वास है तुम मेरी चिकित्सा से ठीक हो जाओगे?" जब उसका उत्तर "हां" में होता था तभी वे उसकी चिकित्सा करते थे। वे जानते थे कि जिस स्थान पर वे उत्पन्न हुए हैं और जहां वे छोटे से बड़े हुए हैं वहां उनकी मानसिक शक्ति कोई चमत्कार नहीं दिखा सकेगी, क्योंकि घर का जोगी जोगिया आन गांव का सिद्ध होता है। इसलिए उन्होंने अपने जन्म स्थान में किसी की चिकित्सा करने की कोशिश नहीं की।

यही कारण है कि रोगी को आप पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए, अन्यथा आप प्रयोग करके अपनी शक्ति तथा समय का अपव्यय करेंगे। रोगी के मन में यह विश्वास दिला देना अत्यंत आवश्यक है कि अब वह निरोग हो गया है, अर्थात् अब उसके शरीर में कोई रोग नहीं है और यह तभी संभव है जबकि वह आप पर तथा आपकी मंत्र क्षमता पर पूरी निष्ठा रखता हो।

रोगी के मन में आपके प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो?

जब हम यह कहते हैं कि रोगी को निरोग होने के लिए आप पर पूर्ण निष्ठा एवं विश्वास होना आवश्यक है तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आपके प्रति उसके मन में विश्वास कैसे उत्पन्न हो? जब वह रोग के स्पष्ट लक्षण देख रहा हो, उसके कारण उत्पन्न हुई पीड़ा से कराह रहा हो, तो उसे यह विश्वास दिलाना आसान काम नहीं है कि वह निरोग हो गया है— उसका रोग दूर हो चुका है। जब उसकी आंखें असाध्य रोग के कारण मुंदी जा रही हों, या वह ऐसी दशा को पहुंच चुका हो जबकि उसे दो कदम चलना भी भार प्रतीत हो रहा हो, अथवा वह पेट के भयानक फोड़े की पीड़ा से तड़प रहा हो तो उसे कैसे विश्वास दिलाया जा सकता है कि उसका रोग और पीड़ा केवल काल्पनिक है।

सिद्ध मांत्रिक रोगी के सामने स्वयं पहुंचते थे और उसके शरीर पर हाथ फेर कर उसे विश्वास दिला देते थे कि अब उसे रोग से मुक्ति मिल गई है। साथ ही वे उसे परामर्श देते थे कि अपने रोग से मुक्त होने की बात किसी से कहना मत, उसे बिल्कुल गुप्त रखना। चूंकि रोगी मांत्रिक के किसी करिश्मे से पहले ही अवगत हो चुका होता था, इसलिए वह सहज ही उसकी क्षमता और बातों पर विश्वास कर लेता था। किसी से रोग मुक्ति की बात न कहने की शर्त के अनुसार कोई दूसरा व्यक्ति उसके मन में यह संदेह या विश्वास उत्पन्न नहीं कर सकता था कि उसका रोग अब भी पहले की भांति विद्यमान है और उसके लक्षणों में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ा है।

प्रारंभ में आपको अपनी मानसिक शक्ति से चिकित्सा करने में कठिनाई हो सकती है। पहली बात तो यह है कि मानसिक शक्ति से चिकित्सा करने के संबंध में आपने कोई ख्याति अर्जित नहीं की हुई होती है। यह कोई नहीं जानता कि आप इस प्रकार किसी की चिकित्सा कर सकते हैं। यदि आप किसी प्रसिद्ध सफल चिकित्सक के बराबर प्रयत्न और परिश्रम भी करें तो भी उसके बराबर सफलता प्राप्त नहीं कर सकते जब तक कि उसके बराबर प्रसिद्ध न हो जाएं। यह बात इसी क्षेत्र में नहीं सभी क्षेत्रों में समान रूप से लागू होती है। जब कोई प्रसिद्ध कवि, वक्ता या अभिनेता मंच पर आता है तो उसके बोलने से पूर्व ही सारा हाल उसके स्वागत में तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज जाता है, जबकि किसी अपरिचित महान कवि, वक्ता या महान अभिनेता का उस समय तक कोई स्वागत नहीं होता जब तक उसकी महानता के लक्षण दर्शकों के सामने प्रगट नहीं हो जाते। अतएव जो ख्याति अपने पैर जमा चुकी है, उसके प्रभाव को बिना किसी विशेष कारण के कम नहीं किया जा सकता।

मंत्र चिकित्सा में मनोविज्ञान का प्रयोग करें :—

इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी मंत्र-शास्त्री प्रारंभ में प्रसिद्ध नहीं होते। कुछ रोगों में निरंतर सफलता प्राप्त करते रहने पर ही उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त होती है। जब तक प्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती, उन्हें सफलता की सीढ़ी तक पहुंचने के लिए कुछ उपायों का सहारा लेना पड़ता है।

रोगी से मिलते ही कुशलक्षेम पूछिए। आप इस बात की प्रतीक्षा मत कीजिए कि कोई आपका उससे औपचारिक परिचय कराए तभी आप उससे वार्तालाप करें। यदि आप उसे पहले से जानते हैं और वह यह समझता है कि आप उसके पड़ौसी हैं या प्रायः उसके घर आते-जाते रहते हैं तो आपको उसे रोग

से छुटकारा दिलाने में कठिनाई हो सकती है। ऐसी स्थिति में साक्षात ईश्वर को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। यदि आप मानसिक शक्ति द्वारा किसी रोगी की चिकित्सा करते हैं तो निःसंदेह उस समय आपकी स्थिति बदल जाती है। आप दर्शकों से हट कर एक विशिष्ट श्रेणी में आ जाते हैं। यह सुविधा और महत्व आपको किसी रोगी के कमरे में प्राप्त नहीं होते।

फिर भी आपको रोगी से सहानुभूतिपूर्वक बातचीत करनी चाहिए। आपकी चेहरे की मुस्कान और व्यवहार से ऐसा प्रकट होना चाहिए कि आप उसे पूर्णतया स्वस्थ समझ रहे हैं। उसकी दशा अच्छी न होने पर भी आप उसे बिना किसी कठिनाई के रोग से मुक्ति दिला देंगे। वह आशा तो यह करता है कि उसका रोग असाध्य नहीं है, परंतु उसके मन में यह शंका बनी रहती है कि आप उसके रोग के विषय में कोई भयानक बात न कह दें। प्रायः सभी रोगी अपने बारे में सोच-सोच कर इस निष्कर्ष पर पहुंचा करते हैं कि वे इस समय कम-से-कम एक दर्जन रोगों के शिकार बने हुए हैं। यदि आप तनिक-सी भी झिझक या चिंता प्रकट कर देंगे तो वह अपने रोग को इतनी गंभीरता से लेने लगेगा कि आपके लिए उसका इलाज करना दुष्कर हो जाएगा।

वह अपने रोगी के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसा एक स्वस्थ व्यक्ति दूसरे स्वस्थ व्यक्ति के साथ करता है। परंतु उसकी पीड़ा का उपहास भी नहीं करता। इससे उसके मन को आघात लगता है और वह अपने मित्र के रूप में नहीं देख सकेगा। उसका उद्देश्य तो रोगी के साथ एकरूपता स्थापित करना होता है। तभी रोगी उसे अपना मित्र और हितैषी समझता है। वह यह विश्वास करने लगता है कि चिकित्सक उसके रोग को समझता है और वही एक ऐसा व्यक्ति है जो उसे रोग से छुटकारा दिलाकर ठीक कर सकता है।

वह यह नहीं पूछता कि "आपकी तबियत कैसी है?" बल्कि वह कहता है, "मैंने सुना है, आजकल तुम अपने आपको तरोताजा अनुभव नहीं कर रहे हो?"

जब रोगी गहरी सांस लेकर अपने दुःख-दर्द की कहानी सुनाता है तो वह सारी बात ध्यानपूर्वक तथा सहानुभूति के साथ सुनता है और बार-बार हमदर्दी से गर्दन हिलाता है और पूछता है, "तुम्हें सबसे अधिक पीड़ा किस जगह महसूस होती है?" जिस स्थान का वह नाम बताता है या संकेत करता है, उसे देखकर स्पर्श करते हुए वह पूछता है, "ऐसा कब से है?" यदि मंत्र चिकित्सक उस रोग के विषय में विशेष जानकारी न भी रखता हो, तो भी ऐसे प्रश्नों से रोगी समझता है कि उसे इस रोग के विषय में जानकारी है। परिणाम यह होता है कि उसका चिकित्सक के प्रति विश्वास कई गुना बढ़ जाता है। वह अपने अज्ञान को उस पर प्रकट नहीं होने देता। यही कारण है कि रोगी ऐसे चिकित्सक के आदेशों का अक्षरशः पालन करता है।

अपनी क्षमता का रोगी को विश्वास दिलाने के लिए उसके रोग के अन्य लक्षणों तथा रोगों की अवधि के विषय में पूछताछ करता है। तात्पर्य यह है कि वह ऐसे प्रश्न पूछता है जैसे कोई कुशल डॉक्टर पूछा करता है। साथ ही वह उसकी नाड़ी की गति देखने का भी बहाना करता है। माथे पर हाथ फेरता है और मुस्करा कर हटा लेता है, परंतु अपने मुंह से इस विषय में एक शब्द भी नहीं कहता। उधर रोगी उत्सुक दृष्टि से चिकित्सक की ओर इस आशा से देखता है कि वह उसके रोग के विषय में कुछ बताएगा। काभी-काभी वह सकुचाते हुए इसके संबंध में सीधा प्रश्न भी कर लेता है।

अब तक हमने जिस पद्धति का वर्णन किया है, यदि आप उसके अनुसार आचरण करते हैं, तो इस समय तक रोगी आपसे काफी प्रभावित हो चुका होता है। चाहे उसके रोग की नाड़ी परीक्षा अथवा माथे को दबाने की बिल्कुल

आवश्यकता न हो, फिर भी आपके इस कार्य से वह यह समझने लगता है कि आप उसकी देख-भाल करने की क्षमता रखते हैं और आपने उसके रोग का कारण तथा निदान समझ लिए हैं। आपमें उसका विश्वास जम जाता है, और आपकी क्षमता के प्रति उसके मन में जो भी थोड़ा बहुत अविश्वास बचा हुआ होता है वह भी समाप्त हो जाता है। परिणाम यह होता है कि उसका मस्तिष्क आपकी रोग निवारक मानसिक शक्ति द्वारा भेजे गए संदेश को स्वीकार करने के लिए तत्पर हो जाता है। साथ ही इस कार्य में वह आपको अपना पूरा सहयोग भी देता है।

अब आप सीधे उसकी आंखों में या आंखों के बीच के खाली स्थान पर अपनी दृष्टि जमाइए। इससे उसे ऐसा प्रतीत होगा कि आप एक साथ उसकी दोनों आंखों में देख रहे हैं। चूंकि आप उसकी आंखों में न देखकर उसकी आंखों में विद्यमान भावों की आसानी से उपेक्षा कर सकते हैं। ऐसी दशा में आपको उस स्थिति पर नियंत्रण करने का अवसर मिल जाता है।

आप उसे शांत मधुर वाणी में विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते हैं, “आप जल्दी ही और आसानी से निरोग हो जाओगे” उससे यह न कहिए कि उसके शरीर में कोई कठिन रोग नहीं है, अथवा उसका रोग असाधारण है। केवल अपनी मुख मुद्रा से इस भाव को प्रदर्शित कीजिए। उसके मस्तिष्क को उसके रोग के विषय में सोच-विचार न करने दीजिए, उसे दूसरी ओर मोड़ दीजिए। जो कुछ आप कर रहे हैं या उसे करने के लिए आदेश दे रहे हैं, उसी पर उसके मस्तिष्क को केंद्रित करने का प्रयत्न कीजिए।

अब आप अपनी दृष्टि उसके उस अंग की ओर ले जाइए जो रोगग्रस्त है। फिर धीरे से उस अंग का स्पर्श कीजिए तथा उसमें अपनी शक्ति संप्रेषित कीजिए। ऐसा अनुभव कीजिए कि आपका ओज (Aura) आपकी अंगुलियों

के पोरूवों (सिरो) से निकल कर मांस में होता हुआ उसके शरीर में प्रवेश कर रहा है और सारे रोग-ग्रस्त अंग में फैल रहा है। इस समय रोगी के पीड़ित अंग को सुख और चैन की अनुभूति होगी। इस अनुभूति के दो कारण हैं। एक तो आपकी अंगुलियां जो उसकी त्वचा की तंत्रिकाओं को रगड़ती हैं, जिससे उसमें पीड़ानाशक शक्ति उत्पन्न होती है, दूसरे आप अपने स्वस्थ ओज से उसके शरीर में अतिरिक्त शक्ति का संचार करते हैं।

इसके पश्चात् उसके दोनों नेत्रों के मध्यवर्ती स्थान को शांतिपूर्वक तथा टकटकी लगा कर देखते हुए उससे कहिए, "अब मैं तुम्हारे अमुक रोग ग्रस्त अंग से (यहां उस अंग का नाम लीजिए) अपने हाथों की तरंगों से विष बाहर निकाल रहा हूं।" फिर धीरे-धीरे उस पीड़ित भाग को गोलाई में रगड़िए तथा उसमें अपना ओज प्रवाहित कीजिए। अब कहिए, "मैं इसकी सामान्य रक्त प्रक्रिया को फिर से चालू कर रहा हूं। इसमें पुनः शुद्ध एवं स्वस्थ रक्त का संचार कर रहा हूं। मैं रोग युक्त तंतुओं को तोड़कर रक्त में प्रवाहित कर रहा हूं और उनके स्थान पर नए तंतु स्थापित कर रहा हूं। तुम्हारा (पीड़ित अंग का नाम लीजिए) अब विषैले रोगाणुओं से मुकत होकर फिर स्वस्थ हो जाएगा। उसमें से मुझे कुछ विषैली धाराओं को और निकाल लेने दो। थोड़ा-सा विष और बच रहा है इसे भी निकाल लेने दो।" इस बार उस अंग को कुछ अधिक जोर से रगड़िए, जैसे कि हल्के हाथ से मालिश की जाती है।

उस अंग को रगड़ते समय फिर कहिए, "अब तो इसमें बहुत थोड़ा विष रह गया है। यह भी थोड़ी देर में समाप्त हो जाएगा। इस विष के समाप्त होते-होते ही पीड़ा भी मिट जाएगी। अब तो करीब-करीब सारा विष दूर हो चुका है। अब तुम लगभग निरोग हो चुके हो।

यह सब कुछ कहते समय अपनी आवाज नीची और शांत रखिए। अपनी चिकित्सा प्रारंभ करने से पूर्व रोगी के कमरे में से सब व्यक्तियों को बाहर भेज दीजिए। वहां रोगी के और आपके अतिरिक्त कोई तीसरा व्यक्ति न रहे। इससे दोनों के बीच में एक प्रकार की घनिष्ठता स्थापित हो जाती है। उस समय आप अपने विषय में कम, किंतु रोगी के विषय में अधिक सोचने लगते हैं। जितना ही अधिक एकांत होता है, उतना ही दोनों के बीच अधिक सामंजस्य हो जाता है।

अब रोगी से कहिए, "तुम पूरी तरह से स्वस्थ हो गए हो।" यदि वह अपने निरोग होने के विषय में कुछ संदेह प्रकट करे या पुनः पीड़ा महसूस करे अथवा यह अनुभव करे कि वह इतनी जल्दी स्वस्थ नहीं हो सकता, उसे ठीक होने में कुछ समय लगेगा ऐसी परिस्थिति में आप हठपूर्वक यह कहें कि, "नहीं तुम बिल्कुल ठीक हो गए हो, बल्कि उसके साथ अपनी सहमति प्रकट करते हुए कहें; "हां मुझे तुम्हारे साथ इस विधि को तीन-चार बार दुहराना पड़ेगा।" आपको इस बात की सावधानी रखनी होगी कि उसके मस्तिष्क में आपकी चिकित्सा तथा उसके रोग की गंभीरता के विषय में उसके मन में बैठे हुए विश्वास के बीच किसी प्रकार का संघर्ष उत्पन्न न होने पाए। एक दूसरे के प्रति किसी भी प्रकार का विरोध नहीं होना चाहिए, उसके मन में यह विश्वास जम जाना चाहिए कि आप जो कुछ कर रहे हैं, उसके विषय में सब कुछ जानते हैं और उसे शीघ्र-से-शीघ्र स्वस्थ करने की पूरी क्षमता रखते हैं। उसे यह आभास तो कदापि न होने दीजिए कि आप उसके रोग को नहीं समझ सके हैं अथवा उसकी गंभीरता को अनुभव नहीं करते या उसे निरोग करने में आपको काफी लंबा समय लग जाएगा। उसके मन में तो यह विश्वास जम जाना चाहिए कि आप आशा से भी कम समय में उसे ठीक कर देंगे।

उसके मन में आपको अपनी क्षमता के प्रति विश्वास उत्पन्न करना बहुत जरूरी है। इस विषय में आपकी ख्याति आपका बहुत अधिक साथ देती है।

इससे आप रोग पर ही नियंत्रण नहीं करते उसे, रोग मुक्त करने की गति को भी बढ़ा देते हैं। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि यदि आप अपनी मानसिक शक्ति एवं मंत्रों के प्रयोग से कुछ रोगियों को स्वस्थ कर लेते हैं तो आपकी प्रसिद्धि बड़ी तेजी से बढ़ने लगती है। जितनी आपकी प्रसिद्धि बढ़ेगी उतनी ही आपकी लोगों को रोग मुक्त करने की क्षमता बढ़ेगी।

स्मरण रहे, जब तक आप मंत्र विद्या में पूर्ण क्षमता प्राप्त न कर लें, तब तक किसी पर इसका प्रयोग न करें। अधूरा ज्ञान कभी सफलता की सीढ़ियां नहीं चढ़ने देता और असफलता ऐसा आघात पहुंचाती है कि उससे संभलने में काफी समय लग जाता है। यदि लगातार पांच-सात असफलताएं मिल जाएं तो साहस सदा के लिए जवाब दे जाता है। इसलिए कहा जाता है, सांप का पूरा मंत्र जाने बिना सांप की बांबी में हाथ नहीं डालना चाहिए। इतनी सावधानी बरतने पर भी यदि प्रारंभ में दो एक बार असफलता हाथ लगे तो न तो आपको आश्चर्य होना चाहिए और न साहस ही छोड़ना चाहिए।

चमत्कारिक महामृत्युंजय —

"मृत्युभीत मृकंड सूनूकृतस्तवं शिवसन्निधौ

यत्रकुत्र च यः पठेन्नहितस्य मृत्युभयं भवेत् ।"

मांत्रिक अनुष्ठानों में "महामृत्युंजय जप" का अनुष्ठान बहुत ही प्राचीन समय से सर्वानुभूत और सफल प्रयोग प्रसिद्ध है। हमारे पूर्वजों और ऋषियों ने इस मंत्र से मरणासन्न व्यक्तियों को बचाने के प्रयोग किए हैं और वे सर्वत्र सफल हुए हैं। आसन्न दुर्घटना के दर्शन के पूर्व यदि इसका प्रयोग किया जाय तो व्यक्ति दुर्घटना से बाल-बाल बच जाता है और यदि प्राणघातक जैसा योग हो तो भी वह घटना स्वल्पमात्रा में होकर प्राणी को बचा देती है। दूसरी मुख्य बात;

यह सात्विक प्रयोग है अतः इससे लाभ ही लाभ होता है, शरीर रक्षा के साथ बुद्धि, विद्या, यश और लक्ष्मी भी बढ़ती है।

हमने स्वयं इसके अनेक अनुभूत प्रयोग कर चमत्कार और साफल्य प्राप्त किया है। एक बार हमारे यजमान के एक मित्र मेडिकल वार्ड– "महात्मा गांधी अस्पताल" जोधपुर में भर्ती थे। डॉक्टरों ने उनके जीवन की आशा 15 दिन तक इलाज करने के बाद छोड़ दी थी। अचानक मैं अपने किसी संबंधी को देखने अस्पताल गया तो अस्पताल में हमारे यजमान मिल गए तब अपने उन सज्जन को भी देखा। वे बेहोशी की हालत में थे घर के लोग व्याकुल थे। जन्मपत्री में प्रबल मार्केश की दशा बन रही थी। मैंने औषधि के साथ-साथ महामृत्युंजय जप का सुझाव दिया। वे बोले यह काम आपको ही करना होगा। स्थिति की गंभीरता देखते हुए मैंने तुरंत 11 ब्राह्मणों से लघु रुद्र करवाकर महामृत्युंजय जप का प्रयोग करवाया, प्रयोग चल रहा था तभी रोगी की हालत सुधरने लगी। 7 रोज के भीतर उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई 11 दिन का प्रयोग चला और 11 वें दिन वे पूर्ण स्वस्थ्यता का अनुभव करने लगे। कमजोरी शेष थी। प्राणघातक मार्केश टल गया। शूल की पीड़ा सूई में बदल गई। वह भी धीरे-धीरे समाप्त हो गई।

ज्योतिषी लोग अरिष्ट ग्रह निवारणार्थ, आयुष्य वर्धनार्थ व अपघात या अपमृत्यु निवारणार्थ जन्म पत्र में स्पष्टतः 125000 महामृत्युंजय जप का प्रयोग आज भी लिखते हैं। ऐसा करने से कई बालकों को अपमृत्यु के मुख से बचाया भी गया है।

जिन लोगों के बालक जन्म लेकर 10-15 दिन के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं उनके होते ही उनको प्रसव के पूर्व या प्रसव के तत्काल बाद भी इस प्रयोग द्वारा बचाया जा सकता है। भीनमाल में एक व्यक्ति के पुत्र क्रमशः पैदा होने के एक मास बाद मर जाया करते थे। इस तरह चार पुत्रों की मृत्यु हो गई

थी। वह व्यक्ति मेरे पास आया तो उसके जब पुत्र प्रसव हुआ तब मंदिर में हमने महामृत्युंजय जप का प्रयोग करवाया और शिव कृपा से बालक अभी भी जीवित है। यह घटना सन् 1977 के अगस्त माह की है।

महामृत्युंजय जप के अनेक तरह के अनुष्ठान और प्रयोग प्रचलित हैं उसमें से सूक्ष्म सरल एवं अनुभूत प्रयोग निम्नलिखित है जिसे कोई भी व्यक्ति सरलता से अजमाकर देख सकता है।

अथ ध्यानं—

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसै राप्लावयन्तं शिरो
।
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं
परम् ।।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशसकान्तं शिवे
।
स्वछाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटाभांतंत्रिनेत्रं भजे
।।
मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्म मृत्युजरारौगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ।।

अथ बृहदमन्त्र की पांच माला जप :—

ॐ हों ॐ जूं सः भूर्भूवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगुन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्
।

उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मु क्षीयमामृतात् ।
भूर्भूवः स्वरों जूं सः हों ॐ ।

जप विधि :—

1. संकल्प 2. गायत्री की एक माला 3. महामृत्युंजय की 5 माला 4. लघुरुद्र या अनुष्ठान के अंत में पुनः गायत्री की 1 माला।

विशेष :—

यदि व्यक्ति मृत्युसन्निकट हो और उसे बचाना अभीष्ट हो तो तत्काल सिद्धि हेतु "महामृत्युंजय जप" के 108 जप करें। मृत्तिका के शिवलिंग पर अभिषेक करके प्रत्येक मंत्र के पश्चात् श्वेत दूर्वा काला तिल व शहद मिलाकर चढ़ावें, बाद में अनुष्ठान प्रारंभ करें।

वर्षा के लिए प्रयोग :—

चातुर्मास में वर्षा न हो तब महादेव पर सहस्त्र (1111) घट से रुद्राभिषेक करके उसमें यजुर्वेदाक्त निम्न मंत्र का प्रति अध्याय पर संपुट दिया जावे। उससे वर्षा होती है।

ॐ अपां गम्भन्सीद मा त्वा सूर्यो भि
ताप्सीन्मा ग्नि वैश्वानरः ।

अच्छिन्नपत्राः प्रजा अनुवीक्षस्वानु त्वा
दिव्या वृष्टिः सचताम् ।

(यजुर्वेद अ. 13 मंत्र 30)

महां 2 इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्ठि माँ 2 इव ।

स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ।

उपयामगृहीतो सि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्महेन्द्राय त्वा ।।

(यजुर्वेद अ. 7 मंत्र 40)

फिर इन्द्रे 3 हि, वरूणे 3 हि, वापी कूप तडाग सरितादि परिपूरय ।।

यह 3 बार बोला जावे।

उक्त मंत्रों का अलग से नाभिपर्यंत जल में खड़े रहकर ब्राह्मणों द्वारा जप भी कराया जावे।

कैंसर व हृदय-रोग की मुक्ति हेतु सफल प्रयोग :—

कैंसर व हार्ट एटैक जैसी बीमारी को दूर करने हेतु सर्व प्रथम लघुरुद्र या नमक चमक रुद्राभिषेक करके “अक्षीभ्यां” के अनुवाक से एवं “आपोहिष्ठा०” इन तीनों मंत्रों से अभिषिक्त जल द्वारा शिव निर्माल्य से रोगी का मार्जन करें। उसका कुछ जल उसे पिलाएं इससे यक्ष्मा, कैंसर आदि रोग भगवत्कृपा से छूट जाते हैं व औषधि सेवन सफल होता है।

विनियोग :—

अक्षीभ्यामिति षण्णां विवृहा ऋषिः अनुष्टुप् छंदः यक्ष्महा देवता आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्री छंदः आपो देवताः सर्व रोग शान्त्यें अभिषेकोदकेन अस्य अमुक (नाम) रोगिणोपरि मार्जने विनियोगः ।।

अक्षीभ्यां सूक्त—(अनुवाक)

ॐ अक्षीभयां ते नासिकाभ्यं कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।

यक्ष्मं शोर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहामि ते ।।

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिकाहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।

यक्ष्मं दोषण्यामंसाभ्यां बाहुभ्यां विवृहामिते ।।

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठार्हृदयादधि ।

यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो विव्हामि ते ।।

ऊरूभ्यां ते अष्टीवभ्दयां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाभदंससो विवृहामि ते ।।

मेहनाद्वनं करणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।

यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामि ते ।।

अंगादंगाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि ।

यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामि ते ।।

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुव०।। ॐ योवः शिवतमो०।। ॐ तस्मा रंग मा०।।

इन तीनों मंत्रों से मस्तक से लेकिर पांव तक सारे शरीर पर अभिषिक्त जल के छींटे लगावें।

शल्य चिकित्सार्थ व भूत-प्रेत बाधा निवारणार्थ विशिष्ट प्रयोग :—

संकल्प :—

ॐ अस्य श्री नीलकंठ स्त्रोत-मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिः अनुष्टुप् छंदः नीलकंठो सदा शिवो देवता ब्रह्मबीजम् पार्वती शक्तिः शिव इति कीलकम् मम काय जीव संरक्षणार्थ सर्वारिष्ट विनाशार्थ चतुर्विध पुरूषार्थ सिद्ध्यर्थ भक्ति-मुक्ति सिद्ध्यर्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ च जपे विनियोगः ।।

मंत्र प्रयोगः—

ॐ नमो नीलकण्ठाय, श्वेत शरीराय नमः। सर्पलिंकृत भूषणाय नमः। भुजंग परिंकराय नाग यज्ञोपवीताय नमः। अनेक काल मृत्यु विनाशनाय नमः।। युगयुगान्त काल प्रलय प्रचण्डाय नमः। ज्वलन्मुखाय नमः दंष्ट्रा कराल घोर रूपाय नमः। हुँ हुँफट् स्वाहा। ज्वालामुख मंत्र करालाय नमः। प्रचण्डार्क

सहस्रांश प्रचण्डाय नमः। कर्पूरामोद परिमलांग सुगन्धिताय नमः। इन्द्रनोल महानील वज्र वैडूर्यमणि माणिक्य मुकुट भूषणाय नमः। श्री अघोरास्त्र मूल मन्त्रस्य नमः।

ॐ ह्राँ स्फुर स्फुर ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर ॐ ह्र् स्फुर स्फुर अधोर घोरतरस्य नमः। रथ रथ तत्र तत्र चट् चट् कह कह मद मदन दहनाय नमः।

श्री अघोरास्य मूल मन्त्राय नमः। ज्वलन मरणभय क्षय हूँ फट् स्वाहा। अनन्त घोर ज्वर मरण भय कुष्ठ व्याधि विनाशनाय नमः।। डाकिनी शाकिनी ब्रह्मराक्षस दैत्य दानव बन्धनाय नमः।। अपर पारभूतज वेताल कूष्माण्ड सर्वग्रह विनाशनाय नमः। यन्त्र कोष्ठ करालाय नमः। सर्वापद् विच्छेदाय नमः। हुं हुं फट् स्वाहा। आत्म मन्त्र सुरक्षणाय नमः।

ॐ ह्रां ह्रां ह्रू नमो भूत डामर ज्वाला वश भूतानां, द्वादश भूतानां, त्रयोदश भूतानां, पंचदश डाकिनीनां, हन हन दह दह नाशन नाशन एकाहिक, द्वयाहिक, चतुराहिक, पंचाहिक व्याप्ताय नमः।

आपादान्त सन्निपात, वातादि हिक्का, कफादि कासश्वासादिक दह दह छिन्धि छिन्धि श्री महादेव निर्मित स्तम्भन-मोहन-वश्याकर्षणोच्चाटन-कीलन-उद्धासन इति षद् कर्म विनाशनाय नमः।

अनन्त, वासुकी, तक्षक, ककोंटक, शंखपाल, विजय पद्म, महापद्म, एलापत्र, नाना नागांनां कुलकादि विषं छिन्धि-छिन्धि, भिन्धि-भिन्धि प्रवेशन शीघ्रं हुं हुं फट् स्वाहा।।

वातज्वर, मरणभय, छिन्न-छिन्न हन हनः भूतज्वर, प्रेतज्वर, पिशाच ज्वर, रात्रि ज्वर, शीत ज्वर, सन्निपात ज्वर, ग्रह ज्वर, विषम ज्वर, कुमार ज्वर, पात

ज्वर, ब्रह्म ज्वर, विष्णु ज्वर महेश ज्वर, आवश्यक ज्वर, कामाग्नि-विषय ज्वर मरीचिज्वरादि प्रबल दण्डधराय नमः। परमेश्वराय नमः।।

आवेशय आवेशय शीघ्रं शीघ्रं हुं हुं फट् स्वाहा। चोर मृत्यु ग्रह व्याघ्रासर्पादि विषभय विनाशनाय नमः। मोहन मन्त्राणां, पर विद्याच्छेदन मन्त्राणां ह्वां ह्त्रीं ह्वूं कुलि लीं लीं हूं क्षं कुं कुं हूं हूं फट् स्वाहा। नमो नील कण्ठाय नमः दक्षाध्वर हराय नमः श्री नील कण्ठाय नमः।।

उपरोक्त पाठ को नित्य करें यह 108 दिन में सिद्ध हो जाता है। फिर इसका झाड़ा लग सकता है। नित्य पाठ करने से सारी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

ग्रहों से प्रभावित रोग

विज्ञान के इस युग में इस विषय की ओर किसी का ध्यान जाता ही नहीं है, जबकि ग्रह शांति एवं विभिन्न ग्रहों के भिन्न-भिन्न रत्नों के धारण से मनुष्य को शारीरिक व मानसिक व्याधियों से मुक्त होते हुए देखा जा सकता है, साथ ही विभिन्न ग्रहों की अशुभ दृष्टि से रोग ग्रस्त होते हुए भी देखे जाते हैं।

नीच राशि में स्थित ग्रह जातक में विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न करता है। और उस ग्रह की शांति से एवं ग्रह रत्न धारण एवं उसी रत्न की भस्म सेवन से भी जातक व्याधि मुक्त हो जाता है।

विचारणीय है कि कौन से ग्रह से किस प्रकार की व्याधियां उत्पन्न होती हैं और उनके दूर करने के क्या उपाय हैं, इसका विश्लेषण निम्नांकित है—

1. सूर्य ग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में सूर्य ग्रह अशुभ स्थान पर रहता है तो वह कुदृष्टि अवस्था में निम्न व्याधियां उत्पन्न करता है—

शिरः पीड़ा प्रमेहश्च सततः सन्ततो ज्वरः ।

पित्तरोगोम्लूशूलश्च हृद्रोगश्च विसूचिका ।।

शिरोव्रणादिकं चैव विषजो दाहकज्वरः ।

यमार योगा द्विक्का च रवौ व्याधिविनिर्णयः ।।

(प्रश्नकल्प तरू)

अर्थात्— सूर्य ग्रह के कारण शिरः शूल, प्रमेह, सतत एवं सन्तत ज्वर (विषम ज्वर), पित्त रोग, अम्लशूल, हृदयरोग, हैजा, शिरोव्रण, विषज व्याधियां, दाहक ज्वर तथा यमार योग (सूर्य, शनि और मंगल के योग) से हिचक़ी नामक रोग उत्पन्न होते हैं। चूंकि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य ग्रह का रत्न माणिक्य है, अतः इन सभी रोगों के निवारण हेतु एवं सूर्य ग्रह के अशुभ स्थान में रहने पर माणिकय रत्न धारण करना चाहिए। माणिक्य का दान और माणिक्य भस्म का सेवन भी लाभदायक है। साथ ही ऐसे समय में सूर्य नमस्कार, सूर्यार्घ्य और रविवार के दिन उपवास करने से भी लाभ मिलता है। माणिक्य का वर्णन करते हुए आयुर्वेद ग्रन्थों में भी लिखा है कि—

माणिक्यं दीपनं वृष्यं कफवातक्षंयार्तिनुत् ।

भूतवेतालपापघ्नं कर्मजं व्याधिनाशनम् ।।

(रस रत्न समुच्चय)

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच रत्ती का माणिक्य रत्न, सुवर्ण धातु में, सूर्ययन्त्र के साथ जड़वाकर, सूर्ययन्त्रों से अभिषिक्त करके गले में पहनावें तो सूर्य संबंधी सभी रोग एवं दोष से मुक्ति मिल जाएगी।

2. चन्द्रग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में चन्द्रमा अशुभ स्थान पर रहता है तो वह कुदृष्टित

अवस्था में निम्न व्याधियां उत्पन्न करता है।

गलगण्डो गण्डमाला ज्वरश्च कफदूषितः ।

कासच्छर्दिः क्षयं शूलं श्लीपद्श्च जलोदरी ।।

आमपीडातिसारश्च हृदरोगः श्वासकृच्छ्रता ।

एते वै चन्द्रजा रोगा मुनिभिः परिकीर्तिताः

(प्रश्नकल्पतरु)

अर्थात्— चन्द्रमा की प्रकुपित अवस्था में गलगण्ड, गण्डमाला, ज्वर विशेषतः कफ दूषित अन्य ज्वर, कास, वमन, क्षय, कफज शूल, श्लीपद, जलोदर, आमजपीड़ा, आमातिसार हृदरोग, श्वासकृच्छ्ता आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार चंद्र ग्रह का रत्न मोती है। अतः इन सभी व्याधियों से पीड़ित होने में चंद्रमा के कारण होने पर व्यक्ति को मोती धारण करना चाहिए। मोती का दान एवं मुक्ता भस्म या मुक्तापिष्टी का सेवन भी लाभप्रद होता है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी मोती के गुणों का वर्णन करते हुए लिखा है कि मुक्ता शीतल, वृष्य, बल व पुष्टिकारक, आयुष्य, दाहशामक, जीर्णज्वर नाशक, हृदय, मेदहर, मेध्य, विषनाशक, दृष्टि रोगशामक, राजयक्ष्मा परिकोप नाशक है।

शास्त्रीय उपाय—

सवा दो रत्ती का अणविंदा मोती, शुद्ध चांदी में चंद्रयंत्र के साथ जड़वाकर प्राणप्रतिष्ठि करें एवं दूब की घास से रुद्राभिषेक करके गले में धारण करेंगे तो चंद्र-संबंधी सभी रोग व दोषों से राहत मिल जाएगी।

3. मंगल ग्रह से प्रभावित रोग

जब किसी जातक की कुंडली में मंगल ग्रह अशुभ स्थान पर रहता है, तो वह कुदृष्टि अवस्था में निम्न व्याधियां उत्पन्न करता है।

रक्तपित्तोद्भ्वा पीडा दद्रुरोगो भगन्दरः ।

रक्तदुष्टिःप्रमेहश्च विस्फोटकभयं महत् ।।

दुष्टव्रणोस्थि भंगश्च रक्तस्रावोग्निजं भयम् ।

अर्शो रक्तातिसारश्च व्याधंयः कुजसम्भवाः ।।

अर्थात्— रक्तपित्त, दाद, भगंदर, रक्तदोष, प्रमेह, फोड़े-फुंसियों का समस्त शरीर में हो जाना, दुष्टव्रण, अस्थिभग्न, बवासीर, रक्तातिसार आदि बीमारियां होती हैं।

ज्योतिष शास्त्रानुसार मंगल ग्रह का रत्न मूंगा है। अतः मंगल की शांति हेतु व्यक्ति को मूंगा धारण कराना चाहिए। मूंगा का दान, धारण, और प्रवाल पिष्टी का सेवन भी लाभदायक है।

आयुर्वेद के ग्रंथों में प्रवाल के गुणों को देखने से पता चलता है कि प्रवाल कफ पित्तज रोगों का नाश्क है। नेत्ररोग हारक है, त्रिदोषशामक, क्षयरोग रक्तपित्त और कासनाशक है। रक्तार्श व मधुमेह में उपयोगी है।

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच रत्ती का मूंगा, सुवर्ण या त्रिलोह में मंगलयंत्र के साथ प्राणप्रतिष्ठित करके धारण करने पर मंगल संबंधी समस्त व्याधि व प्रकोप शांत होते हैं।

4. बुध ग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में बुधग्रह अशुभ स्थान पर रहता है तो वह कुदृष्टित अवस्था में निम्न व्याधियां उत्पन्न करता है।

त्वग्दोशो वायुजापीडा जिह्वारोगो विचर्चिका ।

मत्तता वमने श्लेष्मा बुधे त्रिदोषदुष्टता । (प्रश्नकल्पतरु)

अर्थात्— बुध ग्रह के कारण जातक को त्वचा संबंधी रोग, वायु जन्य पीड़ा, जिह्वारोग, एक्जीमा आदि त्वचारोग, उन्माद, वमन के साथ कफाधिक्य और सन्निपातिक व्याधियां उत्पन्् हो जाती हैं।

इन सभी रोगों से पीड़ित होने में बुध ग्रह ही कारण होता है, और ज्योतिष शास्त्रानुसार बुध ग्रह का रत्न पन्ना है। अतः बुध ग्रह की शांति हेतु पन्ना का धारण, दान एवं पन्ना की भस्मादिका उपयोग लाभप्रद होता है। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी पन्ना के गुणधर्म देखने से पता चलता है कि पन्ना ज्वर, वमन, विष, श्वास, अग्निमान्य पांडु शोथ रोगों में लाभप्रद है, यूनानी चिकित्सक इसका उपयोग त्वचा रोगों में भी करते हैं।

शास्त्रीय उपाय—

सवा छः रत्ती का पन्ना सुवर्ण या त्रिलोह में, बुध यंत्र के साथ जड़वाकर गले में धारण करने पर बुध संबंधी सभी रोग व दोषों से निवृत्ति मिलती है।

5. गुरु ग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में गुरु अशुभ स्थान पर रहता है तो वह निम्न

व्याधियां उत्पन्न करता है—

उत्तमांगोभ्दवा पीड़ा मेदोरोगाग्नि वेदना ।

अकस्माच्छ्वासरोधश्च गुरोर्व्याधिविनिश्चयः ।।

गुरु ग्रह की अशुभता से जातक मस्तिष्क एवं कर्ण, जिह्वा, नासा, नेत्र आदि पत्यंगों में पीड़ा से पीड़ित रहता है। शरीर में मेद का संचय हो जाता है। श्वास, कास, व्याधि भी गुरु ग्रह की अशुभता से ही होते हैं।

ज्योतिष शास्त्रकारों ने गुरु ग्रह का रत्न पुखराज माना है। अतः जिस व्यक्ति के लिए गुरु अशुभ हो तो पुखराज का धारण, दान एवं पुखराज भस्मादि का उपयोग लाभप्रद होता है।

आयुर्वेद ग्रन्थों में भी पुखराज को विषनाशक, वमन अवरोधक, कफ और वात व्याधि नाशक, अग्निमान्द्य, दाह, कुष्ठ और रक्तपित्त शामक बताया गया है।

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच रत्ती, सवा नौ रत्ती या बारह रत्ती का पुखराज शुद्ध सुवर्ण धातु में गुरु यंत्र के साथ जड़वा कर, अभियंत्रिक करके गले में धारण करने पर गुरु संबंधी सभी प्रकार के दोष व रोग की निवृत्ति होती है।

6. शुक्रग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में शुक्र पापग्रह के रूप में आकर अशुभ स्थान पर स्थित हो जाता है जो जातक निम्न व्याधियों से पीड़ित होता है—

नेत्रे गुह्ये लिंगे रोगःस्याद् भृगुदोषणः ।

प्रमेहः शोथमूत्रंच गुल्मरोगोपदंशकः ।।

स्त्रीणां प्रदरपीड़ा च गर्भशूलादिदूषणम् ।

इन्द्रियाणां विकारः स्यान्मुष्कवृद्धि ज्वरो महान्

।।

अर्थात— शुक्र ग्रह की प्रकुपित अवस्था में नेत्र, गुदा और शिश्न संबंधी रोग होते हैं। इसके अलावा प्रमेह, शोध, मूत्ररोग, गुल्म, उपदंश स्त्रियों में प्रदर तथा गर्भाशय संबंधी शूलादि रोग, पंचज्ञानेंद्रियों के विकार, अंडकोषवृद्धि तथा ज्वरादि रोग होते हैं। अतः शुक्र के अशुभ रहने पर शुक्रग्रह के रत्न हीरा के धारण, दान एवं हीरक भस्म सेवन का प्रयोग लाभप्रद होता है। आयुर्वेद ग्रन्थों में भी हीरा के गुणों का वर्णने करते हुए लिखा है कि हीरक भस्म क्षय, शोष, भ्रम, भगंदर, प्रमेह, मेद, पांडु, उदररोग एवं शोध नाशक है। मेथ्य, बाजीकर, नेत्रयवर्ण व क्लैब्यहर है।

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच, सवा सात रत्ती या औंस का शुद्ध श्वेत हीरा, श्वेत प्लेटेनियम, या शुद्ध रजत में शुक्र यंत्र के साथ जड़वाकर, शुक्र के यंत्रों से प्राणप्रतिष्ठित करवाकर पहने तो शुक्र संबंधी सभी प्रकार के रोग व दोषों में निवृत्ति मिलती है।

7. शनिग्रह से प्रभावित रोग

जब किसी जातक की कुंडली में शनि अशुभ स्थान पर स्थित होता है। तो जातक निम्न व्याधियों से पीड़ित होता है—

यक्षमावातोदरो मूर्च्छास्नायुरूक् कृमिसम्भवाः

।

पक्षाघातस्तथा श्वास-प्लीहा ज्वरेण शीर्णता ।।

सर्वत्र वायुजा पीड़ा हस्तपादप्रकम्पनम् ।

एते हि शनि रोगाः स्युर्विज्ञेया मुनिसम्मताः ।।

अर्थात— राजयक्ष्मा, वातोदर, मूर्च्छारोग, प्लीहोदर, स्नायुपीड़ा, कृमिरोग, पक्षाघात, श्वास, जीर्णज्वर, सर्वांग में वायु जन्य पीड़ा और हाथ-पौरों का कापना ये समस्त रोग शनि ग्रह से ही होते हैं।

शनि ग्रह के अशुभ स्थान पर शनि के रत्न नीलम के धारण, दान एवं भस्मादि सेवन का उपयोग लाभप्रद होता है। आयुर्वेद ग्रंथों में नीलम भस्म के गुणों का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह श्वास कास को नष्ट करता है, वीर्य वर्धक है, त्रिदोषशामक है। दीपन कार्य करता है।

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच या सवा दस या ग्यारह रत्ती का 'नीलम' त्रिलोह धातु के साथ शनियंत्र में जड़वाकर, अभियंत्रित करके गले में धारण करें तो शनि संबंधि रोग एवं दोषों की निवृत्ति होती है।

8. राहु ग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में राहु अशुभ स्थान पर रहता है तो वह मानसिक व्याधियां यथा उन्माद, अपस्मार, अतत्वाभिनिवेश, व्यर्थ की चिंता एवं उर्ध्वजत्रुज व्याधियां होती हैं साथ ही जातक विशेष रूप से वायु के रोगों से पीड़ित रहता है।

राहु की शांति हेतु ग्रह रत्न गोमेद है। अतः राहू के अशुभ रहने पर गोमेद धारण, दान व गोमेद भस्म औषध रूप में ग्रहण करना चाहिए।

आयुर्वेद में भी गोमेद के गुण बताते हुए लिखा है कि— कफपित्त को नष्ट करता है, पांडु नाशक, दीपन, पाचन, रुचिवर्धक, त्वकरोग नाशक व बुद्धिवर्धक हैं।

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच रत्ती का गोमेद, त्रिलोह में राहुयंत्र के साथ जड़वाकर अभियंत्रित करके धारण करें तो राहु संबंधी रोग व दोषों की निवृत्ति होती है।

9. केतु ग्रह से प्रभावित रोग

जब जातक की कुंडली में केतु ग्रह अशुभ होता है जो जातक पित्त संबंधी व्याधियों जैसे शरीर दाह, ज्वर, अग्निमगंध, निद्राल्पता, चक्कर आना इत्यादि व्याधियों से पीड़ित रहता है।

अतः केतु ग्रह की शक्ति हेतु केतु रत्न वैद्धर्य (लहसुनिया) को धारण करना चाहिए तथा वैद्धर्य दान व भस्मसेवन भी लाभदायक होती है। वैद्धर्य के गुण बताते हुए रसरत्न समुच्चय में लिखा है कि वैद्धर्य भस्म मेथय, रक्तपित्त, पित्तप्रद रोग नाशक, बल्य एवं दीपन गुण वाला है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ग्रहों की कुदृष्टि एवं नीच राशि में स्थित रहने से जहां व्यक्ति अनेक रोगों से पीड़ित हो जाता है। दूसरी ओर उन ग्रहों के रत्नों के धारण, दान एवं भस्मादि सेवन से वह तज्जन्य व्याधियों से मुक्त भी हो जाते हैं। अतः इन ग्रहों की शांति हेतु कर्मकांड में बताए अनुसार बलि-पूजा कर्म इत्यादि भी कराना चाहिए।

यहां यह भी आश्चर्यजनक है कि ज्योतिष में जिस ग्रह से जो रोग होना बताया है एवं उस ग्रह के लिए जो रत्न बताया है, उस ग्रह के रोग को दूर करने की क्षमता भी उस रत्न में है। ऐसा आयुर्वेदीय रसशास्त्र के ग्रंथों से पता चलता है। आज एलोपैथी के चिकित्सक भी ज्योतिष के महत्व को रोग निदान में स्वीकार कर चुके हैं।

शास्त्रीय उपाय—

सवा पांच रत्ती का लहसुनियां, त्रिलोह में, केतुयंत्र के साथ जड़वाकर अभियंत्रित करके, गले में धारण करने पर केतु संबंधी सभी रोगों वे दोषों से निवृत्ति मिलेगी।

रोगों की निवृत्ति का अनुष्ठान करते समय संकल्प में रोग निवारण की वृत्ति पर जोर देना चाहिये क्योंकि असली ताकत तो संकल्प में है। याद रखें यंत्र खुदे हुए (उत्कीर्ण) न होकर उभरे हुए होने चाहिए।

□□□



डॉ.भोजराज द्विवेदी

ज्योतिष और रोग विचार

ज्योतिष वह प्राचीनतम विज्ञान है जिसका अध्ययन अधिकांश प्राचीन सभ्यताओं में किया गया है। ज्योतिष से जुड़े प्रतीकों को लुप्त हो चुकी सुमेर व सुमात्रा सभ्यताओं में भी देखा गया है। ऐसी अनेक सभ्यताएं जन्म लेकर फली-फूली व नष्ट हो गई किंतु ज्योतिष का ज्ञान सभी को था। अतः समस्त संसार में तथा विशेष रूप से भारत में ज्योतिष को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। भारत में तो इसे ज्ञान का नेत्र ही माना जाता है।

डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, रत्नविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकांड व पौरोहित पर लगभग 400 पुस्तकें, 3,000 से अधिक राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां, पूर्व प्रकाशित होकर समय-चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं जो ज्योतिष जगत् का एक गौरवपूर्ण कीर्तिमान है। डॉ.द्विवेदी द्वारा हजारों-लाखों भविष्यवाणियां लोगों के व्यक्तिगत जीवत हेतु की गई हैं जो चमत्कारिक रूप से सत्य सिद्ध हुई है।

डायमंड बुक्स

Shop online at www.dpb.in